परामर्श समिति :

श्री अगरचन्द नाहटा

डॉ कन्हैयालाल सहल

प्रो नरोत्तम स्वामी

डॉ मोतीलाल मेनारिया

श्री सीताराम लालस

श्री उदयराज उज्ज्वल

श्री गोवर्धनलाल काबरा

रसीलै राज रा गीत

[महाराजा मानसिंह विरचित शृंगार - पद - संग्रह]

सम्पादक

नारायण सिंह भाटी

सहायक सम्पादक

सौभाग्य सिंह शेखावत

प्रकाशक

राजस्थानी शोध - संस्थान

जोधपुर

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संचालित
राजस्थानी शोध संस्थान
जोधपुर

परम्परा, भाग १८ १९
मूल्य ६)

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस
जोधपुर

विषय सूची

"The biography of Maun Singh would afford a remarkable picture of human patience, fortitude, and constancy, never surpassed in any age or country From a protracted conversation of several hours, at which only a single confidential personal attendant of the Prince was present, I received the most convincing proofs of his intelligence, and minute knowledge of the past history, not of his own country but of India in general He was remarkably well read, and at this and other visits he afforded me much instruction We discoursed freely on past history in which he was well read as also in Persian, and his own native dialects He presented me with no less than six material chronicles of his house, of two, each containing seven thousand stanzas, I made a rough translation"

—*Col James Tod*
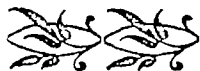
सम्पादकीय

महाराजा मानसिंह का रचनाकाल १९वी शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। हिन्दी साहित्य मे यह काल रीतिकाल के नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दी मे रीतिबद्ध काव्यो और लक्षण ग्रथो का निर्माण इस समय मे पुष्कल परिमाण मे हुआ है। इस काल के हिन्दी और राजस्थानी भाषा के काव्यो मे सबसे बडी समानता शृगार-प्रधान विषयो का बाहुल्य है, परन्तु राजस्थानी काव्य मे जहाँ एक ओर वीररस की धारा प्रवाहित होती हुई दिखाई देती है, वहाँ दूसरी ओर शृगार की रसवती राग और रूप के पुलिनो के बीच सहज रूप से बहती हुई दृष्टिगोचर होती है।

राजस्थानी का शृगारिक पद-साहित्य यहा के राज-घरानो की विशिष्ट देन है। यह शृगारिक साहित्य दो रूपो मे व्यक्त हुआ है—(१) कृष्ण-भक्ति के अनुराग को प्रकट करने के रूप मे (२) नारी-सौन्दर्य तथा प्रेम भावनाओ को व्यक्त करने के रूप मे। महाराजा मानसिंह के साहित्य-सर्जनकाल में तथा उसी समय के आस-पास सवाई प्रतापसिंह (व्रजनिधि) जयपुर, महाराजा सावतसिंह (नागरीदास) किशनगढ, महाराजा बहादुरसिंह किशनगढ, महाराणा जवानसिंह उदयपुर, महाराव विनयसिंह अलवर, महारानी आनन्दकुवरि अलवर, महाराज कुमार रतनसिंह (नट-नागर) सीतामऊ, हरिजीरानी चावडी, बाघेली विष्णुप्रसादकुवरि रीवा, रसिकविहारी (बनीठनोजी) आदि कुछ कवि और कवयित्रियो की पद-रचना उपलब्ध होती है, जिसमे यह काव्य-धारा अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ प्रकट हुई है।

राजघरानो के प्रमुख व्यक्तियो के अतिरिक्त भी कुछ कवियो ने इस प्रकार की रचनाऐं अवश्य की हैं, परन्तु इस काव्य की प्रतिनिधि रचनाऐं राजप्रासादो से ही मुखरित होकर जनता तक पहुँची हैं। उक्त वर्ग द्वारा इस प्रकार की काव्य-साधना मे लीन होना हमें उनकी राजनैतिक परिस्थितियो और भावनाओ की पृष्ठभूमि पर विचार करने को बाध्य कर देते हैं। राजस्थान के शासको ने सैकडो वर्षो तक विदेशी सत्ता के साथ निरन्तर सघर्ष किया था। १९वीं

शताब्दी में आते आते उनकी शक्ति बहुत क्षीण हो चुकी थी। मरहठों ने इस समय स्वार्थीय शासकों की फूट और मनो-मालिन्य से लाभ उठा कर राजस्थान को पदाक्रान्त ही नहीं किया अपितु यहाँ के शासकों की आर्थिक स्थिति को भी बहुत कमजोर कर दिया था। अनिश्चित परिस्थितियों आर्थिक संकटों और राजनैतिक उलझनों के बीच अंग्रेजों को अपना प्रभुत्व कायम करने में सफलता मिलती जा रही थी। ऐसी परिस्थितियों में यहाँ के शासक ऐसे हतप्रभ और दिशा-शून्य से हो गए थे कि अन्य किसी विकल्प के अभाव में उनकी भावनाओं और चिन्तन का अन्तर्मुखी हो जाना ही स्वाभाविक था। सिंधु राग से अपने मानस को आलोड़ित करने के बजाय वे विभिन्न राग रागनियों के रागीन डोर अपने भाव शिशुओं के हाथों में थमा कर उन्हें बिलमाने लगे। इस पद रचयिताओं के पदों में प्रत्येक रचनाकार की अपनी अनुभूतिगत विशेषताएँ होते हुए भी यथार्थ से पलायन की प्रवृत्ति सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है—चाहे वह वृन्दावन की रासलीलाओं के गुणगान के रूप में हो या किसी रूपसी और रसिक-शिरोमणि को अलंकृत भाव भंगिमा के रूप में।

इन कवियों में से महाराजा मानसिंह का जीवन अनेक प्रकार की उलझनों और प्रतिकूल परिस्थितियों से संवृत्त रहा है। उनके जीवन की ऐसी कुछ घटनाओं का उल्लेख यहाँ कर देना अप्रासंगिक न होगा। मानसिंह का जन्म सं० १८३६ में हुआ था। ये महाराजा विजयसिंह के पौत्र और गुमानसिंह के पुत्र थे। सं० १८५० में इनके चचेरे भाई महाराजा भीमसिंह गद्दी पर बैठे। उन्होंने अनेक कुटुम्बियों को अपना मार्ग निष्कण्टक बनाने के लिए मरवा डाला था। मानसिंह कुछ सरदारों की सहायता से जालोर दुर्ग में जा रहे। लगभग ग्यारह वर्ष तक ये वहीं रहे और भीमसिंह द्वारा भेजी गई सेनाएं इन्हें निरन्तर तंग करती रहीं। इनकी आर्थिक स्थिति लगातार घेरे में रहने के कारण बड़ी खराब हो गई थी परन्तु आऊवा और आहोर जैसे ठाकुर इन्हें निरन्तर सहयोग देते रहे। इनके साहित्य प्रेम और अच्छे बर्ताव के कारण अनेक चारण कवि भी साथ थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि उस काल में मानसिंह ने बड़ी विकट परिस्थितियों में समय व्यतीत किया था। भीमसिंह के सेनापति सिंघवी इन्द्रराज के दबाव के कारण मानसिंह ने दुर्ग त्याग देने का विचार कर लिया था परन्तु नाथ देवनाथजी ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि तीन चार दिन किले में ही रुके रहें तो उनकी विजय हो जाएगी। उन्होंने ऐसा ही किया और भाग्यवश महाराजा भीमसिंह की मृत्यु (१८६० वि०) हो गई जिससे जोधपुर की

राजगद्दी इन्हे प्राप्त हुई। पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह ने इनकी गद्दीनशीनी को इस शर्त पर स्वीकार किया कि स्वर्गीय महाराजा की महारानी देरावरजी गर्भवती है, यदि उसके पुत्र हुआ तो जोधपुर की गद्दी का अधिकारी वह होगा और मानसिंह को जालोर का परगना ही दिया जाएगा। ख्यातो में ऐसा जिक्र मिलता है कि महारानी के गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुआ था, जिसका नाम धौंकलसिंह रखा गया परन्तु मानसिंहजी ने उसे जाली पुत्र कह कर राज्यगद्दी छोडने से इन्कार कर दिया, जिसके कारण पोकरण ठाकुर सवाईसिंह उनसे बिगड गया और आजीवन उनका विरोधी बना रहा।

गद्दी-नशीन होने के कुछ ही समय पश्चात् उदयपुर की राजकुमारी कृष्णा कुवरी के विवाह को लेकर जोधपुर, जयपुर और उदयपुर के शासको के बीच बडा तनाव पैदा हो गया। कृष्णा कुवरी की सगाई जोधपुर के महाराजा भीमसिंह से हुई थी, परन्तु उनका अचानक देहान्त हो जाने से विवाह नही हो सका। जोधपुर के राजघराने की माग होते हुए भी जब उसकी शादी जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ निश्चित हुई तो पोकरण ठाकुर सवाई-सिंह आदि के बहकाने से महाराजा मानसिंह ने इस सम्बन्ध का विरोध करने के लिए ससैन्य प्रस्थान किया। इस कूच मे यशवन्तराव होल्कर, इन्द्रराज सिंघवी आदि भी साथ थे। अमीर खा भी वहाँ आ पहुँचा था। सवाईसिंह और मानसिंह के बीच पहले से ही मन-मुटाव था, जिससे वह मौका पाकर जयपुर वालो से मिल गया और अमीर खा ने भी जयपुर वालो का पक्ष-ग्रहण कर लिया। मानसिंह के सामने बडी विकट परिस्थिति उपस्थित हो गई, तब वे अपने विश्वासपात्र सरदारों की सलाह से चुने हुए कुछ सिपाही साथ लेकर वहाँ से निकल गए और बडी कठिनाई से मेडता होते हुए जोधपुर पहुँचे। जयपुर और सवाईसिंह आदि की सेना ने उनका बडा पीछा किया और अन्त मे जोधपुर शहर को आ घेरा। मानसिंह के पास इस समय इतनी बडी सेना नही थी कि वे उनका मुकाबला करते। ऐसी विकट परिस्थिति मे उन्होने बडी राजनैतिक सूझबूझ से काम लिया और सिंघवी इन्द्रराज को एक युक्ति सुझा कर बाहर निकाला। उसने मारवाड के स्वामि-भक्त जागीरदारो की सेना एकत्रित कर जयपुर पर आक्रमण कर दिया। तब जयपुर नरेश ने अपने राज्य की रक्षा के लिए जयपुर की ओर प्रस्थान किया और उनके अन्य सह-योगी भी अपने अपने स्थानो पर लौट गए।

महाराजा मानसिंह अमीर खा की ताकत और राजनैतिक सूझबूझ

से भली भाँति परिचित हो गए थे। अतः उनसे घनिष्ट मित्रता करके एक ओर सवाईसिंह जैसे प्रबल शत्रु का सफाया उसके हाथों करवाया और दूसरी तरफ सिंघवी इन्द्रराज की राजनैतिक चालों से सशंकित होकर उसकी भी हत्या उसके द्वारा करवाई। राजनैतिक दबाव और अंग्रेजों के बढ़ते हुए प्रभुत्व के कारण मानसिंहजी को अंग्रेजों से संधि करनी पड़ी थी परन्तु मन ही मन वे अंग्रेजों के दखल से अप्रसन्न थे। जब भी मौका आया, उन्होंने अंग्रेजों के विरोधियों को पनाह दी और प्रोत्साहित किया। मथुराम देव भोंसले तथा सिंधी शाहजादे को शरण देना उनकी इस नीति को प्रमाणित करता है। सिक्खों के महान नेता महाराजा रणजीतसिंह जैसे व्यक्ति भी उनकी राजनैतिक सूझ बूझ के कायल थे।

सामंतों के बढ़ते हुए प्रभाव तथा मुत्सद्दियों की प्रतिस्पर्द्धा से तंग आकर मानसिंह ने राज्य कार्य में उदासीनता बरतना प्रारंभ कर दिया जिसके कारण राज्य के प्रधान मुहता अखयचंद व मुख्य जागीरदारों तथा आयस भीमनाथ की सलाह से राजकुमार छत्रसिंह को राज्य गद्दी सौंप दी। छत्रसिंह की अवस्था इस समय १७ साल की थी इसलिए राज्य का अधिकांश कार्य मुहता अखय चंद आदि मनमाने ढंग से करते थे। महाराजा मानसिंह की नाथ सम्प्रदाय में बड़ी भारी आस्था थी परन्तु छत्रसिंह ने वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण कर ली। सं० १८७४ में अंग्रेजों के साथ जोधपुर राज्य की संधि हुई जिसमें कोई १० शर्तें दोनों पक्षों ने स्वीकार की थी। इसी समय युवराज छत्रसिंह का देहान्त हो जाने से राज्य गद्दी खाली हो गई। अंग्रेजों ने यहाँ की बिगड़ती राजनैतिक परिस्थितियों को ठीक करने के उद्देश्य से महाराजा मानसिंह से तखतगढ़ में बातचीत की और उन्हें पूर्ण आश्वासन दिया कि वर्तमान परिस्थितियों को सुधारने में वे लोग महाराजा को पूर्ण सहायता देंगे और आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे इस पर मानसिंह पुनः गद्दी आसीन हुए।

मानसिंह ने गद्दी आसीन होते ही मुहता अखयचंद तथा अन्य षड्यन्त्रकारी ८ व्यक्तियों को भी गिरफ्तार करवा कर मरवा डाला। कई लोगों को कैद किया और कई ठाकुरों की हवेलियों पर सेनाएँ भेजी गई। इस प्रकार अपना पथ निष्कंटक कर पुनः राज्य कार्य देखना प्रारम्भ किया। यह सब होते हुए भी राजनैतिक षड्यन्त्रों तथा जागीरदारों के कुछ मामलों के झगड़े निरन्तर चलते रहे। नाथों के प्रति अत्यधिक श्रद्धा होने के कारण भी राज्य कार्य में कई प्रकार के विघ्न उपस्थित होते रहे। अंग्रेज अधिकारियों के साथ भी अनेक बार मन

मुटाव हुआ तथा उनके साथ की गई सधि मे भी हेरफेर किया गया। अन्त मे उन्होने उलझी हुई परिस्थितियो से विक्षिप्त होकर सन्यास ले लिया और मारवाड छोड कर गिरनार की तरफ जाने का विचार किया परन्तु तत्कालीन पोलिटिकल एजेन्ट लडलो के समझाने से वे राईका बाग मे रहने लगे और अहमदनगर से जसवर्तासिह को लाकर अपना उत्तराधिकारी बनाने की इच्छा प्रकट की। वि० स० १६०० मे उसी स्थान पर उनका देहान्त हो गया।

चालीस वर्ष के दीर्घ राज्यकाल मे उनका एक भी वर्ष पूर्ण शान्ति और सुख से व्यतीत नही हुआ। परन्तु इन परिस्थितियो मे उनके जिस व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था, उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति तीन प्रकार की काव्य-धाराओ मे प्रकट हुई है। योद्धाओ के शौर्य और उत्साह की प्रशसा आपत्तिकाल मे काम आने वाले व्यक्तियो पर गीत, दोहे व छप्पय आदि रचकर की, यह उनका आदर्शोन्मुख व्यवहारिक पक्ष था। जब से आयस देवनाथ के आशीर्वाद स्वरूप उन्हे राज्यसिहासन प्राप्त हुआ था, वे निरन्तर नाथो के भक्त बने रहे और नाथ-दर्शन तथा गुरु-महिमा के गीत पूर्ण आस्था के साथ गाते रहे। जीवन के नीरस व राजनैतिक प्रपचो के बोझिल क्षणो को रसस्नात करने के लिए नारी-सौन्दर्य तथा प्रेम की सरस भावनाओ को विभिन्न राग-रागनियो के सहारे अभिव्यक्ति देते रहे। यद्यपि उनकी साहित्य-रचना स्वत स्फूर्त्त है, परन्तु वे साहित्य की चिरन्तन महत्ता व काल को पराजित करने वाली शक्ति से भली-भाति परिचित थे। इसीलिए उन्होने चारण कवियो को अनेक गाँव जागीर मे दिए और कविराजा बाँकीदास जैसे व्यक्ति न केवल उनके राज्यकवि पद पर आसीन रहे अपितु अन्तरग मित्र बनने का सौभाग्य भी प्राप्त कर सके। काव्य-कला के साथ-साथ उन्होने चित्रकला और सगीत को भी असाधारण प्रोत्साहन दिया। वे सही मायने मे एक दार्शनिक राजपुरुष, दक्ष राजनीतिज्ञ, प्रतिभा-सम्पन्न कवि और विभिन्न कलाओ के मर्मज्ञ थे। उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे यदि यह कहा जाय कि राजस्थान के उस सक्रान्तिकाल मे जब सभी राजा प्रभावशून्य से हो गए थे, केवल महाराजा मानसिंह ने अपने प्रभाव को अक्षुण्ण ही नही रखा, साहित्य-सर्जन के माध्यम से उस काल पर सदा के लिए अमिट छाप भी अकित की है, तो अनुपयुक्त नही होगा। कर्नल टॉड जैसे विद्वान् राजनैतिज्ञ भी उनकी योग्यता और बहुमुखी प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना नही रहे थे।

मानसिंहजी ने राजस्थानी, ब्रज, सस्कृत व पजाबी भाषा मे ५० के करीब गद्य-पद्य रचनाओ का प्रणयन किया है, जिनका परिचय परिशिष्ट मे प्रकाशित

लेख में दिया गया है। प्रस्तुत अङ्क में प्रकाशित शृंगार रसात्मक पदों का जहाँ तक सम्बन्ध है उनका वास्तविक आनन्द तो पाठकों को इन्हें पढ़ने में ही मिलेगा परन्तु उनके काव्य-सौष्ठव के सम्बन्ध में यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि कवि ने यहाँ की संस्कृति के अनुकूल प्रेम भावनाओं की गहराई को आत्मसात् कर अत्यन्त सहज, सरस एवं मार्मिक अभिव्यक्ति इन पदों में दी है। स्थान-स्थान पर मौलिक उपमाओं कोमल वर्ण-विन्यास और ललित शब्दावली के द्वारा भाव भंगिमाओं का चित्रण प्रस्तुत कर काव्य को हृदयग्राही बना दिया है। अनेक पदों में स्वकीया के प्रेम के अतिरिक्त परकीया की कामातुरता और लैला मजनू तथा हीर रांझे की प्रेमासक्ति को भी कवि ने विशेष प्रकार की उन्मुक्तता के साथ प्रकट किया है। अधिकांश पदों की भाषा राजस्थानी है पर कुछ पद व्रज व पंजाबी भाषा में भी लिखे गए हैं तथा उनमें भी राजस्थानी शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ बिना किसी संकोच के किया गया है। पद रचना राग-रागिनियों के आधार पर ही की गई है इसलिए इनका वास्तविक आनन्द इन्हें गाने तथा सुनने में ही है।

उक्त पदों का सम्पादन तीन प्रतियों के आधार पर किया गया है। दो प्रतियाँ हमारे संस्थान के संग्रह की हैं। मूल प्रति (क) का पाठ यहाँ प्रकाशित किया गया है तथा शोध संस्थान की अन्य प्रति (ख) व तीसरी प्रति को श्री सीताराम जी लाळस के संग्रह की है (ग) का उपयोग पाठान्तर के रूप में किया गया है। मानसिंह जी ने अपने अधिकांश शृंगारिक साहित्य में अपना उप नाम 'रसराज' अथवा 'रसीला राज' रखा है। इसी आधार पर इस कृति का नामकरण करने की स्वतंत्रता हमने ली है। इन ग्रंथों में अनेक पद नाम-स्तुति के भी हैं। रस भिन्नता के कारण उनका प्रकाशन यहाँ नहीं किया गया है। पदों को हस्त लिखित पोथियों में किसी क्रम विशेष से लिपिबद्ध नहीं किया गया है। अतः हमने रागों के अक्षर क्रम से उन्हें यहाँ व्यवस्थित कर दिया है।

प्रतियों का परिचय इस प्रकार है —

क प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर ग्रंथ संख्या २५० आकार ११ × ९ पत्र संख्या १४७ पंक्ति संख्या २७ अक्षर संख्या १९ १७। प्रति का शीर्षक इस प्रकार है— श्री बड़ा हजूर सायबां रै बणावट रा ख्याल।

ख प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर आकार १०½ × ७½ पत्र संख्या ९४, पंक्ति संख्या २१ अक्षर संख्या १२।

ग प्रति—'श्री सीताराम लाळस, जोधपुर के सग्रह की प्रति है। आकार १०½"×७½", पत्र सख्या - ८६, पक्ति सख्या - २४, अक्षर सख्या - २१-२२।

प्रारभ की नाथ स्तुति इसी ग्रथ में है। पुष्पिका में लिखा है—'श्रा पुस्तक मारवाड में गाव बीलाडै श्री बढेर री छै।'

महाराजा मानसिंह का भक्ति-विषयक पद साहित्य पहले ही प्रकाश मे आ चुका था और उसका प्रचलन मारवाड की जनता मे अब भी है। परन्तु उनका यह शृ गारिक पद-साहित्य अद्यावधि अज्ञात ही था। आशा है, महाराजा मानसिंह के काव्य-पक्ष को समझने और राजस्थानी काव्य की समृद्धि का अनुमान लगाने मे हमारा यह प्रयास उपयोगी सिद्ध होगा।

—*नारायणसिंह भाटी*

लेख में दिया गया है। प्रस्तुत अङ्क में प्रकाशित शृंगार रसात्मक पदों का जहाँ तक सम्बन्ध है, उनका वास्तविक आनन्द तो पाठकों को इन्हें पढ़ने में ही मिलेगा परन्तु उनके काव्य-सौष्ठव के सम्बन्ध में यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि कवि ने यहाँ की संस्कृति के अनुकूल प्रेम भावनाओं की गहराई को आत्मसात् कर अत्यन्त सहज, सरस एवं मार्मिक अभिव्यक्ति इन पदों में दी है। स्थान-स्थान पर मौलिक उपमाओं कोमल वर्ण-विन्यास और ललित शब्दावली के द्वारा भाव भंगिमाओं का चित्रण प्रस्तुत कर काव्य को हृदयग्राही बना दिया है। अनेक पदों में स्वकीया के प्रेम के अतिरिक्त परकीया की कामातुरता और लैला मजनूं तथा हीर-रांझे की प्रेमासक्ति को भी कवि ने विशेष प्रकार की उन्मुक्तता के साथ प्रकट किया है। अधिकांश पदों की भाषा राजस्थानी है पर कुछ पद ब्रज व पंजाबी भाषा में भी लिखे गए हैं, तथा उनमें भी राजस्थानी शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ बिना किसी संकोच के किया गया है। पद रचना राग रागिनियों के आधार पर ही की गई है इसलिए इनका वास्तविक आनन्द इन्हें गाने तथा सुनने में ही है।

उक्त पदों का सम्पादन तीन प्रतियों के आधार पर किया गया है। दो प्रतियाँ हमारे संस्थान के संग्रह की हैं। मूल प्रति (क) का पाठ यहाँ प्रकाशित किया गया है तथा शोध संस्थान की अन्य प्रति (ख) व तीसरी प्रति जो श्री सीताराम जी लाळस के संग्रह की है (ग) का उपयोग पाठान्तर के रूप में किया गया है। मानसिंह जी ने अपने अधिकांश शृंगारिक साहित्य में अपना उप नाम रसराज' अथवा 'रसीला राज' रखा है। इसी आधार पर इस कृति का नामकरण करने की स्वतन्त्रता हमने ली है। इन ग्रंथों में अनेक पद नाथ-स्तुति के भी हैं। रस भिन्नता के कारण उनका प्रकाशन यहाँ नहीं किया गया है। पदों को हस्त लिखित पोथियों मे किसी क्रम विशेष से लिपिबद्ध नहीं किया गया है। अतः हमने रागों के अक्षर क्रम से उन्हें यहाँ व्यवस्थित कर दिया है।

प्रतियों का परिचय इस प्रकार है —

क प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर ग्रंथ संख्या २५ आकार ११ × ९ पत्र संख्या १४७ पंक्ति संख्या २७ अक्षर संख्या १९।२७। प्रति का शीर्षक इस प्रकार है— श्री बड़ा हजूर सायबां रै बणायेड़ा ग्यान।

ख प्रति—राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर आकार १०॥ × ७॥ पत्र संख्या ६४ पंक्ति संख्या २१ अक्षर संख्या १६।

रसीलैराज रा गीत

।। श्री आईनाथाय नम ।।

ॐ नमो निखिलनाथ निखिलगुरु-निजनाथरूप स्यामघनवर्ण जोगमुद्रानाद-धरण निजानन्दमय सु[शू]न्यमण्डल रेवताचलनिवास नवनाथ ब्रह्माविष्णुमहेशादिव-दितचरणारविद, श्रीगुरुदेवनाथ-दास-मान-जीवन-इष्ट श्री जलधरनाथ ध्याये निरन्तरम् ।१।

ॐ नमो निखिलनाथ विश्वनाथ निखिलगुरु पूर्ण निजनाथरूप सगुनस्याम-लघनविभूतिचन्दनचर्चितागवलयितगैरिकवसन कर्णकल्पितमुद्रायुगल क्रियमाणा-देशानुरूप योगोजनपरमानन्दकारणैकनाथ ध्वनकलितश्रृंगी दूरीकृतस्वजनद्वैतभ्र[म]-सहस्र हिमरश्मिशीतलयोगप्रभाव अ[मृ]गचर्मासनसस्थित सहस्रारकमल रैवतक कलसाचलनिवासाशेपतीर्थमयचरणोदक सकलनाथसिद्धमडलीमडनारविदज मुकुद-चदधरादिव्र[वृ]दारक[श]वृ दवन्दितचरणारविंद श्री गुरुदेव-देवनाथ-कृपाविलोकन-विश्वदात करण-दासानुदास-मान-मानस-हस स[श]रणानुगतवत्सल श्रेष्ठ श्री जलधरनाथ ध्याये निरतर स्वरूप च गायामि ।२।

राग – अडाणो

ताल – जलद तिताली[1]

देखौ वनरईया फूलन लागी मा
आगम बसत बहार कै ।
और की और भई छिब वन की
कोउक झोलै वयार कै ।। १

वसत वदावन ब्रजत्रिय[2] आवत
फूल कलिन सौं गडवा सवार कै ।
रसीलाराज अलबेली छिब सौ
द्वारै नदकवार कै ।। २

---

[1] 'ताल-जलद तितालौ' नही । [2] तिय ।

आनत रह उण सूरतडी री
रही तन मन मे छाय ॥ २
मत्री जत्री सुकनी जोतसी
यारै हाथ न उपाय ॥ ३
उवौं कोई सैण मिलावै सयां[1]
जो मारूडी देवै मिळाय ॥ ४

राग – आसावरी
ताल – होरी रौ

म्हारी वाईजी रौ काई छै हवाल
राजिंद चालै छै चाकरी ।
जे कोई वदलै जावै वाळौ[2]
उवा नैं[3] द्या मुलक 'र माल ॥ १
वैरण ह्वै रही छै या चाकरी
ज्यू सोकडली रौ साल ॥ २
कस्या कमर कितनीक वार रा
राखा दावण झाल ॥ ३
वह्यौ वह्यौं जावै छै यौ जियरौ[4]
साहव हाथ समाळ ॥ ४

राग – आसावरी
ताल – होरी रौ

म्हारौ मारूडी रमै छै सिकार
सघन वन झगरा अलबेलियौ ।
हाथ बदूक लपेटै जामगी
कमर कसी[5] तरवार ॥ १

---

[1]सईया । [2]वहालौ । [3]उवै नैं ग । [4]दियरौ ग । [5]कस्या ।

राग – आसावरी
ताल – इको

आई रंग बहार आली
खेलै कान्ह कवर मतवारो अलवेलो।
मधुर सुरन सों गांन होत हैं
और भीन नूपरन की भनकार॥ १
अवा मोर केसू फूलें
भंवर भनत पिक करत पुकार।
ऊडत अवीर चलत पिचकारी
रीझत है बरसाने की नार॥ २

राग – आसावरी
ताल – होरी री

काली कोली कोयल बाग बन बन में
बाड़ी अबराई री फूल रही मा।
लपट चली छै सुगध पवन री
केसर क्यारो सु लाग॥ १
भणहण भवर मस्त फूलां सु
मोर उड रह्यो छै पराग।
मारू आसी रसराज बसत में
किणियक सुगणो र भाग॥ २

राग – आसावरी
ताल – होरी री

म्हारा मारू विन रह्यो हू न जाय
जिण दुख री छ बीमारी।
कांई करसो मौ बेन अयाणीं
लागी छै बिरहा री लाय॥ १

---

[1]थी।

आनत रह उण सूरतडी री
रही तन मन मे छाय ॥ २

मत्री जत्री सुकनी जोतसी
यारै हाथ न उपाय ॥ ३

उवौ कोई सैण मिलावै सया[1]
जो मारूडौ देवै मिळाय ॥ ४

राग – आसावरी

ताल – होरी रौ

म्हारी बाईजी रौ काई छै हवाल
राजिद चालै छै चाकरी ।
जे कोई वदलै जावै वाळौ[2]
उवा नै[3] द्या मुलक 'र माल ॥ १
वैरण ह्वै रही छै या चाकरी
ज्यू सोकडली रौ साल ॥ २
कस्या कमर कितनीक वार रा
राखा दावण झाल ॥ ३
वह्यौ वह्यौ जावै छै यौ जियरौ[4]
साहब हाथ समाळ ॥ ४

राग – आसावरी

ताल – होरी रौ

म्हारौ मारूडौ रमै छै सिकार
सघन वन झगरा अलबेलियौ ।
हाथ बदूक लपेटै जामगी
कमर कसी[5] तरवार ॥ १

---

[1]सईया । [2]वहालौ । [3]उवै नै ग । [4]दियरौ ग । [5]कस्या ।

घाय रया छ सुरी मिळ चपळ
वहे रया सीर कटार।
लिख लीज वीरा चितेरा सुरत[1] री
उण वेळा री उणिहार ॥ २

राग–माझा जोगिया
ताल – बसव तिताली

मारू भायो छे सौ कोसां सूं चाल
बाई थांरै कारणीयै।
मजन मजन करो लाडलो
मतर सवारो बाळ ॥ १
पहरो भूखण वसन ममूलक[2]
ल्यावो सामां चाल ॥ २
दोडघो लग मब जाय वधावो
भर मोतीडां रो थाळ ॥ ३
सुण सजन हरख्या छ[3] सारा
सखियां ह्व रही[4] निहाल ॥ ४

राग – मासावरी
ताल – होरी री

बरात चलूगी[5] प्यारे नई दुलही कैसी लायोगे।
बेसक ब्याहो मितवा मै राजो
मोहि रान[6] मिसके सिघामोगे ॥ १

राग – मासावरी
ताल – होरी री

समास लोजाजी प्यार म फस लाई है मासनिया।

---

[1]मुरतडी री त ग। [2]अणियार। [3]ममोलक। [4]है। [5]रही है। [6]चला
ग ग। लग कै।

विन जल कहु हरी तुम देखी
अब बिब की बेलिया ।। १

विन कसमीर होत कहु लाला
केसर केरी बगिया ।
रसीले[1] राज इते दिन राखी
अब है तुमारी अलबेलिया ।। २

राग – आसा जोगिया
ताल – जलद तितालौ

आलीजा सग लीजोजी म्हानै लीजौ
राज चलौ तौ जे[2] पना परदेस नै ।
नेह[3] बदी नै छै अवलबन
आप विना कुण बीजौ ।
झम झम झूमा पागडै
इतनी महर म्हासु कीजौ ।। २[4]

राग – आसा जोगिया
ताल – जलद तितालौ

जाण[5] देस्याजी नहि थानै आलीजाजी ।
पैलौ विछोहौ उवौ मारू म्हासू नही नीसरै
परदेसा री मुहम[6] वतावौ ।
और कोई किसीय बहानै आलीजाजी[7] ।
राज बहुत विधसू समझावौ ।
यो[8] मनडौ नहि मानै ।। १

राग – आसा जोगिया
ताल – जलद तितालौ

परदेसा नू ना सिणवै
दरद बदी रौ हो दरद पना[9] देखणा ।

---

[1] राखी जतन-सौं इते दिन इनकौ ख ग [2] 'जे' । [3] नही । [4] इसके अतर्गत का 'ग' मे नही । [5] आलीजाजी जाण । [6] मुहीम ख ग । [7] आलीजाजी नही । [8] ओ । [9] 'पनाजी ।

धूप पड़ धरती तप, सरवर सूक्या जाय।
जिण घर नवली गोरड़ी, वे क्यूं बाहर[1] जाय ॥ १

राग – भाषा जोगिया
ताल – जलद तिताली

राधा न कोई मिळावै स्याम।
विरह[2] जोवन तन जाळ[3] रयो छ
ज्यूं ग्रीखम रो घाम ॥ १
मछळी नै जळ कोई मिळाय
कै कोयलड़ी न ग्राम।
ग्रव तो वेग मिळ उवो सांवळ
हारयां रो विसराम ॥ २

राग – भाषा जोगिया
ताल – जलद तिताली

सिकारां रम रह्यो म्हांरो राज।
बगा बाज[4] राजे ग्रसवारां
सग ग्रसमलो साज[5] ॥ १

राग – भाषा जोगिया
ताल – जलद तिताली

परिभ्रत कहु कहु कुल कुल चहि चहि,
झ झ ग्रलि पिऊ पिऊ पपय्या[6] चकोर चक चक कल कल हंसनि कुल
सर सर वन वन सिखर सिखर मोर
कमळ कमळ डारि[7] डारि गुल गुल ॥ १

राग – भाषा जोगिया
ताल – जलद तिताली

सखि लाल चूनरिया चमकै
हरी हरी कचुकिया तन पे

---

[1] बाहिर। [2] बिह। [3] जाय प। [4] बाज छाज च राज बाज ग [5] समाज च
[6] पपईया। [7] चमकै। [8] डार डार च म।

लहैगा[1] गुल अनार ता पर लपैदार
नथनी कठसिरी[2] चुरियां चमकै*
तैसे ही नूपर चरनन झमकै ।। १

राग – आसा[3] मारू[०] री भेळ
ताल – धीमो तितालो

चगो ए कलालनी चगा दारुडा पिलादै[4] ।
वाई घर आयौ छै मारू मतवाळडो
ऊनै ज्यू त्यू विलमादै[5] ।। १
वाई घर म्हारै कै थारै वारणै
तीजी ठौर न जाणदै ।। २
वाई थारौ उवैरौ उणिहारौ[6] एकसौ
जो-सू विलम रहैलो ।। ३
वाईजी सू थोडो-सौ पिया मतवाळौ हुवै
इसौ चौसरौ कढायनै[7] ।। ४

राग[8] – आसा मारू री भेळ[०]
ताल – धीमो तितालो

दारूडी पिला द्यौ सायबा दारूडी पियण रौ घणै[9] रौ म्हानै चाव ।
रग केसर की[10] या मन कै सनेह सु
सौनै री सीसी और मीनै[11] कै पियालै अलवेली ।।१

राग – आसा[12] मारू[13] री भेळ
ताल – धीमो तितालो

भळक रया छै तीखा सैलडा
अमा कमधजियौ रमै छै सिकार ।

---

[1]लहगा । [2]कठसरी । *इसके अतर्गत का पाठ 'ग' मे नही । [3]राग आसावरी, ताल धीमो तितालो । [०]माड रौ भेळ ग । [4]पिलायदै । [5]विलमायदै । [6]उणियारौ । [7]कढायदै ख ग । [8]राग–आसावरी । [०]माड ग. । [9]घरा । [10]किया । [10]महीन । [12]राग आसावरी । [13]माड ग ।

साम सूर न्हार उठ माव छै
ले छै जसम सिर मेल।
घडीयक सूरज ठहर देखे छै
सिर ऊपरली खेल ॥ १

राग – माधा माड* री मेळ
ताल – बीमो तिताळो

महोलो तीज रो मालीजाजी।
माड माह मारवणी नारी
इण मेल चित राजी ॥ १
तीज गळै मलवेला भूलै
सखियां गाय रही छ समाजी।
मिळ रही तान सैंधवी रा सुर सूं
बण रहा रंग री बाजी ॥ २

राग – माधा माड* री मेळ
ताल – बीमो तिताळो

विदेसीड़ा रे आयो छ रे चौमासो।
मारग री प्यारी खेद उतारै
म्हारे डेरे से बासो ॥ १
कोठ खोडो छ मलवेली पंथिया
किणन प्यास री प्यासो।
घड़ीयक ठहेर[१] वेसनै जावै
तीजणियां री तमासो ॥ २

राग – माधावरी[१] माड[२] री मेळ
ताल – बीमो तिताळो

जाक जागे मौन प्यारे वाहो घर आवो मलमेलिया।

---

[१]राग–माधावरी [२]माड म। रही छै। [३]राग–माधावर। [४]मामड म। प्यारा।
[५]म्हर [६]राग–माधावरी। [७]माड ग। [८]बना हीं।

रसीले राज उवा मांन मनावैगी
उवा विन बुलावै तुम्है[1] कौन ॥ १

राग – एहिग
ताल – जलद तितालो

क्या रग डाला वे लैला नजरू मैं।
आपै आज साहब नै रचिया
उस मै रग्या दिल मजनू नै ॥ १

राग – एहिग
ताल – जलद तितालो

तू तौ मैंडड़ी ज्यान, सिपाईडा रे।
मिहर करै मैडी गलिया आवै
इतनी अरज मैडी मान ॥ १

राग – एहिग
ताल – जलद तितालो

दिलनू दिलनू लगी वे तेरी याद।
जी चाहीदा रसराज उस गारी दै दे मुखडै नू हारे स्याणा।
उस जूटी[2] भौवा उस तिलनू ॥ १

राग – एहिग
ताल – जलद तितालो

निजरादे मारे मर गये मास्यूकां।
हो मास्यूका तुझकू एता दरद न्ही[3] आया
पुरजे तौ पुरजे अपना ज्यान वदन कर गये ॥ १

---

[1] ब। [2] जटी ग। [3] नही।

राग – एहिग

ताल – जवद तितासी

भवरा वस क्यूं कर तनू कीता जाय।
इस्क लगाय रसराज सामिल रहणा थाले हारे स्योणा
सोडा दिल तेरे हमरा ॥ १

राग – एहिम

ताल – जलद तितासी

लाल दुसाल्ल वाळा मियां मैंडा।
बांकी नी पगियां रलती सरइयां मेरा स्यांणा।
झूमक काळा जुलफां वाळा साला[1] ॥ १

राग – एहिम

ताल – जलद तितासी

हो मुखडा यारां दे मे वागवहार ।
मूहां स नैंन गुल लाला
नजरां वी सुसबोहि मियां ॥ १

राग – एहिम

ताल – होरी री

मामी मायौ मारवणो मिलण माळ्डो घर मायौ छै म्हां वालौ पीव।
हुसरयारे होद पर असवार
तुरियां रा भूलरा मै धजदार
जोत जगामग जरी जबार[2]
सग असमैला छ सिरदार ॥ १

राग – एहिम

ताल – होरी री

रग लाग्यो रसिया जी हां[3] रसिया जी[4] थारै सेहरे।

---

[1] लाल। [2] बाग बहार रा पा.। [3] यह चरण आदर्श प्रति में नहीं। [4] हो नहीं। [5] जी हो।

रसराज दिल लाग्यौ चीरै तुररै
ज्यान लगी थारै परसग उमग ।। १

राग – एंहिग
ताल – होरी री

सावरौ वर्स मेरौ परदेश
सयो होरी का सग खेलू ।
विरह विथा जोबन को कथा कौ
सब दुख तन पर झेलू ।। १
लाज गमाई विताई दिवस केते
पतियां लिख लिख मेलू ।
अब जो मिलावौ रसराज मोहनकू
रसक कवर अै रस लेलू ।। २

राग – एंहिग
ताल – होरी री

हो कासोद म्हारै प्यारै री मिलण हारे कब होसी उवो ।
रसराज वहोत दिना रा बिछड्या
कबीय तौ म्हारी दिस जोसी ।। १

राग – एंहिग
ताल – होरी री

सैणादा मिलणा नित होय, साई उवो दिन अब कर वे ।
रसराज दिल लग्या वे जिन सकसू सै वे स्याणा
कोई ल्या[1] मिलावै सैण उवौ ।। १

राग – भैराक
ताल – आडौ तितालो

सिपाइया[2] मेरे आमिल पीर की दुवइया* वे ।

---

[1]ला । [2] सिपाया ख ग । *दुवाइयां ग ।

राग – एहिम
ताल – जलद तितालो

भवरा वस मयूं कर तनू कीता जाय।
इस्क लगाम रसराज सामिल रहणा मासे हारे स्याणा
सोहा दिल सर छुमरा ॥ १

राग – एहिम
ताल – जलद तितालो

लाल दुसाल माळा मियां मैहा।
बांको नी पगियां रलतो सरहयां मेरा स्यांणा।
झूमक काळा जुलफां माळा लाला[1] ॥ १

राग – एहिम
ताल – जलद तितालो

हो मुखड़ा यारां दे वे बागबहार[2]।
मूंहां स मैन गुल लाला
नजरां दी खुसबोहि मियां ॥ १

राग – एहिम
ताल – होरी रो

मायो मायो मारवणो मिजण मारूडो घर मायो छै म्हां वालो पीव।
हुसत्यांरै हौद पर असवार
सुरियो रा झूमरा मैं धजदार
ओल अगामग जरो जवार
सग असवेला छ सिरदार ॥ १

राग – एहिम
ताल – होरी रो

रग लाग्यो रसिया थी हो रसिया थो[4] थांरै सेहरै।

लाल। बाग बहार रा म। [3]यह चरण आधार प्रति में नहीं। [4]थो नहीं। [5]थी हो।

राग – कल्याण

ताल – जलद तितालौ

आज गोकुळ वरसानै गाव विच
झाझ मदिल रा अम्रत धुन वाजै अे मा।
इक दिस कान्ह इक दिस राधा
रति मनमथ दोऊं लख लाजै ॥ १
होरी खेलत भई साझ सुरगी
जुव जन मिल जुवती सज साजै।
रसीला राज त्रिय आई ते रही झुक
वसत वदावन देख[1] न करजै ॥ २

राग – कल्याण

ताल – धीमौ तितालौ

कोयलिया बोल उठी री मा
आज तौ अचानक ही वगिया मै।
कौन से नवेलौ पवन झकझोलै
कौंनसी सुवासन ई मै घुटी ॥ १
रसीला राज वसत जानी मै
पियपै गवन की आस तौ जुटी।
यासै सुरत छुटी इक साथै
मानू हिंडोरै की लर ज्यौ तूटी ॥ २

राग – कल्याण

ताल – धीमौ तितालौ

वेलरिया वन छायौ मा
पतवन फुलवन डारी हरि हरिया।

---

[1] देव ग।

वांका लिबास घेरा सब जानी घोडा मे
पाय की पनियाइयां[1] वीछु डाक[2] मे ॥ १

राग – भैराक
ताल – होरी री

ए कलाळी म्हारे मारू ने दारू दनां ।
यो मतवाळो[3] तूं कामणगारी
मोहि लियो छै तीखां[4] ननां ॥ १

राग – भैराक
ताल – होरी री

ए कलाळी म्हार मारू मै समझावै ।
या दारूडी कोठे कोठ तूं दे[5] छै
सो म्हान बतलावै ॥ १

राग – भैराक
ताल – होरी री

रही झूम झूम[6] सांवरै रै गळ लाग ।
रसराज के[7] ही बहार हुई स्यांणा
गुलाब सै सोवन चबेली झूम ॥ १

राग – भैराक
ताल – होरी री

सहेल्यां म्हासू बोलै राम गहेलो[8] ।
उवारी म्हारी छ पिछाण[9] कुल री
उवारो[10] मिलण सुख री सुहेलो छै[11] ॥ १

---

[1]पनियां स ग । वीछु ना डंक । [3]मतवारो म । [4]तीखै स । [5]देसैगे ग । [6]झूमि स ग । [7]कई स म । [8]गहेली ई । [9]पीव ई । [10]उवो म । [11]छैल स म ।

राग – कल्याण
ताल – जलद तितालौ

आज गोकुळ वरसानै गाव विच
झाझ मदिल रा अम्रत धुन वाजै अे मा।
इक दिस कान्ह इक दिस राधा
रति मनमथ दोऊ लख लाजै ॥ १
होरी खेलत भई साझ सुरगी
जुव जन मिल जुवती सज साजै।
रसीला राज त्रिय आई ते रही झुक
वसत वदावन देख[1] न करजै ॥ २

राग – कल्याण
ताल – धीमौ तितालौ

कोयलिया बोल उठी री मा
आज तौ अचानक ही वगिया मै।
कौन से नवेलौ पवन झकझोलौ
कौनसी सुवासन ई मै घुटी ॥ १
रसीला राज वसत जानी मै
पियपै गवन की आस तौ जुटी।
यासै सुरत छुटी इक साथै
मानू हिंडोरै की लर ज्यौ तूटी ॥ २

राग – कल्याण
ताल – धीमौ तितालौ

वेलरिया वन छायौ मा
पतवन फुलवन डारी हरि हरिया।

---

[1] देव ग ।

घुमदन छाये सरोवर नदियां
भंवरन कलीन बेलरियां ॥ १

सारन छाई रन उजारी
पद कूं छायौ किरन छबि भरियां।
रसीला राज पिय कूं मैं छायौ
और मेरे सग की सहेलरियां ॥ २

राग – कल्याण
ताल – सूर फाक्ता

बोलै मा कोकिल कटुक बोल
फूली वन सकल भवरगन डोलै
वृदावन की सघन बनी विच
ब्रज वाम स्याम भूलै मिल सरस हिंडोलै।
अतर अयोरन जल चंद्र
धार चदन कसमीर कुटीर
मिलाय चलावै है चाहि पर चायत
कसक जुवन जनकू री—
पुस्प ग द यौ जुवतिय जिहां खेलै ॥ १
कुसमाकर आयौ नव प्रिय मिल मिल
निरतत बाजै रसन रचे नूंपर झनकत
झांझ बजै डफ अवग ससही यौ रागरग
बहुतै भेद लय तान तरग सुरग
यौ राधा स्याम निरख बहुधा चल खेलत दोऊ
सज आनद मै मोहत सब कू
जमना तटी पर रसीला राधन लेहै
खुल भए रस बसंत महोत्सें ॥ २

---

[1]जुब म। [2]मै ग।

राग – कामोद कल्याण
ताल – धीमो तितालो

डका दै चढ्यौ मनमथराज।
रूप गुनन के सस्त्र सुहाए
जोबन सुभट बका ले॥ १

राग – कामोद कल्याण
ताल – धीमो तितालो

पपीया बोल सुना पीया कौ नाम।
इन आखिन कौ देखवो दुहेलौ
अनत रहै कहु डोल॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

आली री आज बन्यौ है कजरा नैंनू कैसै तेरै,
और भाल पर सुरख बिंदलिया।
हीरा मोतिन की नथनी और कठसिरी चमकती
त्यौ है हर्‌यौ लहैगा[1] लाल चुनरिया॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तितालो

तैं मोरी गैल पर्‌यौ क्यू काना
ग्रैसौ कैसौ है रे मेरै नैंनू[2] कजरवा
सुसरारि[3] माईकै मैं
मोहि चवाई दिवावैगौ
रसराज तू मदवा भयौ महरवा[4]॥ १

---

[1]लहगा। [2]नैंन। [3]ससरारि। [4]महिरवा।

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तिताली

विरहा धूम मचाई मोरे रांम ।
रसराज स्याम महीबस यूं ही
विसर गया कर गया मैंनूं बदनांम ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तिताली

सांवरो छोड चल्यो मोरे रांम ।
रसराज मागे तो बाहिर सें जानतो
अब तो जानत मै अंतर को भी स्याम ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – धीमो तिताली

चमकै मुंदा झूमकै वालो नथनी ।
दुपटा नी काला पलूडा सोहैं
सोहै जरी वाला ।
झमकै नीमुंद गूंघरू दिल वजाता
सजनूदा मै सजनी ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – जलद तिताली

प्यारा मेरा समज समज[1] बोलदा वे ।
समज बोले आसुं क्या कहोयें सहीयो[2]
दिलकी कधी मुझ सें नहीं बोलदा वे ॥ १

राग – यमन कल्याण
ताल – सवारी

मा क मिसा तैं क्यूंर जालम

प्यारे । [1] समझ । [2] सहियों ।

मुझसे जो मिला, तौ मिल मिल विछडा क्यू रे जालम[1] ।।
जो वीतदी सौ जमीर मालुम आलम कैसे जानै
रसराज दान मिजाज मालुम ।। १

राग – हमीर कल्याण
ताल – धीमो तितालो

मारूडा म्हारा राज लाडला हो मतवाळा बना
आगण मोत्या चौक पुरावा
महला नै पधारौ म्हारै आज ।। १

राग – हमीर कल्याण
ताल – होरी रौ

आज मन मै लगी सजनी, सावरै सुदर कै मिलन को ।
नही विसरत उवा की सुध मोहि कू
हसन बोलन औ चलन की ।। १
बरस मास पख दिन अइ[2] रजनी
पैहर[3] घडी मै उवा की[4] पलन को ।
रसराज तन कौ विरह नही जाकै
नंही है जुदाई दिलन की ।। २

राग – हमीर कल्याण
ताल – होरी रौ

आयौ हे राजकवर सज कै अलवेलौ
नौबत वाजत नीसान ।
मोत्या थाळ भराय वधावौ
गावौ मगळ गान ।। १

राग – हमीर कल्यांण
ताल – होरी रौ

स्याम मेरौ लहरयौ भीजै, वरसै वदरा झुक झुक ।

---

[1] 'जालम' आदर्श एव ग प्रति मे नही । [2] अरु । [3] पहर । [4] कै ।

सीत न व्याप भयो रसवारो
विरह मगन रयो' घुक घुक ॥ १
मो मैं चूक परो के काहू
भोर सिर-जोर नैं मिलाय लइ तुक
खोलत नहीं रसराज कपाटन
मला रहत हौ क्यू रुक रुक ॥ २

राग – हमीर कल्याण
ताल – पाठ चौताली

गरवा लाग मिलूगो पीमरवा मैं तोरे।
रसराज तारे कारण मैं रहो हु
सारी रैण भर जाग लाग' ॥ १

– काफी
ताल – इको

म्हासौ म्हारी सीख रौ भालीजाजी हो।
सीखो म्हारा पना मारू घणा नैं सनेह सू
इण सांवणियां री रीझ रौ ॥ १

राग – काफी
ताल – चलद तिताली

छैल म्हारो महरणी मीज की राज उवी स्याम।
महोत खतम सु म्हे महरणो रगायो
सहज सुभाव छे थारो हो ॥ १
लोक-लाज सुं वहोत डरो छां
मो व्रज भरणा भरचो।
रसराज भरा तो कदर दिल रखो'
रग डारो केसरयो ॥ २

रहो। जाग न प। 'राखो। डारो छो।

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

पना घर आज्यौ रे लाडली छोटी रा वना।
रसराज नेह लगाय विसर गया
अेकरसा मिळ जाज्यौ[1] रे ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

पना धीरा बोलौ रे लाडली राधा रा वना।
रसराज यौ व्रज गाव चवइया
चातुरी सु द्यौनै महोलौ[2] म्हानै ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

बाई जी मेला[3] आवै छै राजकवार।
थोडा[4] दिना मै सावलडै थानै
कर लिया तावैदार ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

मोही रे मेरी[5] ज्यान पनाजी थै तौ।
तरह अनोखी रसराज निजर री
दुपटा री न्यारी छिब सोही रे ॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

लागौ रे थासू नेह पनाजी म्हारौ।
अब जोरा-जोरी तौ निभावौ सावळडा
थारी लैर म्हारो मागौ[6] रे ॥ १

---

[1]आजो। [2]महोलौ रे। [3]महला। [4]थोडा सा। [5]म्हारी। [6]सागौ ख. ग।

राग – काफी
ताल – जलद तिताली

सायबाजी म्हारै महल पधारो नें आज ।
किरपा करो सायबा महल पधारो
रंगभीना[1] रसराज ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तिताली

धीरां धीरां बोलोजी निजरयां रा लोभी बोलोजी ।
निजरां रा लोभी प्यारा थे ।
देख'र भ्रक भरो कमधजिया
*भवर पटा में मथ भळक
हो चंगी मथ भळकै जी* ॥ १
सरहदार मति[2] हो कमधजिया
बनड़ी छै निपट नादांन ।
रसीला राज थांसूं इतनी बीनती
चाकर रया म्हे थारा
खासा चाकर थांरा जी ॥ २

राग – काफी
ताल – धीमो तिताली

मोत्यां रो गजरो सेज में सायबा भूली मैं ।
देख्यो मणद मही सासू खिगाणी
सखियन संग भूली मैं ।
देस पारोसन को पिया सायबा
दुख दे रह्यो मोहि सूनी द ॥ १

---

[1]कमधजिया वाला राज । *इसके अन्तर्गत का पाठ प में नहीं । [2]मती । [3]साथा ।

राग – काफी
ताल – धीमौ तितालौ

सयाणी म्हारौ प्यारौ कद आवैलौ ।
रसराज बौहत दिना सू बिछड्यौ[1]
उण मुख सु वतळावैलौ ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमौ तितालौ

सावण महीनैं साहबा घर आइयौ री ।
फूले बिरछ और लता लपटानी
ज्यू ही म्हारै गळ लपटाइयौ ।
वदरा ह्वं झुक झुक मतवारे
सायबा म्हारै देस वरसाइयौ री ॥ १

राग – काफी
ताल – होरी रौ

आई वसत कत घर आयौ ।
अबराई सी आस फली मा[2] ।
मन केसू फूले सखियन के
सुख कै समीर की लपट चली ॥ १
जुवती जुव-जन भवरा-भवरी
गावत धमाळे वहार मिली ।
बिरछ बेल ज्यौ अब मिल कै होयगी
रसीलाराज सै[3] रगरली ॥ २

राग – काफी
ताल – होरी रौ

मदवा मारू लोयण लाग्या, मारूडाजी ।

---

[1] विछड्या । [2] माई ख ग । [3] सो ।

थांरे कारण रही झांख झरोखा
थांरे तो कारण रैण जाग्या ॥ १

राग – काफी

ताल – चलद तितालो

फाग के दिनन कसो मान री
चल कुजन[1] भवन कुं ।
अे दिन रैन अमोलक जाय
समझे तू सब ही सुजान ॥ १
आनद मानै सौतवा की सखियां
वेगी हमैं दुख दान ।
पीछ चाहै सोही करगी
उवा ही राधा तू उवो ही श्याम ॥ २

राग – काफी

ताल – चलद तितालो

राधे कु अब आए उवे दिन अखियन चित्त तोर नैन मदरुवा नाचना[3] ।
कोयल बोल बोलती हैं मधुरे
मुरवा की नांई चलत बारी बंग ॥ १
गुटकत[6] कुच कचवा मैं पारेवा
केसर क्यारी सौ सरीर लसत अंग ।
रसीला राय तू बसत रूप भई
बसहो हैं पिय तो आगे न रहि है बच ॥ २

राग – काफी

ताल – दीपचंदी

अैसे फगवा मैं काहे कुं जइयैं री
घर हांन अेक दूजी लोक चवाई ।

---

[1]कुन बन । सोही । नाचत । मतवारी । [5]अग । [6]गुटकत ।

कुल की वहुरिया परायै पिय पै
नाहक छतिया छुवईयै।
नए नए वसन जरी के भिजवईयै
गौरी गौरी बह्री मुरकईयै।
रसीलाराज याकै सगत[1] होय क्यू न
मदन देव कौ मनईयै॥ १

राग – काफी

ताल – धीमो तितालो

काना अलबेला रे काना।
मोरै हेत मगायौ सौ दीनौ
और कू हार हमेला रे॥ १

राग – काफी

ताल – धीमो तितालो

बाबल घर मेलै अमा मेलै श्रे म्हानै सासरियै पहलै[2]।
सखिया सतावै अमा तू ही डरावै
ओ[3] थारौ पर कर ले[4] लै॥ १
सग की सहेल्या यौ ही जिकर करै छै
जाती सासरियै नवेलै।
मै नही जावौ उवौ देख्यौ बेदरदी
खट नट म्हारी सग खेलै॥ २

राग – काफी

ताल – होरी रो

काहे कू वजाई लाल वसुरिया
मोहि ली गोकुल की गुजरिया कन्हइया।
पिय वरजी न रही है सावरै
लर रही सासू ननदिया॥ १

---

[1]सग तो। [2]पहैलै। [3]यो। [4]लै।

गांव की फाग खेल व्रज वाली
कूजन[1] कूं सब ही भलभेलिया ।
जर जेवर रसराज वारनैं
कहर कियौ इन कारो कंवरिया ।। २

राग – काफी
ताल – दूमौ

उन[1] आसकों का इस्क
कहा किससे[2] जाता है[3] ।
महबूब खातर चीज जो कोई
दिल में पाता है ।
उवो[4] जमीन में पैदा होती[5] नां
आसमान स आता है ।। १
मत्थे स खनके नदियां
सायर में मिलाता है ।
बिन हाथूं सैं दरियाव में
तिरता तिरता[6] है ।। २
कांटु के वन में जलता
गुलसन दिखाता है ।
सबके उवो सिर बिद्दन फटी
भविसन[7] की पाता है ।। ३
कटता[8] है गोस्त सम का
लोहू असाता है ।
हरदम खुशी महबूब की के
रंग राता है ।। ४

---

[1]कन । [2]उस । [3]गिर्दै । [4]है । [5]व वो । [6]तौ । [7]तिराता व प ।
[8]भविसन । [9]कटपा है ।

हम रग श्रेक परी कै
ना खलकत सै नाता है।
रसराज उसकै इस्क कू
साहिब निभाता है॥ ५

राग – काफी
ताल – इकौ

तखत हजारैदा साई
राझेटा मेरा काहे कू जी तरसाणां।
रसराज श्ररज करा लगि दा[1]वण
सहर हजारै नू नहि जाणा॥ १

राग – काफी
ताल – इकौ

नैन लगाना[2] ज्यान जाना ए गजा न[3] भलिया प्यारे
नाहि[4] नीवेलिया फेर बी उसकू सीचनाना खयाल करी।
मन सै तौ वर[5] वखत वना[6] दिसदा भी उमराव पूता
होता है वेदरद त्यू रसराज किसै सिरदार तौ माना॥ १

राग – काफी
ताल – इकौ

हो हो यार नादाणा
मेरे छैला जी जी यार नादाणा।
रसराज लख लसकरदा निसाण तू
परियादे नैणादा निसाणा॥ १

राग – काफी
ताल – जलद तितालौ

श्रजी बूदा चमकै श्रेना जो मोतियू दा।

---

[1]दा। [2]लगा ना ल्यान। [3]ए गला न। [4]वाहि। [5]वरखत। [6]विना।

जुगनू वाला चमक रह्या वे।
मन हर लेता सजनूंदा ॥ १

राग – काफी
ताल – चलत तिताली

अजी मेरा सांवरा नवेला सिरदार।
वेपरवाही और चाह भरया महीड़ा
समझवार रींझवार[1] ॥ १

राग – काफी
ताल – चलत तितालो[2]

एकसखी नूं मे सायथा हो छांड पीयारे[3] कहीं विसर गया वे।
रसराज मोसकसी क्यूं लगाईया
घड़ी घड़ी नूं पुकारदो सखो ॥ १

राग – काफी
ताल – चलत तिताली

दुपटा किस पर कस कर सांध्या यार।
रसराज किस पर कस न मूहांदी
किस पर पेचांदी मार ॥ १

राग – काफी
ताल – चलत तिताली

मेरी गदी सै मिरजा बोल गया वे।
मोसौं तोसौं उवासौं नणदी
सब ही सौं रस रास गया वे ॥ १

---

[1] रिझवार। [2] धीमी तिताली का भ। [3] पियारे। दुपट्टा।

राग – काफी

ताल – जलद तितालौ

मेरी लैंलिया वे कजला सवार ना[1] ।
इन वे नैंना विच कजला सवार कैं
चलते वटाऊ मार ना ।। १

राग – काफी

ताल – जलद तितालौ

या इलाही आसिका नू
ल्या मिलावैं परी नू यार मैंडा वे ।
रसीलाराज तू निजर महरदी
सुकर - गुजार मैं हौ तैंडडा वे ।। १

राग – काफी

ताल – जलद तितालौ[2]

हो वि अैंही[3] जिद मोही रे
दिलभर दिलदार सावलडा तू छैला ।
रसराज सोही नैंणा दी नौंका ।। १

राग – काफी[*]

ताल – धीमौ तितालौ

अब तौ जालम मिलणा मिलणा
लोकादे ओलभैं नही सरमांणा स्याणा
इस्क किया तौ रखना दरद दिलकू मालूम[४] ।
रसराज चद चढा असमान मे
मेरा स्याणा देख रहा वे सारा आलम ।। १

---

[1]कैं । [2]ताल – धीमौ तितालौ ख ग । [3]हो विरोही ख ग । [*]आदर्श प्रति मे राग-ताल का नाम नही है । [४]मालम]।

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली

करदी वे याद करदी ।
लाज की मारी उथा री[1] बोल न सकदी
इश्कों दी मारी[2] फिरदो रांभणा तर[3] वैसणेनूं ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली

ज्यान मटकी महीहा वे तेरी
भांन तांन तरग[4] विचदे मेरी ।
रसराज मांन समान रगदे विच ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली

टपदी सिरकार[5]
रजा साहब कीसे खडी हुई हो लोको ।
रसराज रस बरसदा उनहांदी तांनां में
जो कोई समझ[6] रिजवार ॥ १

राग – काफी

ताल – धीमी तिताली[7]

दिल बसदा वे नंनां वासियां तेरा
मुखड़ा मेहांदे रंग भरा वाला
नए हुसन भरा भरा[8]
भरा हुसदा अंखी कसदा ।
नयनी उतार रखदी रसराज स्यौणां[9]
उस स्यायत केहा विसदा ॥ १

मारी । मारी फिरदी' नहीं । [3]तैनू बैसणनू । तरंग है विच मेरी । [5]सरकार ।
[6]पावै । [7]आदर्श प्रति में राग ताल का नाम नहीं । नयी । [8]'भरा' नहीं क्रम । [9]स्याणा क्रम ।

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो*

दिल वसदा सुहाणे वालडा गवरू
परिया भी लगाणे चाहे तुज से नेहा
ऐसा तूज[1] सा जी जाणे।
कोई औरत मुस्ताक न होदी
रसराज तेरे आणे वतलाणें ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

नैणा नू जादूडा कीता[2] वे यार मेरे नै।
रसराज नैण लगाकर विछडा हारे स्याणा
भूल गया को आखदी मै उन सैणा नू ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

नेहडा लगावै नैणा वाला[3] वे महीडा
नैण लगा अलवेली सूरत पर।
रसराज कहौ सचीया गला मिलणै दीया वे
आठ पहौर घडी घड़ी चाहणा जीडा ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

बुझदा वे राझेटा हीरादा हालनी।
गिर पड़ै[4] रसराज विरछ बी
फूटै सरवर पाल नी ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो

महीडा वे नही मानै।
सारी रैन मनाय रही हू

---

*आदर्श प्रति मे राग-ताल का नाम नही। [1]जैसा ख ग। [2]कीना ग। [3]नाल। [4]परै।

वदो सौ नहीं कछु आंन
साडो[1] वे तकसीर ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमी तिताली

मुलखा महबूबां दा सगणा बाग बहार दा।
रंग हजार रसराज भाखूं मैं
मांनुं झरमुटडा ससार दा ॥ १

राग – काफी*
ताल – धीमी तिताली

मैंनूं मोही सांवल मोही नैणां वाला वे
स्यांणा वे नैणां दे निआरे।
रसराज आसक जेही
हीर ससत हुजार।
हां रे मैं तो लीती गया
इस्कांदे हजारे ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमी तिताली

रंग भरी सानूं सैल सुख दीयां वे।
तान तरंग टपैदी क्या खूब।
रसराज नवी दी लहर लख भूलें वी वे
मान भरी मास्यूंका[2] दे मुख दी ॥ १

राग – काफी
ताल – धीमी तिताली

सरदा टोका पसूंदा प्यारियां वे
जाण बक पता न प्याराजी का।

---

१ साडो। *आदर्श प्रति में राग ताल का नाम नहीं। २ मासूका।

मोतिया दी लडिया रसराज मेरे जाणे
नख सासि पायदी लैन वनी का ।। १

राग – काफी
ताल – धीमौ तितालौ

सुध ले गया वे जालम वेखौ सयौ
इस्क लगाय साडे नाल स्याणा ।
मैं कहती थी मुसवर नू सुध डाल तसबीर[1] मै स्याणा
रसराज यौ की हुवा मुझे नाही मालूम ।। १

राग –काफी
ताल – धीमौ तितालौ

हीरादा रांझणा रांझैदी हीर वे ।
क्या करे कोई आलम अवलिया
लग गया नजरादा तीर वे ।। १

राग – कालिंगडौ
ताल – जलद तितालौ

अलवेलियौ महला आवै
सज[2] सोळै सिणगार सहेली[3] बनी मारवण हे ।
अतर डमर नौबत धुन चगी
सहनाई रग छावं ।। १

राग – कालिंगडौ
ताल – जलद तितालौ

आज फिर म्हारै घर आयौ रै सावरा
हारे झूठा बोला रै ।
काल कयौ काई आज कहै छे
घर घर देता महौला रै ।। १

---

[1]तकवीर । [2]काई सज । [3]नवेली ख ग ।

राग – कालिंगड़ो

ताल – चलद तितालो

कचया की कस खोलो मत राज दुल्हारा कमधजिया
नवल बनां म्हांर दरद लगे छे लाज मावे छ।
सोलण[1] दे म्हारी राजगहेली
सोवन कळस गमाया ॥ १
जोयो म्हे सारो महोलो[2]।

राग – कालिंगड़ो

ताल – चलद तितालो

गोरो नैणां रो काजळ लागे मे
तीखो तीखो नोको रो।
रसराज या नैणां रै कारण
सांवरो सारी रैण जागे मे ॥ १

राग – कालिंगड़ो

ताल – चलद तितालो

आंणीजी पना आंणी म्हे रावळी रीत।
आज और रसराज काल और
मुख देख्यां की प्रीत ॥ १

राग – कालिंगड़ो

ताल – चलद तितालो

झालो थांनै देसां जी केसरिया दुपटा रो
भली म्हारो चित लाग्यो छे थांसू वाला।
रसराज चाकर थांरा म्हें रहस्यां
क्यू ही कहो जग सारो ॥ १

खोल दे न। यह चरण आदर्श एवं न प्रति मे नहीं है। [illegible]। हो।

राग — कालिगडो

ताल — जलद तितालो

नहि मानो थे मदवाजी
काई बोल रया छो अमला मे बेण अलबेला हो ।
थारो जाय काई लाज मरा म्हे
हसैलो नणद बाभीजी ।। १

राग — कालिगडो

ताल — जलद तितालो

पायलडी भणकै छी माभल रात ।
नीद कै बखत सुणै छी म्हेतो
सेजडली पर घात ।। १
सावळडा री सौगन म्हे देस्या
सखिया पूछै मिल कर सात ।
कह्यो नै रसराज राधिके
काई काई हुवै छी बात ।। २

राग — कालिगडो

ताल — जलद तितालो

रसईयै बिन जावै या रसोली रात ।
चटकै गुलाब और चिरिया चहकै
किणनै कहु मा बात ।। १

राग — कालिगडो

ताल — जलद तितालो

लालर सावरी रग लाग्यो छै गोरै गात ।
लाग्यो रग मजीठो चूडै
छूटो जुलफा रै साथ ।। १

कवळपथी मिसी रग लाग्यौ
सोवन हांस सुहास ।
रसराज सावी सरह रग लाग्यौ
मौर रंग लाग्यो पगी रास ॥ २

राग – कामिगढ़ो

ताल – चलद तिवालो

बाडी म्हांरी क्यु चल आयो रे भवरा ।
मेसी सवाद कठासू घटाऊ
रखवाळे री नहीं मास्यो रे ॥ १

राग – कामिगढ़ो

ताल – चलद तिवालो

सायबा रै म्हे कोई जाणा थारा छळ-छद ।
म्हांसू मौर दूसरी मौर ही
निसरा मूं ही बहाणा ॥ १

राग – कामिगढ़ो

ताल – चलद तिवालो

सारी रात मैं कोयल कोठै बोल रही मा ।
रह रह पिछली रात नै सुहेलो
मंबुवा की डारी डारी बोल ॥ १
इण मैं वसंत रा सुगंध पवन मैं
पांख पांख झकझोल ।
नई ब्याही किणियक बिरहणी री
बैरण लाती छोल ॥ २

रा पड़ । ¹बिरहण ।

राग – कालिंगडो
ताल – जलद तितालो

हो म्हारा मारू म्हानै दारू ना पिलावै ।
अजी इण दारूडी में निपट नसौ छै ।
रसराज इक दारूड़ी या छकावै
सुध रमजा विसरावै ।। १

राग – कालिंगडो
ताल – जलद तितालो

आया राझण वे जग सयोलै
दी झोका विच मेरा मतवाला मिया
तैडी हीरादे नाल साडे दिल विच माया ।
गाव स्यहर[1] छड पीत आलम दी
रसीलाराज उमराई हजारै दी
इस्कदा स्यहर[2] वसाया ।। १

राग – कालिंगडो
ताल – जलद तितालो

रखलै वे मान परीदा
मुड चलै तौ जीवा इक वारी नैना[3] वाला वे ।
दूबर हुवा रसराज विरह यौ
जोबन च्यार घरीदा[4] ।। १

राग – कालिंगडो
ताल – जलद तितालो

विछडै व राझण वाला
हुण करा की जतन नहिं[5] छुटदी ज्यान मेरी[6] वैरण हे ।

---

[1] [2]'सेहर' ख ग । [3]नै ग । [4]घडीदा ग । [5]नही ख ग । [6]म्हारी ।

हीर निमाणी दे इश्कदा इलाही
हिक साहिब रखवाला ॥ १

राग – कालिंगड़ी
ताल – दीपचंदी

आवे मा मोरे राज दुलारो।
नई नई अंब मजरियां पें भवरू'
ज्यूं गोरी गोरी बहियां मरोरे ॥ १
समीर भयो वेलरियां परसे
सुक ज्यूं अधर केसू कुच फल तोरे।
बसंत भयो मनराय लूटत है
नंद कौल गए आज ओरे ॥ २

राग – कालिंगड़ी
ताल – दीपचंदी

स्याम म्हारो आंगन आनोजी राज।
अब खोलो घूंघट म्हारा सुं
मोभो आय लाज ॥ १
अब तो थां म्हे आपरा सायबा
म्हारो आपसु' हो काज।
मघ छूटे मोर बिदलो गिरे छे
इतरो हठ क्यूं आज ॥ २

राग – कालिंगड़ी
ताल – धीमी तिताली

आवो सखि देखो तमासो आय
रंग रमै छे म्हारो मारूड़ो भंवर उबैरो।

भ्रमर। मूर्छ। से।

हरै हरै जाळया मे झाखौ
अलबेल्या दीजौ नैं[1] जताय ॥ १
पिया पट खेंचै छुडावै मारवौ
ऊपरलौ हठ मन की चाय
कर की उळझण झझकण तन की
कमर की लचक 'र मुख की हाय ॥ २

राग – कालिंगडो
ताल – धीमौ तितालौ

कोई बतळावौ रे राजकवार
कित गयौ पारौ[2] मेरौ नेहडौ लगाय कर ।
कुज कुज वन वन सब हेरचा
और जमना हू म्है कोनौ विहार[3] ॥ १
आय रहो पिछली रजनी और
मिटिय चन्द्र चादनी को वहार ।
आतुर भई गुजरी गोकुळ की
आय मिळै अब प्रान आधार ॥ २

राग – कालिंगडो
ताल – धीमौ तितालौ

खेवटिया पार लघाय रै
मेरै वैडै नू गहरी नदिया सै ।
औघट घाट पवन बहु वाजै
तामै ज्यान बचाय लै ॥ १

राग – कालिंगडो
ताल – धीमौ तितालौ

चमकण लाग्या चगा नैण
दारूडी रा छाक्या ।

---

[1]न । [2]प्यारो ग । [3]वहार ग ।

हीर निर्माणी दे इमकदा इलाही
हिक साहिब रखवाला ॥ १

राग – कामिगड़ो
ताल – दीपचंदी

भावे मा मोरे राज दुलारो ।
नई नई भंव मजरियां पै भवरू'
ज्यूं गोरी गोरी वहियां मरोरे ॥ १
समीर भयो वेलरियां परस
सुक ज्यूं मधर केसू कुच फल तोरे ।
वसत भयो बनराय लूंटत' है
नंद कौम गठ भाख जोरे ॥ २

राग – कालिंगड़ो
ताल – दीपचंदी

स्याम म्हारी सौगन मानोजी राज ।
मत खोलो गूंघट म्हारा सु
लोभो भाव लाज ॥ १
मब तो छो म्हे भापरा सायबा
म्हारो मापसु' ही काज ।
नथ सूटे मौर बिवमो गिरै छै
इतरो हठ म्यूं माज ॥ २

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तिताली

पाबो सखि देखो तमामो थाय
रंग रमै छै म्हारो माकडो भंवर उवेरी ।

भवर । पूछत । पूर्ई ।

राग – कालिंगडो
ताल – धीमो तितालो

गूजरिया इतनो[1] गुमान
जोबना ए भया न किसूका।
नैंन पियाला पिला सावरै नू
लूटै न जितनी[2] तान ॥ १

राग – कालिंगडो
ताल – धीमो तितालो

रजनिया वैरन भई उवैसी जमनां तीर।
कौल भयों उस वेदरदी कौ
द्रुपदी[3] वारौ चीर ॥ १

राग – कालिंगडो
ताल – धीमो तितालो

रतिया कैसे वीतेंगी[4]
नहिं ग्रायो प्यारौ जियन दुहेलौ।
क्यू कर या सुकमार लाडलो
जोवन वैरी जीतेंगी ॥ १

राग – कालिंगडो
ताल – धीमो तितालो

चमकै बूदा भमकै वाला
ग्रौर बुलाक मोती लटकन वाला
जुगनुदा हीरा गोरा मुखडा सोवै[5] वाला ना जो ॥
बतियू से करती है मन मतवाला
नैंनू सै पिलाती ग्रमीदा पियाला तैंनू
रसीलाराज पिय साई रखवाला तेरा ॥ १

---

[1]इतनों। [2]जैती। [3]द्रोपदी। [4]वीतगी। [5]सोहै।

अब सौ अब तौ नई प्रीत अरघा
भरसो[1] मांझल रैण ॥ १
हसण बोलण रमण रगरतियां
उव रगभीना मीठा वैण ।
रसराज उवा ससिवदनि सुंदर
स्यांम सलूना बे सैण ॥ २

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तितालो

मारा[1] मदवा मारू आया बे
काई रण रा ऊनींदा म्हारे मना[2] ।
काई नें[3] करां मनवार सहेली
अलबेलो छिब छाया बे[4] ॥ १

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तितालो

म्हारा मदवा मारू आया बे
रैण रा उनींदा म्हारै महैलां ।
संग साईंना रै सिकारां रमता
धम धन करता सैंसां[1] ॥ १

राग – कालिंगड़ो
ताल – धीमी तितालो

गयो मनमोहन मोटी री
स्या गरसो तिरछी चितवन ।
रसराज स्यांम सलूंगो सूरत पर
उवार्‍ं गयो तन मन जोवन ॥ १

[1] म्हारी। [2] मना [3] थारा। [4] मैं नहीं। [5] थे। [6] सारा।

राग – कालिंगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

गूजरिया इतनौ[1] गुमान
जोबना ए भया न किसूका।
नैंन पियाला पिला सावरै नू
लूटै न जितनी[2] तांन ॥ १

राग – कालिंगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

रजनियां वैरन भई उवैसी जमनां तीर।
कौल भयौं उस वेदरदी कौ
द्रुपदी[3] वारौ चीर ॥ १

राग – कालिंगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

रतिया कैसे वीतेंगी[4]
नहिं आयौ प्यारौ जियन दुहेलौ।
क्यू कर या सुकमार लाडलौ
जोवन वैरी जीतैंगी ॥ १

राग – कालिंगडौ
ताल – धीमौ तितालौ

चमकै बूंदा झमकै वाला
और बुलाक मोती लटकन वाला
जुगनुदा हीरा गोरा मुखडा सोवें[5] वाला ना जी ॥
बतियू सै करती है मन मतवाला
नैंनू सै पिलाती अमीदा पियाला तैंनू
रसीलाराज पिय साई रखवाला तेरा ॥ १

---

[1]इतनौं। [2]जैती। [3]द्रोपदी। [4]वीतगी। [5]सोहै।

राग – कालिंगड़ौ
ताल – होरी री

घपाबाड़ी चालौ नै, सेलण घगा मारूड़ाजी।
झाई झाई सांवण तीज
मुरैना[1] बोल्या गैरा डूंगरां जी ॥ १
बीजळिया रा छै सिळाव
सैंघनण भंवर हुवै रह्यौ जी ॥ २
झींणी पड़ै छै बूंद
भींज छै साळूड़ा तीजण्यां रा जी ॥ ३
मूली राजकवार
कै मूमादे लाडली जी ॥ ४
हाथ सुराही भाडली रै
पिया र प्यालै दारूड़ौ जी ॥ ५
मिलसै छ बरसात
क रातूं मैला रग रमैजी ॥ ६

राग – कालेरौ
ताल – धीमी तिताली

मुरलिया[3] की धुन में जियरौ जाय
सजनी रयौ छै उळझाय।
रसराज सुन मैं दिवानी भई हूं
गळियां[4] रही घुन सुन मै ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तिताली

जोरा जोरी स्याईस[5] घूंमघुमाळै लहंगावाळी[6] मूं।
मया रूप लचपै कमर सेरसी
मैंडो कीतो चित चोरी मां ॥ १

---

[1]मोरैमा। [2]ठेना। [3]मुरलिया। [4]गलियां। [5]स्यामम। [6]लहेंगावाली मू। [7]मैडो।

राग – कालेरौ
ताल – धीमौ तितालौ

साडे नाल करदा राभेटा
जोरा जोरियाणी ।
नेह किया सब आलम करदा
नही कितीया कोई चोरियाणी ॥ १

राग – केदारौ
ताल – धीमौ तितालौ

हो बनाजी थारी आखडल्या रग लाग्यौ[1] ।
रग लाग्यौ छै चूडै चूनणी[2]
ज्यू रग सेजडल्या ॥ १

राग – केदारौ
ताल – धीमौ तितालौ

फगवा व्रज खेलन[3] कौं चल री
भगवा मे आयौ कान्ह कवर यौ बोले कगवो ।
आई वसत फूली फुलवारी
पियरी सुरख केसरिया क्यारी
रसीलाराज मनसिज मितवा कौं ले अगवा ॥

राग – केदारौ
ताल – जलद तितालौ

वेलरिया फूली री ननदी
उद्यान सघन वन उपवन वागन वेलरिया ।
द्रूम द्रुम[4] लपट रही हरि-हरिया
नई नई रूप रग रस-भरिया
रसीलाराज मोहि सग ले, स्याम गये तहां वन ॥ १

---

[1]लागौ । [2]चूनडी ख ग । [3]खेल । [4]'द्रुम' नहीं ग ।

राग – कालिंगड़ी
ताल – होरी री

चंपावाडी चालो नै, खेलण भगा भारूहाथी।
भाई भाई सांवण तीज
मुरैला[1] बोल्या गैरा डूगरां जी ॥ १
कोयळियां रा छै सिळाय
सैंघनण भयर हुवै रह्यो जी ॥ २
झींणो पड़ छ बूंद
भींज छै साळूडा तीजण्यां रा जी ॥ ३
झूलै राजकवार
के झूलाद लाडली जी ॥ ४
हाथ सुराही लाडली रे
पिया रे प्यास दारूडो जी ॥ ५
बिलसै छ बरसात
क रातू मैला रग रमैंजी ॥ ६

राग – कामेरी
ताल – धीमो तितालो

मुरमिया की धुन में जियरो जाय
सजनी रमौ छै उळझाय।
रसराज सुन मैं दिवानी भई हु
कळियां रही धुन धुन में ॥ १

राग – कामेरी
ताल – कहद तितालो

गोरा गोरी ल्याईस[5] घूमघूमाळै सहुगावाळी[6] नूं।
कया खूब लचकै कमर सेरसी
मैंहो कीतो चित गोरी मां ॥ १

मोहैना। म्हेला। मुरमिया। कळियां। [5]ल्यायस। [6]लहैगावाळी नू। मैंडी।

वैणा रा रसीला रैणां रा सवादी
रसराज सैणा रा सगाती प्राण सू प्यारा म्हारा ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – इकौ

बालपणै रा बिछड्या साजन
अब तौ थे घर आजौ सायबा।
थां बिन क्यू ही सुहावै काज न
रसराज नेहडौ लगाता थानै आई जी लाज न ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

आयो माझल रात, गोरी रौ सिखलायौ।
रग रमाता हस खेलाता
होण देता परभात ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[1] भूल्यौ नाही जावै
थारी[2] नई नई रमजा कर तू।
मान करै चाहत दिखलावै औ
रस की बतिया सुनावै।
कुण मुसताक न[3] हुवै रिझवारण
जिण दिस निजर लगावै[4] ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[5] मानै नांही वात।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा

---

[1]गुमानीडा रे। [2]हारे थारी। [3]मुस्ताकन। [4]लगावै रे। [5]गुमानीडा रे।

राग – केदारी

ताल – धीमी तिताला

चंदावदनी　चतुर　चटकीली
नवल बनी सोहत सांवर की सेज पर ।
सीस फूल नथ कठसरी और
तिलक हीरन[1] की मुक्तासर ॥ १
करणफूल नौसर सर बैनी
कंकन बाजूबंध किंकन नूंपर ।
रसराज बिजली प्रकास की मानूं
उतरी है भू पर आकर ॥ २

राग – केदारी

ताल – धीमी तिताली

बाजन लागे आज मनमोहनी
मधुर धुन नूंपर बिछिया किंकनी ।
चमकन लागे चीर जरी के
सीसफूल नथ सोहनी ॥ १
लपट भलन लागी[2] सौंधे अतर की
होने लगी मुख मधुर रागनी ।
रसराज सांवरे की सेज कूं राधे
आवन लगी है नवल बनी ॥ २

राग – कामेरी

ताल – इकी

छैलड़ा पीव गुमानीड़ा
थगा नैंणां रा कामणगारा जी ।

---

[1] हीरन । [2] लगी । [3] जी ।

वैणा रा रसीला रैणां रा सवादी
रसराज सैणा रा सगाती प्राण सू प्यारा म्हांरा ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – इकौ

बालपणै रा बिछड्या साजन
अब तौ थे घर आजौ सोयबा।
था बिन क्यू ही सुहावै काज न
रसराज नेहडौ लगाता थानै आई जी लाज न ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

आयो माझल रात, गोरी रौ सिखलायौ।
रग रमाता हस खेलाता
होण देता परभात ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[1] भूल्यौ नाही जावै
थांरी[2] नई नई रमजा कर तू।
मान करै चाहत दिखलावै औ
रस की बतिया सुनावै।
कुण मुसताक न[3] हुवै रिझवारण
जिण दिस निजर लगावै[4] ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

गुमानीडा[5] मानै नांही बात।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा

---

[1]गुमानीडा रे। [2]हारे थारी। [3]मुस्ताकन। [4]लगावै रे। [5]गुमानीडा रे।

राग – केदारी
ताल – धीमो तिताला

चदावदनी चतुर चटकीली
नवल बनी सोहत सांवरे की सेज पर।
सीस फूल नथ कठसरी और
तिलक हीरन[1] कों मुक्तालर ॥ १
करणफूल नौसर सर वैनी
ककन बाजूबंध किंकन नूंपर।
रसराज विजली प्रकास की मानूं
उतरी है भू पर आकर ॥ २

राग – केदारी
ताल – धीमो तितालो

गावन लागे आज मनमोहनी
मधुर धुन नूंपर बिछिया किंकनी।
चमकन लागें चीर जरी के
सीसफूल नथ सोहनी ॥ १
लपट चलन लागी[2] सौंधे अतर की
होने लगी मुख मधुर रागनी।
रसराज सांवरे की सेज कूं राधे
आवन लगी है नवल बनी ॥ २

राग – कालेरी
ताल – इकी

छलड़ा पीव[3] गुमानीड़ा
थगा नैणां रा कामणगारा जी।

---

[1]हीरन। [2]लगी। [3]पी।

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

पायल साळीजी री किण झणकाई रे।
ऊची ले ले दोय हाथां में
चोखी तरह बणाई।
इण गई वोल घडी नहि दिन का
आधी रात नैं[1] बजाई रे॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

माणी रे माणी रे माणी रे मजलस माणी रे।
इण आलम बिच आय अनोखी
रसीलाराज[2] इक जलैगहाणी रे॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

लेता जाज्योजी राज
हो बाडी रा भवरा नई कळिया री सुवास।
यौ जोबन दिन च्यार रौ रे
काल काई छै काई आज।
रसराज आरतबदी राधा नैं
आय मिळै ब्रजराज॥ १

राग – कालेरौ
ताल – जलद तितालौ

साळूडै रौ मिजाज देख्यौ चाजै[3] रे विदेसीडा।
साळूडै रै गूघटडै इण
वस कियौ छै ब्रजराज॥ १

---

[1] 'नै' नही। [2] रसीला रसीलाराज। [3] चाहजै।

दिन रा रूस तो रात।
बाहर महीनां सरीसो ब्याली
कोठें घालू हाथ[1] ॥ १

राग – कालेरो
ताल – चलत तितालो

जारे बाला उवाही ठौर मिजाजीड़ा।
बाबी लाग रही मौसर री
पंखा डुळ छै चहु ओर ॥ १

राग – कालेरो
ताल – चलत तितालो

तारां छाई रात मिजाजीडा।
फूलां छाई म्हांरी धण री सेजड़ली
मोतीड़ां छायो अैवास ॥ १

राग – कालेरो
ताल – चलत तितालो

नैणां लाग्या मैण नावणियां[2]
ए तो[3] जोबनों छाक्या सुं छाक्या
ए तो[4] रंगमहल री रैण।
मोहन राधा रा सतो री
थणां सूं मिळ मैण।
मधू छूट रसराज कहो मैं
थणां सूं मिळ सैण ॥ १

हाथ। [2]मारवाणी हो। [3]म्हारे धनी। [4]जोबन रूप। [5]यै।

राग – कालेरौ
ताल – होरी रौ

घरा नै पधारौ विदेसीडा
छोटी सी नाजक धण रा पीव।
यौ सावणियौ उमड रह्यौ छै
हरि[1] नै सोहै छै दिस दिस सीव।
इण समै कितनौयक होसी
लाडीजी रौ थामे जीव ॥ १

राग – कालेरौ
ताल – होरी रौ

प्यारौ नही मानैं म्हारौ बात।
सुणौ हे सहेल्या नणद पियारी।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा
दिन रा रूसै तौ रात।
बाहरै महीना सरीसौ ख्याली
कोठै घालू हाथ[2] ॥ १

राग –कालेरौ
ताल – होरी रौ

मारूजी[3] चगी मारवणी घर ल्याया हो।
चगा राज लगन वी चगा
*चगी नणद बधाया ॥ १
चगा पीहर चगा सासरिया*
सब सजना मन भाया।
अब तौ बधौ रसराज सावळडा
सुख और नेह सवाया । २

---

[1]हरी। [2]हात। राग–कालेरौ ताल–जलद तितालौ मे 'गुमानीडा मानै नाही बात' गीत की और इस गीत की आकडी मे अतर है, बाकी चरण समान है। [3]हो मारूजी।
*चिन्हित दोनो चरण नही। *सासरिया चगा ग ।

राग – कामेरी

ताल – धीमी तितालो

मारूड़ा सूं मिलण बोलण री
कौने बात बाईजी।
म्हांने सुणण रौ चाव लाग्यौ छै
किण रंग बीती रात ॥ १

राग – कामेरी

ताल – धीमी तितालो

मारूड़ा सूं मिलण भेटण रो लाग्यौ चाव भारी।
जिस विध हुवे रसराज बेग दे
सो[1] ही करौ ने उपाव ॥ १

राग – कामेरी

ताल – जलद तितालो

मिजाजीड़ा मीरा बोलोजी राज[2]
म्हें तो थांसू अरज करां छां।
आस पास री अटारयां छैं मेरो[3]
ओछड़ झण झण बाजै।
लचके कमर पिलंग टूटे छै
ग्वाड़ी में लाज मरां छां जी ॥ १

राग – कामेरी

ताल – धीमी तितालो

बिसर गया मारूड़ा मेहलो ल्याय
नैणां रा तीर चलाय।
रसराज सांवरा सैण सेजरियां में
नई नई रमण बताय ॥ १

---

[1] होई। [2] राज मिजाजीडा। [3] मैडी।

राग – कालेरी

ताल – होरी रौ

घरा नै पधारौ विदेसीडा
छोटी सी नाजक धण रा पीव।
यौ सावणियौ उमड रचौ छै
हरि[1] नै सोहै छै दिस दिस सीव।
इण समै कितनौयक होसी
लाडीजी रौ थामें जीव ॥ १

राग – कालेरी
ताल – होरी रौ

प्यारौ नही मानै म्हारी बात।
सुणौ हे सहेल्या नणद पियारी।
रात रूसै तौ दिन रा मनावा
दिन रा रूसै तौ रात।
बाहरै महीना सरीसौ ख्याली
कोठै घालू हाथ[2] ॥ १

राग –कालेरी
ताल – होरी रौ

मारूजी[3] चगी मारवणी घर ल्याया हो।
चगा राज लगन वी चगा
*चगी नणद बधाया ॥ १
चगा पीहर चगा सासरिया*
सब सजना मन भाया।
अब तौ बधौ रसराज सावळडा
सुख और नेह सवाया । २

---

[1]हरी। [2]हात। राग–कालेरौ ताल–जलद तितालो मे 'गुमानीडा मानै नाही वात' गीत की और इस गीत की आकडी मे अतर है, वाकी चरण समान हैं। [3]हो मारूजी।
*चिन्हित दोनो चरण नही। *सासरिया चगा ग।

राग – कामेरी
ताल – बसंत तिताली

सहेल्यां म्हारी सांवळडो सज आयो[1] ।
बरसे रूप कमळ मुख के पर
मोर सेहरे रंग छायो ॥ १

कैरवा रा ख्याल

फगवा मैं रमण याके साथ
हांरे मैं तो नहिं आऊ मा ।
निठुर लगरवा बेसक खेलै
पंचू मैं पकर हाथ[2] ॥ १

कैरवा रा ख्याल

तुम सैं लगाया मैंनें[3] नेह
अलबेले मीरां ।
नेह लगाया दिलज दिल उळझाया
हो रही देह वदेह ॥ १

कैरवा रा ख्याल

तेरी साथ मैं चलां
सुण मुरली वाले ।
थांको मी पगियां रुळती सरहोयां
करदानो संगी गलां ॥ १

कैरवा रा ख्याल

सयोगी मनाय सूंगी वालमा
मेरा फजसा

---

[1] आयो है। [2] हाथ स न। [3] मैंनू। [4] दिलज लगाया नहीं।

वालमा रूसा तौ की हुवा
मेरा रूसै दिलदार ॥ १

राग – कानरौ
ताल – जलद तितालौ

नई कलियन कौ रस[1] ले गयौ रे
वेल वेल पर डोल भवरू तू[2] ।
रसीलाराज उनमत भयौ वन मे
वहौ नायक काकौं मितवा भयौ ॥ १

राग – कानरौ
ताल – गाठ चौतालौ

हरे द्रुम वेलन मे हर राधा ।
विहरत है गल-बाहिन दोऊ
कुजन कुज खरे ॥ १
विहरत विहरत ही जमुना तट
केल की कुज मे पैर धरे ।
आयौ मदन मारुत कौ झोला
अछ वेली ज्यू गिर परे ॥ २

राग – कानरा री माझ
ताल – जलद तितालौ

या तौ धण माणौ रे वालम राज ।
जाणौ तौ जाणौ गोकुळ रा सावळडा
रसराज अेती न ताणौ रे ॥ १

राग – कानरा री माझ
ताल–जलद तितालौ

बना बन आयौ मा, चौसर ढुळती ।

---

[1] तू रस । [2] नई ।

रसराज कर रयो भाव नगर सब
मोलीडा माळ[1] रूळती ॥ १

राग – कानरा री मांझ
ताल – जलद तितालो

सांवरे सनेही सु मैं खेलूंगी फाग ।
रसराज आयो फागन मन भायो
इन ही दिनू में लगी[2] लाग ॥ १

राग – कानरा री मांझ
ताल – जलद तितालो

बना मैंनूं मोही[3] वे मणां दी रेस ।
म्हारो कळस उतराय विदेसी
सकीय तो पनघट वेस ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालो

अजी म्हांसु बोलोजो सांवरा सजन क्यूं थे रूठा ।
सारी रैण[4] संग भौरा रे बिहावो
घड़ीय तो म्हारा वी हामो जो ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालो

अजी रगमीना थारा रंग भर म्हारा डेरासुं डेरा नेड़ा ।
पूषन बठी बीच चौक रे
झूलो बंधाय देस लीजो जी ॥ १

---

[1]माला । [2]लागी । [3]मांही । [4]उतरायो । [5]रतन ।

राग – खमायची

ताल – जलद तितालौ

झालौ[1] दे बुलावै हो अलबेली रा सायवा
ऊभी ऊभी अगानैणी थानै।
झालौ देती धण लाज मरै छै
थारी[2] सूरतडी दिरावै हो।। १

राग खमायची

ताल – जलद तितालौ

नजर नचाय रही गुजरेटी।
रसराज नदनदन बस कियौ उन
कौन सरवस की बघोटी।। १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालौ

पना मारू घणा नै घरा रा मिजमान
अजी काई[3] सावळडा नादान।
रात अनंत प्रात म्हारै आया
तन पर केई सैनाण।। १

राग – खमायची

ताल –जलद तितालौ

मतवाळौ यौ मोती वेसर रौ।
राधा रै मुख रसराज मोहन पर
रग बरसै मानू केसर रौ।। १

राग – खमायची

ताल –जलद तितालौ

माझल रात बना थे प्यारा लागौजी।
या धण चगी सेज मन भाई
आज तौ याहि[4] कै सग जागौजी।। १

---

[1] झाला। [2] 'थारी' नही। [3] होजी। यह गीत ग प्रति मे पृ ३० और ३१ पर दो बार आया है। [4] याही ख ग।

राग – खमायची

ताल – जलद तिताली

मारू मेलां आयो है मोमल राव
भजी कांई लटपटिया पेच रो।
अलबेलिया नैणां रो मदमातो
रंग रातो संग साथ ॥ १

राग – खमायची

ताल – जलद तिताली

हो[1] भवरा म्हांरी बाडी रो ऊजाड़ कियो।
चगा अब बिब फळ लूटया[2]
और मकरद पियो ॥ २
अमर विसुमी अनारां लूंटी
केळां पेर दियो।
रसराज सब केसर क्यारी रो
लूट लूट रस लियो। १

राग – खमायची

ताल – जलद तिताली

मांम मेळ री

धीरा बोलोजी राज मिजाजीडा।
पायल म्हारी बाजणी रे
झमक बिछावेली साज ॥ १

राग – खमायची

ताल – दीपचद

मारूड़ो घर आयो है मा
घणा न दिना सूं आयो वारूड़ी री।
आंगण मोत्यां चोक पुरावां
पलां में बिछावां म्हारा[4] साळूड़े रा[5] ॥ १

---

[1]'हो' नहीं। [2]लुटया न। राग खमायची, ताल धीमी तिताली में भी यह गीत गाया है।
उसमें। म्हारा। [5]री।

राग – खमायची
ताल – दीपचदी

सावरौ मोहि भूल गयौ री
नैन लगाय वेदरदी भयौ री।
इन वेकजाक कू दिल दे कै सजनी
मै तौ जानू थी मोल लीयौ री॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

अलबेलियौ प्यारौ लागै है[1] सय्या सेजडली नई मै।
होती साझ घर आवै मद-छाक्यौ
म्हारै कारण रैण जागै कमधजिया[2]॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

कमधजिया लैरा चाला[3] लो
मोही मोही वाकडी[4] तरै सु।
आय खडौ छै तुरी घर आगण
लूबा भूमा दावण भाला॥ १
दूर देस री कठण चाकरी
चरण बदी होय पाला।
लाख बात नही जावण देस्या
कोई सौगन दे घाला[5]॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

चमकै छै भूहा बिच गोरिया ए जरी रौ तारौ।[6]
रसराज तिलक हीरा रौ चमकै
हार चमकै छै[7] नौसरी रौ प्यारौ॥ १

---

[1]छै। [2]कमधजियौ। [3]चालौ ख ग। [4]वाकडली। [5]गाला ग। [6]'जरी रौ तारौ' आदि मे। [7]'हार चमकै छै' नही।

राग – खमायच[1]

ताल – धीमो तितालो

धोरां मोलोजी राज मिजाजीड़ा।
पायल म्हारी बाजणी रे
झमक बिछावेली लाज ॥ १

राग – खमायच

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी नें मोती सूरत रा
ल्या दीजो जी राज।
कामळ काळ कोट रो झींणी
मैंदी[2] नारनौळ की[3] आज ॥ १
आगरे रो लहंगा चंगा नें रंग रो
साळू सांगानेर[4] रो सिरताज।
बिंदली में कुंकू जोधाणें रो
रसीला बालम रसराज ॥ २

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी रे झळके[1] बांक पड़ी।
रसराज चळक रया मोती अणबेंधा
सेणां रै दिल नू लग जाता बीछू रा डोंक ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

मल्हार आज आई छ जी धना राजद्वार।

मांभरा पेहरा राग। यह गीत म प्रति मे राग खमायची ताल धीमो तितालो में भी है और राग खमायची आम मेहरो मे भी है। मेंधी। गरी। सांगानेरी राग।

एक बहार जिसा ही दूजा
लाडी ऊभा छै जी बार ॥ १
मदन सरूप राज अलबेला
लाडीजी रूप बहार ।
मिंत मिल्या इकसार सरीसा
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

मोहन बिछड्या नु सुण म्हारी हे सहेली
के दिन रतियां के बीती ।
कठण हियौ निसर्‌यौ जिय नाही
वार वार उवा पर जळ पीती ॥ १
पहली रात चौसर म्हे खेल्या
मोहन हार्‌या मैं जीती
चलता प्रात पाळ सरवर री
सामै आ खडी ले गगरीया[1] रीती ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमौ तितालौ

बालम मिलण नै परदेस चलण री
करौ[2] नै तयारी म्हारी आल
घडीयक मुखडौ दिखाय नवेलौ
बिछर[3] गयौ जांणे देकर ताळी ॥ १
मन रौ उदास वेसास न जिय रौ
खान पान सुख नही उण घाली ।
कद मिळसी रसराज सावळडौ
वनमाळी गोकुळ रौ ग्वाळी ॥ २

---

[1]गगरिया । [2]करां ग । [3]विरछ ग ।

राग – खमायच [1]

ताल – धीमो तितालो

धीरां बोलौजी राज मिजाजीड़ा ।
पायल म्हारी बाजणी रे
झमक बिछावली लाज ॥ १

राग – खमायच

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी नैं मोती सूरत रा
ल्या दीजौ जी राज ।
काजळ काळै कोट री झींणी
मैंदी नारनोळ की[2] आज ॥ १
आगरै रौ लहंगा चगा न रंग रौ
साळू सांगानेर[3] रौ सिरताज ।
बिंदली नैं कूकूं जोधांणै रौ
रसीला बालम रसराज ॥ २

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

नथड़ी रे मळकै[4] बांक पड़ी ।
रसराज उळझ रया मोती अलबेला
सैणां रै दिल नू लग आता धीछू रा डांक ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

बहार आज आई छ जी पना राजकवार ।

---

[1] झाम्मरा मेळरा रा ग । यह गीत एक प्रति में राग खमायची ताल धीमो तितालो में भी है और राग खमायची झाम्म मेळरी में भी है। [2] मेंधी। [3] री। [4] सांगानेरी छपा ।

एक वहार जिसा ही दूजा
लाडी ऊभा छै जी वार ॥ १
मदन सरूप राज अलवेला
लाडीजी रूप वहार ।
मित मिल्या इकसार सरीसा
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमो तितालो

मोहन बिछड्या नु सुण म्हारी हे सहेली
के दिन रतिया के वीती ।
कठण हियो निसर्यो जिय नाही
वार वार उवा पर जळ पीती ॥ १
पहली रात चौसर म्हे खेल्या
मोहन हार्या मैं जीती
चलता प्रात पाळ सरवर री
सामै आ खडी ले गगरीया[1] रीती ॥ २

राग – खमायची
ताल – धीमो तितालो

बालम मिलण नै परदेस चलण री
करी[2] नै तयारी म्हारी आल
घडीयक मुखडो दिखाय नवेलो
बिछर[3] गयो जाणे देकर ताळी ॥ १
मन रो उदास वेसास न जिय रो
खान पान सुख नही उण घाली ।
कद मिळसी रसराज सावळडो
बनमाळी गोकुळ रो ग्वाळी ॥ २

---

[1]गगरिया । [2]करा ग । [3]विरछ ग ।

राग – खमायची

ताल – धीमी तितालो

हो मलवेलिया नैंणां मोहीजी मोही माहाराज मे ।
रसराज सालुड़ रा पलूड़ा जुरंता
साढलो रा दिल ले लिया ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमी तितालो

हो म्हारा मीठा मारू वालो नें मारवी बुलाव छै ।
रसराज घणा न दिनां सूं घर आया
उमग गळ लपटावै ॥ १

राग – खमायची

ताल – होरी री

साजण बनरा जी भवर म्हारा पनाजी
रग भरी बनरी नै ब्याह चल्या ले
सुख दीज्यौ रज्यौ प्रेममना ॥ १

राग – खमायची

तिवड़ी रै भेळरा

मुखड़ा सोह रह्या महताब मे ।
रसराज भाफताफ जरी जेवर चमके
दो नैंण गुलाब वे ॥ १

राग – खमायच

तिवड़ी रै भेळरा

सुख सरस रह्यो सारी रैण
रसराज दुलह मु देख रह्या मे
बिन गूंघट दोय नैण ॥ १

धीको ख ग ।

राग – खमायची
ताल – दीपचदी

सय्या[१] ग्रैसे फगवा मे खेलन *जईयै वसीवट कू
जहा[२] फूले हैं जाय जूही गुल खैरु गुल लाला नए
गुलतुर राज जहा[३] गुल सुरख रमैं ग्रलि बोलै[४] त्यू डोलै
मोरा मिल विहार व्रजपत[५] सदेसो।
गावै[६] नवेली नवेली व्रज त्रिया
सोहनी तैसैं नाचतु है[७] विरवा मे
तस उडै ग्रबीरु चदन कुमकुमा नीर केसर को
वजत मदलरा[८] मा
रीझत स्याम रसराज समाज बन्यौ
जिह देखत मुनिजन मोहै
*सोहै सुहावैं सुरपुरी कौ[९] सुख जैसैं ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालो

गुजरेटी दी निजर[१०] ग्रलवेलडी।
ग्रणीयारो[११] कामणगारो कटारो
ग्रौर समसेर क सेलडी[१२] ॥ १
परस केतकी री कळिय गुलाब री
चपक लता कै चवेलडी[१३]।
खसबोहित मन कियौ सावरै रौ
मोहनो मोहन वेलडी ॥ २

राग – खमायची
ताल – जलद तितालो, माझ-भेळरो

दाग लगा गया यार महीडा।
कौंन हुता ग्रौर ग्राया कहा सै

---

[१]सईयां। *जाइयै ग। [२-३]जिहा। [४]'बोलै' नही। [५]व्रिजपत। [६]गावै गावैं ख ग। [७]रहैं। [८]मदिलरा। *'सोहे' ग नही। [९]कै। [१०]नजर। [११]ग्रणियारो ख। [१२]सेरडी ख। [१३]वेलडी ग।

राग – खमायची

ढाल – धीमी तिताली

हो मलवेलिया नैंणा माहीजी मोही माह्राराज वे ।
रसराज सालुड़ रा पलूड़ा जुरता
लाडली रा दिल ले लिया ।। १

राग – खमायची

ढाल – धीमी तिताली

हो म्हारा मीठा मारू चालो नैं मारवी बुलाव छै ।
रसराज घणा म दिना सूं घर आया
उमंग गळ लपटावै ।। १

राग – खमायची

ढाल – होरी री

सावण बनरा जी भंवर म्हारा पनाजी
रंग भरी बनरी न ब्याह चल्या ले
सुख दीज्यो' रज्यौ प्रेमनना ।। १

राग – खमायची

तिवड़ी रै भेळा

मुखड़ा सोह रह्या महताब वे ।
रसराज भाफताफ जरी जेवर चमक
दो मैंण गुलाब वे ।। १

राग – खमायच

तिवड़ी रै भेळा

सुख बरस रह्यो सारी रैण
रसराज मुखह नू देख रह्या वे
बिच गूंघट चोय नैण ।। १

दीजो व प ।

राग – खमायची

ताल[1] – धीमो तितालो

मिल जाईयो वे महीवाले मिया।
तेरी लगन दिल नू नहि भूलै
पीते नी इस्क पियाले मिया ॥ १[2]

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

रमकै वाला राझणा दिल विच
रैंदो तेरी याद मिया जम कै।
रसराज सारीगम[3] ख्याल तराना दे
सब कै ऊपर टपैंदी ताना चमकै झमकै[4] ॥ १

राग – खमायची

ताल[5] – धीमो तितालो

रममा दे नाल मोही वे,
नंग सयालै दी हो परी हीर निमाणी।
रसराज क्या क्या कीता विच गमजा[6] ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

राझैनु मिलाय देणी[7] एरी मेरी स्याणी तू सहेलडी।
सुकर-गुजार तिहारो मैं होदी
हीरा दी ज्यान वचाय लैं ॥ १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालो, माझ-भेळरो

मानू ले चल नाल वे नादाणीया।

---

[1]'ग' प्रवि मे ताल का नाम नही। [2]आदर्श प्रति में नही। [3]सरीगम ख। [4]'झमकै' नही ग। [5]ग प्रति मे ताल का नाम नही। [6]यह आदर्श प्रति मे नही। [7]दे ग.।

रसीला राम तेरी गम नां परी ।
महोहा वे मानू घायल की
नैंण निजार दी सांग चला ।
सांग असम दा दारू दुनी में*
नैंण निजारे सें कायल की ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली

मिल के नादांणा मैनूं विसर गया वे ।
क्या जाणां[1] किस विध मन ल्याया
[2] तो उवो हो गया घिगाणा भो नया ॥ १

राग – खमायची
ताल – जलद तिताली

लगी पिया वे दो नैंणा दी रमजां ।
उन रमजां दे नाल मोही गई सांवरा
रसराज नहीं भावणा विच कदआं गमजां ॥ १

राग – खमायची
ताल[3] – धीमी तिताली

छलके एदा की गरूर वे
नैंण निजारे हो नही मिल दे ।
रसराज आंणे दी मैं माल किसूंदी
जुलफ जाल विच गये पकड़ ॥ १

राग – खमायची
ताल – धीमी तिताली

प्यारे आज मैंनू बाधद हो सिरदा जूड़ा ।
ऊंचा नी होंदा कर दुख दा बंदी दा
पहरानी छांवल चूड़ा ॥ १

दूसरा तीसरा चरण प प्रति में नहीं । [1]'जाणं' । [2]लाया । [3]'म' प्रति मे ताल का नाम नही । यह आदर्श प्रति में नहीं है ।

राग – खमायची

ताल[१] – धीमो तितालो

मिल जाईयो वे महीवाले मिया ।
तेरी लगन दिल नू नहिं भूलै
पीते नी इस्क पियाले मिया ।। १[२]

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

रमकै वाला राझणा दिल विच
रैंदी तेरी याद मिया जम कै ।
रसराज सारीगम[३] ख्याल तराना दे
सब कै ऊपर टपैदी ताना चमकै झमकै[४] ।। १

राग – खमायची

ताल[५] – धीमो तितालो

रममा दे नाल मोही वे,
जग सयालै दी हो परी हीर निमाणी ।
रसराज क्या क्या कीता विच गमजा[६] ।। १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

राझैनु मिलाय देणी[७] एरी मेरी स्याणी तू सहेलडी ।
सुकर-गुजार तिहारो मै होदी
हीरा दी ज्यान वचाय लैं ।। १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालो, माझ-झेळरो

मानू ले चल नाल वे नादाणीया ।

---

[१] 'ग' प्रति मे ताल का नाम नही । [२] आदर्श प्रति में नही । [३] सरीगम ख । [४] 'झमकै' नहीं ग । [५] ग प्रति मे ताल का नाम नही । [६] यह आदर्श प्रति मे नही । [७] दे ग. ।

रसीला राज तेरी गम नां परी ।
महीड़ा वे मानु घायल की
नैण निजार दी सांग चला ।
सांग अलम दा वारूं दुनी मैं*
नैण निजारे सैं कायल की ।। १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालौ

मिल क नादांनां मैंनू विसर गया वे ।
क्या जाणां[1] किस विध मन ल्याया[2]
तौ उवौ हो गया बिगाणा क्यौ भया ।। १

राग – खमायची
ताल – जलद तितालौ

लगी पिया वे दो नैंणा दी रमजां ।
उन रमजां दे नाल मोही गई सांवरा
रसराज नहीं ग्रावणा बिच कबजा गमजां ।। १

राग – खमायची
ताल[3] – धीमी तितालौ

छलके एता को गरूर वे
नैंण निजारे हो नहीं मिल दे ।
रसराज जाणे दो मै नाल किसूंदी
जुलफ आल बिच गये पकड़ ।। १

राग – खमायची
ताल – धीमी तितालौ

प्यारे माज मैंनु बांधदे हो सिरदा जूड़ा ।
ऊंचा नी होंवा कर दुख दा वेदी दा
पहरानी सांवल चूड़ा ।। १

दूसरा तीसरा चरण ख प्रति में नहीं । [1]जाणा । [2]लाया । [3]ख प्रति में ताल का नाम नहीं । यह चरण ख प्रति में नहीं है ।

राग – खमायची

ताल[1] – धीमो तितालो

मिल जाईयौ वे महीवाले मिया।
तेरी लगन दिल नू नहिं भूलै
पीते नी इस्क पियाले मिया॥ १[2]

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

रमकै वाला राझणा दिल विच
रैंदी तेरी याद मिया जम कै।
रसराज सारीगम[3] ख्याल तराना दे
सब कै ऊपर टपैदी ताना चमकै झमकै[4]॥ १

राग – खमायची

ताल[5] – धीमो तितालो

रमा दे नाल मोही वे,
जग सयालै दी हो परी हीर निमाणी।
रसराज क्या क्या कीता विच गमजा[6]॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमो तितालो

राझैनु मिलाय देणी[7] एरी मेरी स्याणी तू सहेलडी।
सुकर-गुजार तिहारो मै होदी
हीरा दी ज्यान वचाय लैं॥ १

राग – खमायची

ताल – जलद तितालो, माझ-भेळरी

मानू ले चल नाल वे नादाणीया।

---

[1]'ग' प्रति मे ताल का नाम नही। [2]आदर्श प्रति में नही। [3]सरीगम ख। [4]'झमकै' नही ग। [5]ग प्रति मे ताल का नाम नही। [6]यह आदर्श प्रति मे नही। [7]दे ग.।

मुलक विगानां वारी लोक विगाना
रव दे हाथ समाल[1] ॥ १

राग – भैरवी मौड़ी
ताल – धीमो तितालो

भाभीजाओ हो बिसर गया
नेहड़ो नैणां री लाय[2] ।
रसराज म्हानै तो संदेसो बिनां ही
भौरां री साथे उळझ रह्या ॥ १

राग – भैरवी मौड़ी
ताल – धीमो तितालो

गरवा लाय पिछली रात कूं मिल्यौ कुंजन में
नटवर वेस किये अलबेलो
सौन चमेली के बिरवा में ॥ १

राग – भैरवी मौड़ी
ताल – धीमो तितालो

गळ लगणे दे मोहि हेरी स्याम सुंदर रंग रसिया के ।
लोक-लाज कुळ-कांण न जाण्यूं[3]
मकरसी ज्यूं त्यूं करके ॥ १

राग – भैरवी मौड़ी
ताल – धीमो तितालो

गोरड़ी वे जादू कर गई छोटो सी ऊमर मांई
रसराज गोरै मुख बिंदलो चमकं
बेसर वाळी गोरड़ी ॥ १

---

[1]समा ल । [2]लगाय । [3]जाणूं ।

राग – चैंती गौडी
ताल – होरी रौ

मारूडौ मिलण घर आयौ हे मारवणी
करौ नै तयारी उठ म्हारी राजवण थारै[1] ।
बिंदली दौ भाळ सवारौ अलबेलडी
अणीयाळा[2] नैणा अजन री अणी ।। १

राग – चैंती गौडी
ताल – होरी रौ

मोतियां चौक पुरासा म्हे गास्या[3]
सखि[4] सुहागण मिळ च्यार जणी ।
अलइया भवर रसराज पिया नै
देखण री म्हानै चाह घणी ।। १

राग – जगलौ
ताल – जलद तितालौ

ऊभा राज मिजाजीडा अमला मे
अमलां रा छाक्या सेजडली रै मारग
छक मतवाळी रा बुलाया थे ।। १

राग – जगलौ
ताल – जलद तितालौ

कद निसरैली या वैरण रात ।
कबजा में सु गयौ अब होसी
किसीय धिगाणी कै वौ साथ ।। १

राग – जगलौ
ताल – जलद तितालौ

रळ रही नैन मे नीद गुमानीडा ।

---

[1] थारौ । [2] अणियाळा । [3] गासा । [4] सखी ।

तार नस की मार मोसन की
क्या हूर सेता सांठा भीश ॥ १

राग – पंचमी
ताल – चलत तितालो

ल्याई मालण सेहरो हे सहेली
पनाजी रै सीस गुलाब रो।
रसीलाराज उण राजकंवर नैं
मौर वधावन सेहरो[1] ॥ १

राग – पंचमी
ताल – धीमी तितालो

पनूं म्हारो मुजरो लीजोजी।
रसराज मीठी निजरयां सु मिल्यो
हुमो कर का गजरा सुं ॥ १

राग – पंचमी
ताल – धीमी तितालो

म्हारे घर आया वे छोटी रा भवर पना।
घणा नैं दिनां सु म्हे अरज करां छां थे
थां बिन[3] निस दिन दुभर भरां छां
बिछड़या प्राण ज्युं[4] पाया मे ॥ १

राग – पंचमी
ताल – सवारी

सामना म्हानूं थांरी लारै से जावोसा थों[5]।
रसराज सग रैण दी मारजू
ऐस[6] सुहाग रो दिखावो मायो सायसा ॥ १

---

[1]वधावन सेहरो। [2]मूं थारी। [3]बिनू। [4]ज्यू। [5]जाव मायो। [6]ऐस।

राग – जगलौ

रेखता चाल मे

औरतू का नेहडा मुसकल[1] जोकू लाला रे सिपाई[2] ।
अवल तौ बाबल[3] का डर
पीछे गुन्हां बादस्याह का ।
जलता है आराम वदन का
फिर गिलारी सराह[4] का
इतना जोर रसराज है सिर
भिस्त तौ क्या था सिपाही ॥ १

राग – जगलौ

ताल – जलद तितालौ

रमक बताय गया सावरे नादाणिया ।
कबै मिलै रसराज सावळडा
सुपनै की नाई मानू[5] हो रया ॥ १

राग – जगलौ

ताल – जलद तितालौ

मोतीडा बुलाक दा, मोहीजा दा मोहना ।
रसराज मुरली की धुन मे ताना
मान तु[6] फैल कजाक दा ॥ १

राग – जगलौ

ताल – जलद तितालौ

छलकै[7] गया वे मैडी ज्यान, मिजाजीडा हो[8] ।
इक पल परिया[9] डेरै
रसीलाराज मिजमान ॥ १

---

[1]मुसक्लि । [2]सिपाही । [3]बाबुल । [4]तराह । [5]'मानू' नही । [6]त । [7]छलक । [8]'हो' नही । [9]परियाँ ।

राग – जंगली
ताल – धीमी तिताली

झूठी ना करो मीयां मैनूं ।
रसराज छूटी मूंठी गलां पराइयां
छांर दिल दी भरां दे नाल निजरां तेरो रूठो ॥ १

राग – जंगली
धीमी तिताली

निमांणा विसर गया मिल कें ।
मांणा नहीं तूं लेहाज आलम सें
रसराज निमाज लगाक दिल मिलकें ॥ १

राग – जंगली
ताल – धीमी तिताली

नन मिल तो मिलो परियू सें
दूर न हो प्यारे लाल जतन कर ।
आई बहार सिले गुल स्योणा[1]
वास चलो चन की हरियू स ॥ १

राग – जंगली
धीमी तिताली

मैन लगाता सो निभाता ।
उलझ गया रसराज जिनू दा दिल
नहीं करी मजिनूं दा[2] सुलझाता ॥ १

राग – जंगली
ताल – धीमी तिताली

मळका लगा नैणूं दा यार
मासूक दा आसकां दे दिल नूं ।
रसराज मा मिलसां मिल रहे मेरा स्यांणा
नहो सहतो विरहा सैणूं दा ॥ १

मनी है । नाग । [1]स्याणा व मुणस्याणा म । रहणा । [2]करी मजनूं दा ।

राग – जगली
ताल – धीमो तितालो

मास्यूका दा वे मिलना अजी दिल नू ।
रसराज अेहा सुख जेहा सरग दा वे
क्या जाणु क्या होगा सैयो कल नू ।। १

राग – जगलो
ताल – धीमो तितालो

मिलजा मिलजा वे रांझा
रसराज दिल भर सावळिया
गळ लगजा रहजा ।। १

राग – जगलो
ताल – धीमो तितालो

मोतीयू दी कानू वालीया
मोतीयू दी वेसर वे सोवै सोवे हीरा नू ।
मुख महताव नैन गुलाव
जुलफा काळिया[1]

राग – जगलो
ताल – जलद तितालो

मोटो जालम वे मिलकै अजी निजरा[2] से ।
मोर[3] लगी रसराज विरह की
पार हुई तीखीया सैया[4] खजरू से ।। १

राग – जगलो
ताल – धीमो तितालो

लगणा वे नेजा[5] नैण दा[6] लगणा वे सावरा हो
अजव तरा दा तीखा ।
जित रसराज तित लगता
लो रहता सैणू दा ।। १

---

[1]कालियां । [2]निजरो । [3]मार ख ग । [4]सयो । [5]नेज । [6]नैणू दा ।

राम – जंगली

ताल – धीमो तितालो

वे नादांणीया मिल जाणी रे।
रसराज प्रीत लगाई सो सांवरे
लोकां दे महांण नंही सरमांणा गुमानीड़ा ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

मलवेली ए मा मारुडो मिळण घर भायो।
मोह सिरदार सीला सुं सवायो
वालो सासड़ली रो जायो ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

झांझै मळ घाल्यो रे छला नणदी' रे।
नोसर तोड गयो नोलख री
बाग दे गयो चुनड़ी रे परो र ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

तोरै से लगाई प्रीत
काहे कु कन्हइया रे मै।
तोरै खातर सही लोग चवइया
बेसक लरे मोरी सासु ननदिया ॥ १

राग – झुंझोटी

ताल – जलद तितालो

पायल म्हारी बाज घी बाजे जी मारुड़ाजी।

'बाणा रे ब म। 'गुमानीड़ा' नही। 'नणदी। सी।

पायल घड दी सुनार वाजणी
त्यू ही विछिया तंत साजैजी साजैजी ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

रे रे[1] केसरिया काई कांई सौगन खाय।
सोळै सैस नार अलवेली
जिस पर चोरी जाय ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

विदेसीडा मैं[2] थारी घाली पाणीडै न जावा रे।
प्यास मरै म्हारी सासु नणदिया
अब तौ राजाजी नै सुणावा रे ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

हो मारूजी म्हारी तीजा रौ महोलौ थे लीजोजी[3]।
तीज[4] रौ महोलौ रस रौ झकोळै
इक दुनिया री छै ओळै[5] ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

हो लाडीजी मुख सोहै सोहै नथ भळकारी।
बिंदली सोहै रतन जरी री
फूल ि माग सवारी ॥ १
गोरै गात कसूबी अगिया
सावळडो सिर सारी।
निपट छबीली थारी तय्यारी
अलबेलिया री रिझवारी ॥ २

---

[1] 'रे' नही। [2] म्हे। [3] लीज्यो। [4] तीजा। [5] ओलौ हो।

राग – झुंझोटी
ताल – जलद तिताली

चुनरी भिजोय डारी सारी सुहासारी
लाल लाल रंग जाकी जरी की किनारी ।। १
साख मोसर की या मोन की चुनरिया
हित सों रंगाई मोर ससम दुलारिया ।
रसीलाराज एतो धीठ है लंगरवा
फार डारी नां तो याकी सुकर गुजारो ।। २*

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

आयो री मा मा नंदको लंगरवा ।
रसराज आयो फागन मन भायो
कपटी को वचन विहायो दुखदायो ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

चालनि मोरा सइयां दुख पावै ।
रसराज ऐसी बेदरदी होय रही
काहे कू वो पनघट जावै री मावै ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

झूलना मै तो जानूं री ननदिया ।
रसराज ऊधो¹ विरह लखी साख
पटरी चिकनो और डोरी मखतूलना ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – दीपचंदी

डोलना मेरो मरदे विरइया कोई ।

---

*आदर्श प्रति मे नहीं। ¹ ऊधै।

रसराज आगे कु मीर लोक की
देखे[1] दरद तोगे याको मोन ना ।। १

राग – जुजोटी
ताल–दीपचंदी

नैनू गी कैसे डारू मा कजरवा ।
रसराज नंद का लगरवा न आयाँ
फगवा के दिन बीते जावे उवाके वैनू[2] री ।।१

राग – जुजोटी
ताल – दीपचंदी

बाजना मोरा सईया नूपरवा ।
रसरोज नैरे नैरे[3] घर गोकुल के
लोग हमइया ग्रीर याके लाज ना ।। १

राग – जुजोटी
ताल – इकी

जाणी जाणी रे गला दोस्त दो ।
रसराज एक मै हीर निमाणी
मोरै सग एती ताणा[4]-ताणी रे ।। १

राग – जुजोटी
ताल – इकी

लैरा लैरा रे ले चल राभणा
लोक धिगाना वारी मुल्क[5] विगाना
अपना नही कोई साजणा ।। १

राग – जुजोटी
ताल – इकी

वाली वाली रे मेरा इलाही तु ।

---

[1]देख । [2]विन री । [3]नैरे ग नही । [4]'ताणा' नही । [5]मुलक ।

रसराज एक रांझ दा विछोहा
दूजी वेस मतवाळी रे ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – जलद तिताली

छम तेरे वाले लगदे मैंनूं नैण ।
रसराज रमक मतामर स्यांणा
छांड मत जाणा मरा सैंण ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – जलद तिताली

यूंही यूंही रे योल दी या सूठी
विरह सु नार दुखिया की भाग की मर दा विचार पिया ।
रसराज भाई वसत सुहाई
योल उठी वन सूती ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – जलद तिताली

दुपट्टा या जरी दा वे ।
रसराज किस नें लीता प्यौ प्यारा
लगता या परीदा वे ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – जलद तिताली

नजरां दी मारी ये मारो मरदी मै रोझणां
वन वन फिरदी याद करें दी ।
रसराज वेकल हैदी गिर पर दी
लोगां दे ओळभे नहीं उर दी ।। १

राग – झुंझोटी
ताल – जलद तिताली

नैण चमके चमके आसमान परी ।

रसराज नथनी मैं दी चमकै
और चमकै टपै दी तान झमकै झमकै सैण ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

नैणा दी कर गया[1] घात वो छैला[2] ।
रसराज नैण लगा कर विछडा
सैणा दी सुणावै कोई वात वे ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

प्यारा नहीं रैणा[3] मुल्क विगानै हो हो स्याणा ।
चल रसराज जिहा हो दो
जुजोटी दी तानै[4] ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – धीमो तितालो

पना मै तो भूलिया वे
नथनी दा लगा मोतीया दे झूमक विच
इस खेडै दी गलिया वे ।
जा दे[5] सैहर दे लोक रसराज वेखण मे
बीजा दी विच सैया गिर गया वे ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

बोल सुना गया वे महीडा वे ।
रसराज बोल मे प्रीत तोल गया
डोल गया जी उस की साथ मेरा छैलडा वे ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

भूल गई गुजर गजरै नु ।

---

[1]गयो । [2]ज्यानी । [3]रहणा । [4]तान । [5]ज्यादे ।

*रसराज हाजरो लौं दी सासरिया
भाई छलड़ सांवरे दी सेजां मुमरे नू ॥ १

राग – झूंझोटी
ताल – कमव तिताली

मोतींहो पसरका रे सुनारिया[1] त्या[2] ।
किव पै गया मोरा[3] चंगा मोती
ना हो लगेगा धरका रे ॥ १

राग – झूंझोटी
ताल – कमव तिताली

यूं छल[4] सोती ए मां इस जादूगारे
मोहनी वसी की तान[5] में
जादू चलाके[6] ।
रसराज भोवना यो वैरी हुवे गयो
जो बीती सो बीती ॥ १

राग – झूंझोटी
ताल – कमव तिताली

रांझिना चोरियां करदा ।
रसराज हीर निमाणी न बोसदी
इस्क नहीं भोरा-जोरियां ॥ १

राग – झूंझोटी
ताल – कमव तिताली

रांझेटा एक मायांणी मा सहैर[7] हजारे दा ।
काळा काळा झूमक चुलफां वाला
लगणा हीर निआरे दा ॥ १

---

*रसराज बाग में प्रीत दी भय गया होल गया की उसकी प्राण मेरा पीसड़ावे । ब
[1]सुनरिया । [2]मा । मेरा । [4]छलीदी । [5]ताना । [6]शहर ।

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

रे नादाणिया एली वेपरवाइया ।
इतनी गरीवा पर वेदरदी
किण वदिया सिखलाइया ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालौ

हीरा दा वे केहा हाल मिया ।
नही देखैं तौ कुछ ना सब कुछ है
जो तू करैं[1] तौ खयाल मिया ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तिताल

अलबेली नाजो नजरां
खजरू सं तीखी घायल कर दी ।
रसराज एक चसम गमजा पर
नही लगणी परिया सौ सौ मुजरा ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालौ

उलझाई मैंडो हीरा
क्या कीता वे तेरे राझै ।
रसराज क्या कहू इस ऊमर नू
आख लगी नही सुलझै सुलझाई ॥ १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालौ

चगा चगा साळूडा

[1]कर ।

*रसराज ह्यमरी लौं दी साधरिया
माई छलछ सांवर दी सेजां मुभरें नु ॥ १

राग – चूंकोटी
ताल – चलत तिताली

मोतीडां वेसरका रे सुनारिया[1] ल्या[2] ।
कित वे गया मोरा[3] चंगा मोती
मा सौ लगैगा धरका रे ॥ १

राग – चूंकोटी
ताल – चलत तिताली

यूं छल[4] मीती ए मा इस जादुगारे
मोहनी घसी की तान[5] में
जादू चलाकें।
रसराज जोबना यौ घरी हुव गयौ
जो बीती सो बीती ॥ १

राग – चूंकोटी
ताल – चलत तिताली

रांझटा चोरियां करदा ।
रसराज हीर निमांणी न बोल दी
इस्क नहीं जोरा-जोरियां ॥ १

राग – चूंकोटी
ताल – चलत तिताली

रांझिटा एक मायांणी मा सहैर[6] हुजारें दा ।
काळा काळा झूमक जुलफां वाला
लगणा तीर निजारें दा ॥ १

---

*रसराज जोग में प्रीत दी लग गया जोग गया भी उसकी ताप मेरा पैसजावे । ज
[1]सुनरिया । [2]ला । [3]मेरा । [4]कसौटी । [5]तम्बा । [6]शहर ।

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

रे नादाणिया एली बेपरवाइया ।
इतनी गरीबा पर बेदरदी
किण बदिया सिखलाइया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – जलद तितालो

हीरा दा वे केहा हाल मिया ।
नही देखै तौ कुछ ना सब कुछ है
जो तू करै[1] तौ खयाल मिया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तिताल

अलबेली नाजो नजरा
खजरू सैं तीखी घायल कर दी ।
रसराज एक चसम गमजा पर
नही लगणी परिया सौ सौ मुजरा ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालो

उलझाई मैंडो हीरा
क्या कीता वे तेरे राझै ।
रसराज क्या कहू इस ऊमर नू
आख लगी नही सुलझै सुलझाई ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमौ तितालो

चगा चगा साळूडा

[1]कर ।

गोरा गोरा गात नाजो ।
क्या अच्छा लगणा नैनू दा नोक चलावे
क्या अच्छी सांवण दी रात आजो ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

नहीं होनां इस्क दिल में ।
जो हुवा तो रसराज
को मुनासिब सोनां ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

निजरां दे मारे मर मर कै ।
रसराज आसक[1] वदन नहीं जींदे
उठ द हुये मास्यूक गिर पर कै ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

मर भर[3] द दी वे हीर प्याल नी सइयो ।
रसराज सुकर गुजार सांई वे
मै दा रांझण मतवाला मी सइयो ॥ १

राग – झुंझोटी
ताल – धीमी तिताली

मिल मिल जांदा वे नेण निमाणानी सइयो ।
रसराज रोक रखे के मिलावें
सोई मरा सैण सुहाणा मी सइयो ॥ १

---

[1]आशिक । मर प्याले । [3]'प्याले' नहीं मतवाले ।

राग – जुजोटी
ताल – धीमो तितालो

राझणा नैणू सै न मार
हारे तेरा मुखड़ा बाग बहार मिया मतवाले ।
नैणू दा मारना वे ज्यानी दिल नू न भावे
ज्यान कबज कर डार मिया ।। १

राग – जुजोटी
ताल – धीमो तितालो

राझा रांझा राझणा सिर दा तू[1] साइया वे ।
मुलक पजाबी वारी सहर हजारा मेरा स्याणा
हीर निमानी चल आइया ।। १

राग – ठुमरिया[2]

पना मारू चगी नाजकडो लाडलडो[3] लाया व्याय
भेट हुई छै थारी जोग तो पूरवलै जो
रख लीजो[4] कठ लगाय ।। १

राग – ठुमरिया[5]

मिरजो भागरली पिलावै उवा की सेजरिया न[6] जाऊ ।
भागरली पिलावै दिवानी करावै
वेसक मारै उवो तो मै तो उवा कै लागें मोरै राम[7] ।। १

राग – ठुमरिया

मोरी सासरिया कू वटउवा दे न[8] गारी गारी ।
चुनरी भिजोय डारी सारी सुहासारी
लाल लाल रग जाकी जरी की किनारी ।। १

---

[1] 'तू' नही । [2] ठुमरी चाल । [3] लाडली । [4] लीज्यो । [5] राग जुजोटी, ताल जलद तितालो । [6] नहि ख ग । [7] 'उवाकै लागै मोरै राम' के स्थान पर 'वा मै न मराऊ' 'ख' 'उवापै ना मराऊ' ग । [8] त 'ग' ।

लाख मोहूर किया गौनें की चुनरिया
हित सो रगाई मोरे ससम दुल्हारिया।
रसीलाराज एसो धीठ है लंगरवा
फार डारो नां सो याकी सुन्दर-गुजारी ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बलमा बलमा मोरे आवो रे
मै तो खेलूंगी फाग तोसें दिन औ रयन
सब [2]बन केसरिया हो रहे हैं
करो जु केसरिया हमारे हु नयन ॥ १
मगधा चलन लगे कटवा ककरवा
खटकैंगे मेरे उर बरस नयन।
रसीला राम प्यारे लाल करौ अब
फूल[3] की सेजरिया में सुख सौं सयन ॥ २

राग – ठुमरिया

कजरवा मोरा आके उवा के लागी मोर रांम।
बठनां अटरिया मोरा
चलनां लोकू का नीच[4]।
कौ लग घूघटवा[5] राखूं
क्या करू मै बिगरे मोरा कांम ॥ १

राग – ठुमरिया

चुनरिया मोहि कूं रग दे रे
छला रगरेजा तै।
पिय कु कहु ना मोरे
पास तो रुपइया मांही।

राग-बजाटी ताल-बसद (नताल) बलमा बलमा। घस बन ग। [3]पुसू। [?]राग पुजोटी ठुमरी ताल मे। नीच। [5]घूघटवा। [?]ठुमरी ताल। मोर्ई।

मोल चह[1] तौ मै क्या करू
मोरै ग्रधरन कौ रस लेजा तै ।। १

राग – ठुमरिया[2]

झमक[3] पग धरत गुजरिया वसीवट ।
बिछ्वा बजातो जाती
हरि हरि बिरिया खाती ।
पिय सौ करन बाती
ठुमरी की तान सुनाती ।। १

राग – ठुमरिया[4]

तुरछी कै बिरवा माही रे
घेरी घेरी मुजै इस नद कै नै
कहा कान्ह[5] कियौ मोर ननदी
खोई गई लाज मोरी सारो रे ।। १

राग – ठुमरियां[6]

नन दिया मोरी, मोरी[7] कास न कहू मै मोरी बात ।
मोरा तौ छाड[8] कै हाथ
ग्रनत बितावै रात
देत है दिखाई प्रात
ग्रैसी ग्रा मिली है कोई कम जात ।। १

राग – जगलो[9]

मालनिया मीठी मीठी री
ग्रनारा[10] मोहि[11] कौ[12] देती जा ।
तोरै तौ पास[13] पके पके तरबूजवा

---

[1] चहैं । [2] राग-जुजोटी ठूमरी चाल मैं । [3] झटक ग । [4] राग-माझ, ठूमरी चाल । [5] कहान । [6] राग-जुजोटी ठूमरी चाल मे । [7] नही ग । [8] छाडि । [9] ठूमरी चाल । [10] ग्रनारै ख ग । [11] मोई । [12] कैं । [13] पास है ।

गोरा गोरा गात नाजा ।
क्या मछा लगणा मैंनूं दा लोक जलावे
क्या मछी सावण दी रात माजो ।। १

राग – खुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

नहीं होना इस्क विस में ।
जो हुवा तो रसराज
को मुनासिब सोना ।। १

राग – खुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

निजरां दे मारे मर मर कें ।
रसराज मासक[1] वदन नहीं जीवे
उठ दे हुमे मास्यूक गिर पर कें ।। १

राग – खुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

मर मर[2] वें वो वे हीर प्यास नी सइयो ।
रसराज सुकर गुआर सांई वे
मे वा रांझण मतवाला[3] मो सइयो ।। १

राग – खुंबोटी
ताल – धीमी तिताली

मिस मिस जादा वे नैण निमाणानी सइयो ।
रसराज रोक रखे के मिसार्य
सोई मेरा सेण सुहाणा मी सइयो ।। १

---

[1]आशिक । [2]मर प्यासे । [3]'प्यासे' नहीं [4]मतवाले ।

राग – जुजोटी

ताल – धीमौ तितालौ

राझणा नैणू सै न मार
हारे तेरा मुखडा वाग वहार मिया मतवाले ।
नैणू दा मारना वे ज्यानी दिल नू न भावे
ज्यान कवज कर डार मिया ॥ १

राग – जुजोटी

ताल – धीमौ तितालौ

राझा राझा राझणा सिर दा तू[१] साइया वे ।
मुलक पजावो वारी सहर हजारा मेरा स्याणा
हीर निमानी चल आइया ॥ १

राग – ठुमरिया[२]

पना मारू चगी नाजकडी लाडलडी[३] लाया व्याय
भेट हुई छै थारी जोग तौ पूरबलै जी
रख लीजौ[४] कठ लगाय ॥ १

राग – ठुमरिया[५]

मिरजौ भागरली पिलावै उवा की सेजरिया न[६] जाऊ ।
भागरली पिलावै दिवानी करावै
वेसक मारै उवौ तौ मै तौ उवा कै लागै मोरै राम[७] ॥ १

राग – ठुमरिया

मोरी सासरिया कू वटउवा दे न[८] गारी गारी ।
चुनरी भिजोय डारी सारी सुहासारी
लाल लाल रग जाकी जरी की किनारी ॥ १

---

[१] 'तू' नही । [२] ठुमरी चाल । [३] लाडली । [४] लीज्यो । [५] राग जुजोटी, ताल जलद तितालौ । [६] नहि ख ग । [७] 'उवाकै लागै मोरै राम' के स्थान पर 'वा मै न मराऊ' 'ख' 'उवापै ना मराऊ' ग । [८] त 'ग' ।

लाल मोहर किया गौनें की चुनरिया
हिम सौ रंगाई मोरे ससम दुल्हारिया।
रसीलाराज एतो धीठ है लगरवा
फार डारी नां तो याकी सुकर-गुजारी ॥ १

राग – ठुमरियां[1]

बलमा[2] बलमा मोरे भावी रे
मै तो खेलूगी फाग तोसैं दिन औ रयन
सब [3]बन केसरिया हो रहे हैं
करो जु केसरिया हमारे हु नयन ॥ १
मगवा चलन लगे कटवा ककरवा
खटकेंगे मरे उर बरस नयन।
रसीला राज प्यारे लाल करो अब
फूल[4] की सेजरिया में सुख सों सयन ॥ २

राग – ठुमरियां[5]

कजरवा मोरा आक उवा के लागै मोर रांम।
मठना अटरिया मोरा
चलना लोकू का मीच[6]।
कौ लग गूघटवा[7] राखूं
क्या करू मै बिगर मोरा कांम ॥ १

राग – ठुमरियां

चुनरिया मोहि[8] कूं रग दे र
छैमा रंगरेजा सैं।
पिय कूं कहु मा मोरे
पास ती रुपइया नांही।

---

[1] राग झंझोटी ताल-चलद तिताली। [2] बलमां बलमां। [3] बरा बन म। [4] फूल। [5] राग झुंझोटी ठुमरी चाल मे। [6] मीचु। [7] घूघटवा। [8] ठुमरी चाल। मोरे।

मोल चहू[1] तौ मै क्या करू
मोरै अधरन कौ रस लेजा तै ।। १

राग – ठुमरिया[2]

झमक[3] पग धरत गुजरिया वसीवट ।
बिछवा बजातो जाती
हरि हरि विरिया खाती ।
पिय सौ करन बाती
ठुमरी की तान सुनाती ।। १

राग – ठुमरियां[4]

तुरछो कै विरवा माही रे
घेरी घेरी मुजै इस नद कै नै
कहा कान्ह[5] कियौ मोर ननदी
खोई गई लाज मोरी सारो रे ।। १

राग – ठुमरियां[6]

नन दिया मोरी, मोरी[7] कास न कहू मै मोरी बात ।
मोरा तौ छाड[7] के हाथ
अनत बितावै रात
देत है दिखाई प्रात
अैसी आ मिली है कोई कम जात ।। १

राग – जगलौ[8]

मालनिया मीठी मीठी री
अनारा[9] मोहि[10] कौ[11] देती जा ।
तोरै तौ पास[12] पके पके तरबूजवा

---

[1]चहैं । [2]राग-जुजोटी ठूमरी चाल मैं । [3]झटक ग । [4]राग-माझ, ठूमरी चाल । [5]कहान ।
[6]राग-जुजोटी ठूमरी चाल मे । [7]नहीं ग । [7]छाडि । [8]ठूमरी चाल । [9]अनारै ख ग ।
[10]मोई । [11]कै । [12]पास है ।

भौर अछे अछे अबवा
तार्को मोल मेसी जा ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बटमारी तेरो मोहना री
मेरो गाव लूटे मा ।
मोरे पास अछे अछ साल दुसाले
कर भर दीन सोहू गल नाहो छुट मा ॥ १

राग – ठुमरिया

चोरी चोरो दा दाग मियां लग गया स ।
काहू कूं कसम करो मिरआजी
इस्क नहीं सिर-जोरो दा लाग ॥ १

राग – तोडी
ताल – इकी

आई आई वे बहार
हरे द्रुम फूले फूले फुलवारी मोरी मईया बन छाई
यां बेमर्गियां दिस दिस मिल मिल महि छिब छाई ।
भवर भवन लागे रसराज कलियन में
कोयलिया अमवा की डारो डारो पर कुहकाई ॥ १

राग – तोडी
ताल – चौताली

मंजर मंजर भ्रमर ।
फूम फूल पै सुकसा *देसो डार डार कोयल रही विहर ।
वछ वछ बेस सर सर हंसा
रसीलाराज त्रिय पिय पै क्यों हर[*] ॥ १

---

[1] ठुमरी ताल । बिरह म । बिछ बिछ । [*] हरि । [*] बेबे म ।

राग – तोडी
ताल – जलद तिताली

अचरा मोर छोड कन्हईया
कुज कुज के मुरवा देखै
पपय्या देखै
डार डार के सुकवा देखै
कवळ कवळ के[1] भवरा देखै*
और गाव के पशुवा[2] देखै
हमारा तुम्हारा जियरा देखै।
मै नही कहुगी तै नहिं कहैगा
अछ[3] वेली हु नाही[4] कहैगी
सर डाबर हु कैसें बोल सकता है लगरुवा
मन कै अतर जो कोई बैठा
भली बुरी वो[5] सब जानता है[6]
उवी ही प्रेरत है सब ही कू
हमारै तुम्हारै क्या है सारै
रसीलीराज[6] वा सायब लेखै ।। १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

कंटवा के मिस बैठ गई[7] मा
'कोई निकालौ नाव दई कै।'
यू कैती मै, रसराज मगवा मे
बसीवट तै निकस आयौ कन्हईया ।। १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

नैनवा कौ चूक कन्हईया
मन बिचारौ पाय रह्यौ[8] दुख

---

[1] 'के' नहीं। *दोनों पक्ति ग मे नही। [2] पसुवा। [3] व्रिछ। [4] नाह। [5] जो। •जानत ग। [6] रसीला राज उवा साहब ख रसीला ग। [7] रही। [8] 'रह्यौ' नही ख।

मोर अछे अछे अमवा
तार्को मोल लेती जा ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बटमारो तेरो मोहना री
मेरो गांव लूट मा ।
मोर पास अछे अछ साम वुसाले
कर भर दीन छोहु गैल नाहो छुट मा ॥ १

राग – ठुमरिया

चोरी चोरी दा दाग मियां लग गया वे ।
काहू कू कसम करो मिरजाजी
इस्क नही सिर-जोरो दा लाग ॥ १

राग – होरी
ताल – इको

आई आई वे बहार
हरे द्रुम फूले फूले फुलवारी मोरी मईया धन छाई
या बेलरियां दिस दिस मिल मिल महि छिन छाई ।
भवर भवन लागे रसराज कलियन में
कोयलिया अबवा की डारो डारी पर कुहकाई ॥ १

राग – बाकी
ताल –चौतालो

मंजर मंजर भ्रमर ।
फूल फूल पै सुकवा "बसो डार डार कायम रही विहर ।
अछ अछ' बेल सर सर हंसा
रसीलाराम त्रिय त्रिय पैं ज्यौं हर" ॥ १

---

[1] ठुमरी चाल । विरह प । विस विस । [4] हरि । [5] मेले न ।

राग – तोडी
ताल – धीमो तितालो

बनरा जी राज दुल्हारा
अगानैणी वनी चदावदनी नै प्यारा लागो।[1]
नित रसराज पधारो महला
लाडली करै छै थारा चाव ।। १

राग – तोडी
ताल – होरी रो

अवा डार कोयलिया बोलै
बहत बसती वयार मा।
कुज कुज रसराज दपत जहा[2]
भंवरन ज्यू मिल डोलै ।। १

राग – तोडी
ताल – होरी रो

मितवा मोरै आइलो मोरी मा[3]
करूगी मै आनद उछाह मा।
हाथ जोर कर पईया परूगी
गरवा लगा लौ है नाह ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालो

चबेली को बिरवा तामे प्रात भये हु नही जागे दपत घिर।
धोखै लता द्रुम तोरत माली
पुष्प भूपण हिर फिर ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालो

मलिय्या पुकारे कीली वाले लाला
ह वेगे आवो बनी है बहार।

---

[1]थे प्यारा ख ग । [2]जिहा। [3]माय ग ।

रसीसाराज करे सो पावे
यो[1] तो मनोखो न्याय कन्हईया ॥ १

राग – तोडी
ताल – चलत तिताली

फुलवा बीनन आई रे कन्हइया
तोरे मिलन को[2] ननदिया नोवल।
सास के आगें जाय कहुँगी
झटका पटका करेंगी उवा[3] ॥ १

राग – तोडी
ताल – चौपचरी

खेलण चाल चम्पाबाग में
अलबेला राजकवर अब।
तीजणियां रा झूलरा चाल
संग लो सात सहेलण ॥ १

राग – तोडी
ताल – धीमी तिताली

चाली चाली चम्पाबाडी
सासूं मिल सहेली हे नणंद म्हारी
ईसर गौरजा री व्रत करस्यां
और रमसां खेलस्यां सारी ॥ १

राग – तोडी
ताल – धीमी तिताली

साहीजी रा मुख रा बोलण री तरह चलण री मनोखी देखो मा[5] म्हे।
कांई चितवन रसराज नैणां री
उसी छे मूंहां री रेख

---

[1]यौ ग। [2]कै। [3]'उवा' नहीं क, वा ग। मुख ग। [5]'मा' नहीं क।

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

अचरा मोर छोड कन्हईया
कुज कुज के मुरवा देखै
पपय्या देखै
डार डार के सुकवा देखै
कवळ कवळ के[1] भवरा देखै*
और गाव के पशुवा[2] देखै
हमारा तुम्हारा जियरा देखै।
मै नही कहुगी तै नहि कहैगा
अछ[3] वेली हु नांही[4] कहैगी
सर डाबर हु कैसे बोल सकता है लगरुवा
मन कै अतर जो कोई बैठा
भली बुरी वो[5] सब जानता है
उवौ ही प्रेरत है सब ही कू
हमारै तुम्हारै क्या है सारै
रसीलौराज[6] वा सायब लेखै ।। १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

कंटवा के मिस बैठ गई[7] मा
'कोई निकालौ नाव दई कै।'
यू कैती मै, रसराज मगवा मे
वसीवट तै निकस आयौ कन्हईया ।। १

राग – तोडी
ताल – जलद तितालौ

नैनवा कौ चूक कन्हईया
मन बिचारौ पाय रह्यौ[8] दुख

---

[1] 'के' नही। *दोनो पक्ति ग मे नही। [2] पसुवा। [3] अिछ। [4] नाह। [5] जो। [6] जानत ग। [6] रसीला राज उवा साहब ख रसीला ग। [7] रही। [8] 'रह्यौ' नही ख।

मोर मछे मछे मंवचा
ताकौं मोल लेती जा ॥ १

राग – ठुमरिया[1]

बटमारौ तेरौ मोहना री
मेरौ गाँव लूटे मा।
मोर पास मछे मछे साल दुसाले
कर भर दीन तोहु गेल मोही छूट मा ॥ १

राग – ठुमरियां

चोरी चोरी दा दाग मिर्मा लग गया वे।
काहे कूं कसम करौ मिरजाजी
इस्क नहीं सिर-ओरो दा लाग ॥ १

राग – तोडी
ताल – इकी

माई माई ये बहार
हरे द्रुम फूले फूले फुलवारी मोरी मईया बन छाई
या बेलरियां दिस दिस मिल मिल महि छिब छाई।
भवर भवन लागे रसराज कलियन मे
कोयलिया अवषा की डारी डारी पर कुहुकाई ॥ १

राग – तोडी
ताल – चौतालो

मवर मंजर भ्रमर।
फूल फूल पै सुकवा "देखा डार डार कोयल रही विहर।
मछ मछ बेस सर सर हंसा
रसीलाराज त्रिम त्रिय पैं क्यौं हुर" ॥ १

---

[1] ठुमरी चाल। विरहु म। [3] बिस बिस। [4] हुरि। [5] बेसे म।

राग – तोडी
ताल – धीमो तितालो

वनरा जी राज दुल्हारा
अ्रगानैणी वनी चदावदनी ने प्यारा लागो।
नित रसराज पधारो महला
लाडली करै छै थारा चाव ॥ १

राग – तोडी
ताल – होरी रो

अ्रबा डार कोयलिया बोली
वहत वसती वयार मा।
कुज कुज रसराज दपत जहा[2]
भंवरन ज्यू मिल डोली ॥ १

राग – तोडी
ताल – होरी रो

मितवा मोरै आइलो मोरी मा[3]
करूगी मैं आनद उछाह मा।
हाथ जोर कर पईंया परूगी
गरवा लगा लौ है नाह ॥ १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालो

चबेली कौ बिरवा तामे प्रात भयै हु नही जागे दपत घिर।
धोखे लता द्रुम तोरत माली
पुष्प भूषण हिर फिर ॥ १

राग – देवगन्धार
ताल – चौतालो

मलिय्या पुकारे कौली वाले लाला
ह वेगे आवो बनी है बहार।

---

[1]थे प्यारा ख ग । [2]जिहा। [3]माय ग ।

रसोलाराज कर सो पावै
यो[1] तो मनोखो न्याय कन्हईया ॥ १

राग – टोडी
ताल – जलद तिताला

फुलवा बीनन भाई रे कन्हईया
तोर मिलन को[2] ननदिया नाव ल ।
सास के आगे जाय कहँगी
झटका पटका करेंगी उवा[3] ॥ १

राग – टोडी
ताल – चौपचंदी

खेलण चाल चम्पाबाग में
अलबेला रामकंवर भव ।
तीजणियाँ रा झूलरा चाल
सग ले सात सहेलण ॥ १

राग – टोडी
ताल – धीमो तिताला

चालो चालो चम्पाबाडी
सातूं मिल सहेली हे नणंद म्हारी
ईसर गौरजा री व्रत करस्यां
और रमसां खेलस्यां सारी ॥ १

राग – टोडी
ताल – धीमो तिताला

गाडीओ रा मुख[4] रा बोलण री तरह चलण री मनोखी देखी मा[5] म्हे ।
कोई चितवन रसराज नणां री
उसी छे मूंछां री रेख

---

[1] यो म । [2] कै । [3] 'उवा' नहीं ख., वा म । [4] मुख म । [5] 'मा' नहीं ख ।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

आजो म्हारै सावळडा थे मिजमान आज ।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

चाली मन भावनी पीया की सेज[1] ।
रसराज माननी सोहत मतवारी आन
झूलती[2] आवै सवारी[3] तान ॥ १

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

पियरवा[4] मोहि ताना दे दे मारी हो ।
दोस्ती तिहारी को[5] वेसक नाम कहै कै
रसराज केई वहाना[6] लै लै ॥ १

राग – धनासरी
ताल – इकौ

वाला राज चालौ विदेसा ।
तुरिया जीण कसी छै कमरा
नौबत रही छै बाज ॥ १
वगतर झिलम किलग्या चमकै
सग वाकौ रावतियौ समाज ।
साची नै कहौ नै सायबा कद घर आसौ
रण रसिया रसराज ॥ २

राग – धनासरी
ताल – आडौ तितालौ

तारन जोरी वे जोरी
तू तौ सम रसिया नै तोरो ।

---

[1] सैजां ख सेज ग । [2] ज्यु आवै ग । [3] असवारी ग. । [4] आलीजाजी म्हानै ख पियरवाजा ग । [5] री । [6] व लै लै ।

फूली बसत रसराज नवेली[1]
मानद मानों निहार ॥ १

राग – देसमल्हार
ताल – चौताली

राधे कजरारे तोरे नैन विना ही
दोनैं मजन के मनिम्यारे।
मतवार रसराज विनां ही
मद छाके कन्हइया कू पियारे[2] ॥ १

राग – देसमल्हार
ताल – जलद तिताली

मरस वादळी म्हारा राज चमक रही छ बीज।
झम झमती घण महल चढ छै
रम - झम पड़ती बूंद ॥ १
मिळी अधेरी रैण सुहेमी
मोरा गावै मल्हार[3]।
राजगहैली रै सग माणी
सरस तीज री रात ॥ २

राग – देसमल्हार
ताल – जलद तिताली

विदेसीडा बेटा राव रा हो
ऊतरया कोठे सूं आय।
धुवल्या सात सीस पुर म्हारै
झुल्सी दे गजरो बांध ॥ १

रसराज नवीली। प्यारे। [3] मोरा गावै मल्हार' पाठ नहीं।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

आजो म्हारै सावळडा थे मिजमान आज ।

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

चाली मन भावनी पीया की सेज[१] ।
रसराज मानती सोहत मतवारी आन
झूलती[२] आवै सवारी[३] तान ।। १

राग – देवगन्धार
ताल – सवारी

पियरवा[४] मोहि ताना दे दे मारी हो ।
दोस्ती तिहारी को[५] वेसक नाम कहै कैं
रसराज केई बहाना[६] लै लै ।। १

राग – धनासरी
ताल – इको

बाला राज चालौ विदेसा ।
तुरिया जीण कसी छै कमरा
नौबत रही छै बाज ।। १
बगतर झिलम किलग्या चमकै
सग वाकौ रावतियौ समाज ।
साची नै कहौ नै सायबा कद घर आसौ
रण रसिया रसराज ।। २

राग – धनासरी
ताल – आडौ तितालौ

तारन जोरी वे जोरी
तू तौ सम रसिया नै तोरो ।

---

[१]सैजां ख सेज ग । [२]ज्यु आवै ग । [३]असवारी ग । [४]आलीजाजी म्हानै ख पियरवाजा ग । [५]रौ । [६]व लै लै ।

रग सुवास देसी भा स कढी
ज्यूं ज्यूं केसर घोरी ॥ १
जोर गयो भोर सरस गयो तन
कर गयो त्वां से चोरी ।
कोई की नांई खेल गयो
तूं सोरी भर ले छोरी ॥ २

राग – धनासरी
ताल – धीमो तितालो

स्रवन परी हु कवन सों[1] कस
सुनियें याकें कुञ भवन बात माई
फूली बसत तामें पक्षी बोल
नींद आत एक साथ के गवन ॥ १

राग – धनाश्री
धीमो तितालो

पांणी भर रही सरवर पाळ
किण छैला री छ या कांमणी ।
सीस सुरंगो चूंनडी चमकै
मोतीडां री माळा दांमणी ॥ १
कवंळ-पत्री मुख मिसी सुहाई
छूटी जुलफ सुलजामणी ।
रसराज किण बादळ गळ[2] लगसी
चमक झमकसी दांमणी ॥ २

राग – धनाश्री
धीमो तितालो

म्हांरा थगा मारू चाल छै विदेस
जिण रुत केसू फूल फाली ।

सैं। लग। [3]दामणी।

कळिया सु भवर बिलम रया छे
सूवटा आवा डाळी आली ।। १
लोक विदेसा सु घर आवै
लता बिरछा री मिळण आली ।
रसराज अै छाडे छै आपा नैं
किसा हिया रा कथ म्हारी आली ।। २

राग – धनासरी
ताल – जलद तितालौ

म्हारा मारूडा दारूडी री सवाद काई होय छै
सो बता नै आलीजा ।
रसराज मै तौ जाणु दूर सु
सजना नै ल्यावै[1] याद ।। १

राग – धनासरी
ताल – जलद तितालौ

सईया कुण छै, अे लागै छै अमीर
किण उळगाणी रा भवरजो ।
लटपटिया सिर पेच पाग रा
भूह कबाण-सी ताणी रा निमाणी रा ।। १
लहरया री लहरया मन लाग्यौ
मौसर भीजती सूरती जवानी रा ।
रसराज अे पिय प्यारा होसी
कौणसी अनोखी नार सयाणी रा ।। २

राग – धनासरी
ताल – जलद तितालौ

सालुडौ[2] मगा द्यौ सागानेर रौ
अजी रग-भीना राजा जी ।

---

[1]लावै । [2]सालूडो ।

आंगण कटारी आंत अनोखो
लाग्यौ छ लपा[1] चहु फेर रौ ॥
नया रग रौ कळियां रौ सींचो
आगरा रौ मैंगो[2] घेर अमेर रौ ।
रसीलाराज थांरी खातर थां सू
रूसणो कियौ छ केसो[3] वेर रौ ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमी तितालौ

अब आंन मिलादे कासिदवा रे
मोर मितवा मोहि सेजरियां ।
घरी घरी पल पल उथा के दरस बिन
जियरा तरफ रह्यौ है न आव नींदरियां ॥ १

राग – खमायची

ताल – धीमी तितालौ

स्याम तोरी दखों रे आज जोरा जोरी ।
किह सुरत तोरी त्रिपता घोसें
नाहक बहियां मरोरी ॥ १
सटकत आंखन में सूकी रग
चुनरी[4] भिजो दई बेसर तोरी ।
रसीलाराज कापे न्याव कराऊ
कौन गांव की या होरी ॥ २

राग – खमायची

ताल – दीपचंद

आव[1] म्हांरा मारूड़ा[2] मारवण तो बुलावै छे ।

---

[1]चपा चपा । [2]माईमी । [3]निदी । अपता ए बिपता ए । [4]चुनड़ी ए । [1]धव ए ।
मारूड़ा रे ।

खान पान जर जेवर न भावै
उवै नै अेक तुही सुहावै ।। १

राग – धनासरी
ाल – दीपचदी

गवालन पनिया कै मिस आव
तोरी सास ननद[1] गई[2] गाव ।
पारोसन कु मै अपनाई
कबहु न लै कहु नाव ।। १
अेक फागन के दिन मतवारे
आज लग्यौ है मुसकल सौ[3] दाव ।
गोरी गोरी बहिया मे लपटन कौ मोहि
बहुत दिनन कौ चाव ।। २

राग – धनासरी
ताल – धीमौ तितालौ

अजी म्हारा जाजर[4] बिछिया बाजै राज
क्यू कर आवा हो आलीजा ।
रसराज नथनी महदी चमकै
लोक लखै मन लाजै राज ।। १

राग – धनासरी
ताल – धीमौ तितालौ

अलबेली हे कलायन[5] दारू दै ।
थारी चटक चाल मोहि लागी
एक रात म्हारौ मारू लै ।। १
पीछौ उतर[6] कर रही छै[7] कलाळन
यौ[8] तो मेवासी बागा रौ बहारू छै ।

---

[1]ननदीया । [2]'गई' नहीं । [3]सूं । [4]जांझर । [5]कलालन ख, कलालनी ग । [6]ऊतर ।
[7]कर 'रही छै' नही । [8]औ ग ।

साहब इनैं रच्यौ तो बराबर
तूं मोरा नें किण सारू दे ॥ २

राग – धनासरी
ताल – धीमो तितालो

देखो देखो ए कलाळी जोबन ओरली ।
म्हांरा चैन[1] दसा मोहि दीसै
म्हांरा पिया में तू चोर ली ॥ १

राग – धनासरी
ताल – धीमो तितालो

हो सला मोहि सांना दे दे मारी ।
चाहत हु हो तोहि देस के
कविय म ऋलफ सवारी ॥ १
मारग भाय गई मै मारग
इक दिन रग की चलाई पिचकारी ।
उवाहो पर रसराज लोकन इन
भर मोहि रसी हूं तिहारी ॥ २

राग – धनासरी
ताल – होरी रो

भायो फाग उमंड भाली री
मचो है मिहरवा[2] के धूम ।
नौ सत साज गुजरिया भावे
जर जेवर में लूम ॥ १
भबीर गुलाल कुमकुमा चंदन
हाथन में फूलन के झूम ।
खेलत है रसराज भानंद म
मम् सावन भर झूम ॥ २

---

[1] चैन म । [2] मेहराबा ।

राग – परज
ताल – इकौ

आई छै सावणिया री तीज अलवेलिया कमधजिया
चालौ चालौ चम्पावाग[1] बाडी मे आज।
मारू छौ कत मारवणी नारी
था दोना री छै चगी जोडीजी ।। १
अतर पान दारूडौ ल्यौ लैरा
करौ नै तीजणिया रै सगत प्यारीजी।
पिय सिर पर रसराज लहरियौ
प्यारीजी रै सिर पचरग साडी ।। २

राग – परज
ताल – इकौ

नथनी जगनू हमेळा चमकत टिकवा चुरिया
किकनी बुलाक छाप छलवे वैनी ककना।
करणफूल सीसफूल नूपर रसराज
पिया पै ल्यादे[2] सजनी ।। १

राग – परज
ताल – जलद तितालौ

चुडलै सायधण रै जी
आज रग लाग रयौ[3] छै।
चुडलौ हस्ती दात रौ
रग तौ सुरख नयौ ।। १
मही चीरचौ कारीगर कौ यौ
सोवन पात छयौ।
तीज री रात पिया गळ लगता
सब दुख दूर गयौ* ।। २

---

[1] 'बाग' नही। [2] लादै। [3] रहयौ। *दोनो पक्ति ग मे नही।

राग – परज
ताल – कमव तितामी

म्हांन छ चालौ' थांर देसड़
म्हे तौ हुवा पनां थारा' तावेदार आलीजाजी हो।
छोड 'र जाणौ नहीं सला छ
मरजी सूं लाचार ॥ १
सांमैं आई तीज सिरा की
नई गोरयां रो तिंवार।
रसराज सग राखौ पावस मे
नेहु सवी रा रिझवार ॥ २

राग – परज
ताल – कमव तितामी

मारूडी सिकारां आज नीसरयौ
सरां लिया' सांईना सिरदार सहेल्यां हे।
सरवर नदीयां वाग वनां की
घणी छ रसीली बहार ॥ १
मीकं थाज नीको बो सूरत
नीका मैराक्यां असवार।
नीके कौल रात न आसी
रसराज छ थी रिझवार ॥ २

राग – परज
ताल – कमव तितामी

सासूडे रो होय रहयो चामणी
वरा मुलक रो उणसुं सवाय रसियाजी हो।
सांवणिया रे रैण अंधेरी
चंदो थी छिप्यो मुरझाय ॥ १

चालौना थ। थारा क प। सजा नही। 'लिया।

इण मारवण रै थे नैडा चाल जो[1]
ज्यू मारग सूज्यो जाय ।
रसराज सुख सु देसा थानै
सेभा तक पोहचाय[2] ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

आई वसत वहार ननदिया
वन वन कोयल वोली ।
अवा मोरे केसू फूलै
भवरन को भनकार सुनन लाग्यौ[3] ॥ १
ठौर ठौर हिंडोरे वधे है
पहैरे[4] फूलन के चौसर हार ।
मिल दपति रसराज आनद मे
वन वागन मे वहार करत भये ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

आज आई छै सावणिया री तीज मिजाजीडा
खेलण चालो चम्पावाग मे ।
ऊचै विरछ हिंडोरो वाध्यौ
भोटा दे दे भुलावै[5] साथण मोरी ॥ १

राग – परज
ताल – धीमो तितालो

मोतीडा भरी छै माग
सुहागण किण नै सहेली[6] ।
आधा[7] सीस रा दुपटा सू वह गई
किण रसिया पर साग ॥ १

---

[1]ज्यो । [2]पह चाय । [3]लागो । [4]पहरे । [5]झूलावेली । [6]सुहेली । [7]आधार ग ।

राग – परज
ताल – होरी री

चालो चालो चंपाबाग पनाजी
माई तीज सांवण री।
तीजणियां रा मीठा सुर सूं रयौ छ
झूरां रो झुरमुट[1] माग ॥ १
तीज गळै तीजणियां मूळै
रसिया नै द रस छाक।
सखि सहेल्यां आसिस देवै
घण रो अघळ सुहाग ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इको

सांवरो मोहि कूं सुहावै अे मा।
जानत हू अनुकूल यो तो बी
आस लगी उवां सूं जावै अे[2] मा ॥ १
होनी होय सु होय रहेगी
कोई कछु कहो सोई जोई मन भावै।
रसराज उवो राखो मत राखो
साई मोरी तो ना छुटाव अे मा ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इको

सांवरो लगन लगावत अे मा।
काहु कछु काम बहानें कोई
अपनें नगर मे आवत अ मा ॥ १
पूछी सास ससन कू याकी
सोम प्रकार की महप कहावत।

भरमुट। सखी। [2]दे।

रसराज या नायक कू कोई
नही अनकूल वतावत अे मा ।। २

राग – पूरवी
ताल – धीमो तितालो

कोयलिया वोली अवंवा की डार ।
सुक सारया[1] मिल झूलन लागे
भ्रमर करत झकार ।। १
नरतत[2] मोर पपईया वोलै
मदन नरेस रिझावन वार ।
जगल मे मगल सो लाग्यो
आई रसराज वहार ।। २

राग – पूरवी
ताल – धीमो तितालो

कळिया सावळ चुन चुन ला दा
गुथ दी अमीरल चौसर वारे ।
गाते वी थे उस वखत मे
सुन मुन उन्हा दी ताना ।
परिया विरह दी मुस्ताक
न कर दी दिल न्यारे ।। १

राग – पूरवी
ताल – होरी री

कोठै वोली होती साझ समै में या कोयलडी ।
मीलन कवळ सरा औंर नदिया
कुमद फूलण री वेळा रग भीनी ।। १
एक जिसी छव[3] चद सूरज री
पथी* लेत बिसराम ।

---

[1]सारयो ख ग । [2]निरनत । [3]छिव । *पखी ग ।

राग – परज
ताल – बजद तिताली

म्हांनै ले चालो थांरै देसडै
म्हे तो हुवा पनां थारा' तावेदार म्हालीजाजी हो।
छोड र जाणो नहीं' सला छै
मरजी सूं लाचार ॥ १
सांमैं माई तीज सिरा की
नई गोरयां रो तिंवार।
रसराज संग राखो पावस में
नेह बदो रा रिझवार ॥ २

राग – परज
ताल – बजद तिताली

मारूड़ी सिकारां माज मीसरयो
सैरां सिया' साईना सिरदार सहेल्यां हे।
सरवर नदीयां बाग बनां की
बणी छ रसीली बहार ॥ १
नीक साज नीकी बो सूरत
नीका भैराक्यां असवार।
नीके कौल रात न मासी
रसराज छै जी रिझवार ॥ २

राग – परज
ताल – बजद तिताली

सासूड़ै रो होय रह्यो चानणो
बेरा मुलक रो उणसुं सवाय रसियाजी हो।
सांवणिया री रैण अंधेरी
चदो बी छिप्यो मुरझाय ॥ १

[1]चान्दीमा ग। [2]थारा च प। [3]छ्या नहीं। [4]सिमा।

इण मारवण रै थे नैडा चाल जो[1]
ज्यू मारग नूज्यो जाय ।
रसराज सुख सु देसा थानै
सेभा तक पोहचाय[2] ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचन्दी

आई वसत वहार ननदिया
वन वन कोयल वोली ।
अवा मोरं केसू फूलै
भवरन की झनकार सुनन लाग्यौ[3] ॥ १
ठौर ठौर हिंडोरे वधे है
पहैरे[4] फूलन के चौसर हार ।
मिल दपति रसराज आनद मे
वन वागन मे वहार करत भये ॥ २

राग – परज
ताल – दीपचदी

आज आई छै सावणिया री तीज मिजाजीडा
खेलण चालो चम्पावाग मे ।
ऊचै विरछ हिंडोरी वाध्यौ
झोटा दे दे झुलावै[5] साथण मोरी ॥ १

राग – परज
ताल – धीमो तितालो

मोतीडा भरी छै माग
सुहागण किण नै सहेली[6] ।
आधा[7] सीस रा दुपटा सू वह गई
किण रसिया पर साग ॥ १

---

[1]ज्यो । [2]पहु चाय । [3]लागो । [4]पहरे । [5]झुलावेली । [6]सुहेली । [7]आधार ग. ।

राग – परज
ताल – होरी री

घालौ घालौ चपाबाग पनाभी
माई तीज सांवण री।
तीजणियां रा मीठा सुर सूं रयौ छ
लूरां रौ झुरमुट[1] लाग ॥ १
तीज गळै तीजणियां झूलै
रसिया नै द रस छाक।
सखि सहेल्यां मासिस देव
धण रौ मचळ सुहाग ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इकौ

सांवरो मोहि कूं सुहावै मे मा।
जानत हूं मनुकूल यौ तो बी
मांख लगी उवां सूं जावै म[2] मा ॥ १
होनी होय सु होय रहेगी
कोई कछु कहो सोई कोई मन भाव।
रसराज उवौ राखो मत राखो
साई मोरी तो ना छुटावै मे मा ॥ २

राग – पूरबी
ताल – इकौ

सांवरो लगन लगावत मे मा।
काहु कछु काम यहानें कोई
मपनें बगर में मावत म मा ॥ १
पूछो सास सघन कूं याको
सोन ममार को नहच महावत।

---

[1] भरपुर। [2] सखी। [3] रहे।

रसराज या नायक कू कोई
नही अनकूल बतावत अे मा ॥ २

राग – पूरवी
ताल – धीमो तितालो

कोयलिया बोली अबवा को डार ।
सुक सारचां[1] मिल भूलन लागे
भ्रमर करत भंकार ॥ १
नरतत[2] मोर पपईया बोलै
मदन नरेस रिंभावन वार ।
जगल मे मगल सो लाग्यो
आई रसराज बहार ॥ २

राग – पूरवी
ताल – धीमो तितालो

कळिया सावळ चुन चुन ला दा
गुथ दी अमीरल चौसर वारे ।
गाते बी थे उस वखत मे
सुन मुन उन्हा दी ताना ।
परिया बिरह दी मुस्ताक
न कर दी दिल न्यारे ॥ १

राग – पूरवी
ताल – होरी रो

कोठै बोली होती साभ समैं में या कोयलडी ।
मीलन कवळ सरा और नदिया
कुमद फूलण री बेळा रग भीनी ॥ १
एक जिसी छब[3] चद सूरज री
पथी* लेत बिसराम ।

---

[1]सारचो ख ग । [2]निरनत । [3]छिब । *पखी ग ।

फूली सांझ रसराज चंबेली रा
सुगध पवन में झकझोळी मलबेलो[1] ॥ २

राग – बरवै
ताल – बलद तिताली

मैंनू छाड न जा
हो लाला[2] यो देस बिरानो रे ।
कहा भयो जो मैं हु बिरानी
रसीलाराज तू सयानो रे ॥ १

राग – बरवै
ताल – बलद तितालो

आनें वाला हो लला फरियाद हमारी सुणजा ।
छतियां फट बिरहागन झड़ दा
मुखड़े[3] सें मुखड़ मिलाजा ॥ १

राग – बरवै
ताल – बलद तिताली

नजर निआरे दी यार
मन बस गईयां वे ।
रसामाराज महबूबां दी नजरां
फूट कलेज पार[4] ॥ १

राग – बरवै
ताल – बलद तिताली

मुख बीरा[5] कजरवा नैनू रांम
लाल लाल बिदलिया भाल बंमोयां ।
गोरी गोरी बहीयां हरो हरी चुरियां
भरी[6] मेतो गुजरी जात है मरम पनीयां ॥ १

---

[1] मलबेली नहीं । [2] ललाल प । [3] मीप । [4] मुखड़ा बू । [5] पाठर्म प्रति में नहीं । [6] बिरा । [7] हा पानी ।

राग – वरवै
ताल – दीपचदी

भर पावस मे मोरी अखिया
निभर हो रही रे हो[1] लता[2] विरहा के असवन तै ।
कौन चुगै उस वेदरदी विन
टप टप मोती हस वे ।। १

राग – वरवै
ताल – धीमो तितालो

घर आ मिलवे रग भीनी परी
तेरे वेखणै नू चादा मैडा जी घरी घरी ।
मन मुस्ताक हुवा महबूवा
नजर निजाकत खुसवोह भरी ।। १*

राग – वहार
ताल – इको

आई बहार कुसुम अद स्वेत हरे लाल
वर वरन बनि मानिक छवि हीर पना मोती खान
काम के वसत मित दीनी मानौ नजर जाकै ।
मधुर सबद करत नए
रस मई अ द मिल
पछी ते मनोज विद्या-सालन मे वाल पढै
रतिया औ द्यौस जाग सोभा विहालै ।। १

राग – वहार
ताल – इको

नवेली वसत
नए द्रुम वेल तहा रही खेल
परिभ्रत कजन वेलै भ्रमर भकृत ।

---

[1]हो' नहीं ग । [2]लाला ग । *आदर्श प्रति मे नहीं ।

नए भय पेसू
गुल पुग्ग पेसर
नयो ही पराग
हरषो मलयाचल भयो रसराज
जहां सोहैं भन भनें पंछी
सज के राधार्कष बहार गावत ॥ १

राग – बहार
ताल – इकी

पिया नइ कलियन नयो रस मत ल हो मोरे
वारी वारी रैन कूं जाय कैं।
धारिन में रसक जागत वैरी
भो सरीर चुभ हैं कटया लाग लाग ॥ १

राग – बहार
ताल – इकी

वसंत मनावो' लाला
भू सज के चल भाई है घर लाडली तिहारे
सारी हु सहेली साथ गडवा नयी लीनें हाथ
हरी हरो बिच उवाके डार भौर फूल झार' ॥ १
भाई है भेट अंबन के मोरन को मुकट भौर
केसुन के फूलन के कुंडल छबि भारे।
मधुर कोयल बोलन रसराज सो रिझावन कूं
रही है गाय रस भई छबि छाइ सो नई बहारें ॥ २

राग – बहार
ताल – इकी

बहार भाई राधे
उठ कें सज री सिंगार सोच में क्यूं सूती।

मनाओ।   झरै झ झ।

सांवरी आयी देख साझ
अवसही रसराज आज ।
तुही तुही सी धुन
कर कर बोल उठी तूती ॥ १

राग – वहार
ताल – जलद तितालो

वहार[1] मे आयी हे मा
आज[2] नवल-किसोरी जो री नाह ।
केसू रग मे पाग[3] रगी है
दुपटै चदनियें उवाह ॥ १
कमल[4] - वदन फूल्यौ अलबेलौ
औंह[5] - भ्रमरन की सराह ।
अम्रराई सी आस फली है
देखत देखत राह ॥ २

राग – वहार
ताल – जलद तितालो

आई वसत सकल वन बाग फूल हे
कुहक कोयलिया सरस बोलै ।
भ्रमर भ्रमत झक्रत रस भीने
समीर सुगध बहत झोलै ॥ १
सुक सार्यौं बोलत रसमाते
उनमन[6] भए मदन रग चौलै[7] ।
राधा-मोहन रसराज जहा मिल
मिल गलबहिया खेलै डोलैं ॥ २

---

[1]आज वहार । [2]'आज' नही । [3]पाघ । [4]कवल । [5]भौंह ख ग । [6]उनमनि ख उनमल ग. । [7]झोलैं ।

नए भव केसू
गुल पुरस केसर
नमो ही पगाग
हरयो मलयाचल भयो रसराज
जहां सोहैं झन झनै पंछी
सज के राधाकत बहार गावत ॥ १

राग – बहार
ताल – इकौ

पिया नइ कलियन नयो रस मत ल हो मोरे
वारी वारी रैन कूं जाय कै।
वारिन में रसक आगत वेरी
भौ सरीर चुभ हैं कटया लाग लाग ॥ १

राग – बहार
ताल – इकौ

वसंत मनावौ[1] लाला
चू सज के चल भाई है घर लाडली तिहारै
सारी हु सहेली साथ गडवा नयौ लीनैं हाथ
हरी हरो बिच उवाकैं डार भौर फूल भारै ॥ १
भाई है मेट भंबन क मोरन की मुकट भोर
केसुन के फूलन के कुंडल छबि भारे।
मधुर कोयल बोलन रसराज लो रिझावन कूं
रही है गाय रस मई छबि छइ सो नई बहारैं ॥ २

राग – बहार
ताल – इकौ

बहार भाई राधे
उठ कैं सज री सिंगार सोच में क्यूं सूती।

---

[1] मनावौ। डारैं व व।

सावरी श्रायी देख साझ
श्रवसही रसराज श्राज ।
तुही तुही सी धुन
कर कर बोल उठी तूती ।। १

राग – बहार
ताल – जलद तितालौ

बहार[1] मे श्रायौ हे मा
श्राज[2] नवल-किसोरी जो री नाह ।
केसू रंग मे पाग[3] रगी है
दुपटै चदनियै उवाह ।। १
कमल[4] - वदन फूल्यौ श्रलबेलौ
भौंह[5] - भ्रमरन की सराह ।
श्रंबराई सी श्रास फली है
देखत देखत राह ।। २

राग – वहार
ताल – जलद तितालौ

श्राई वसत सकल वन बाग फूल हे
कुहक कोयलिया सरस बोलै ।
भ्रमर भ्रमत झकत रस भीने
समीर सुगध बहत झोलै ।। १
सुक सार्यौं बोलत रसमाते
उनमन[6] भए मदन रग चौलै[7] ।
राधा-मोहन रसराज जहा मिल
मिल गलबहिया खेलै डोलैं ।। २

---

[1]श्राज वहार। [2]'श्राज' नही। [3]पाघ। [4]कवल। [5]भोह ख ग। [6]उनमनि ख उनमल ग.। [7]झोलै।

राग – बहार
ताल – जलद तिताली

कसियाँ चटक नई नई रस सी भरीली फूलत मा
फूलत बेल बिरछ मालती माधवी
महँ लहे कुंज कुंज विकस
त्यों सिरूज रहे गुंज भमरे
क्यारी केसरिया बिरवा
दिन दुपहरिया फूले ।
चंदन चंबेली चंपा
मधुधवा[1] महँदियो नवगुणा
भमभा केसु कदम कुंद नागबेल चंद्रकन्या खरजुरी हसती
कचनार
सेवें गुलतुररे गुलमुरस सेवती
प्रति डारन सुक बोलत सरसे
परिभ्रत धुन पपियन[2] सुन दपत[3]
हरख निहार
रसराज सारो सखियाँ झुलाय हो प्यारी पिय मिस झूलीं ।। १

राग – बहार
ताल – जलद तिताली

केसरिया सारो सीस हरयो भूप कंचवा छतियाँ हो लाल रंग लहंगो
पहरयो
वेणी फूल गूंथ सोंधे भीने साज मारे मारे चार तयार भारो
सीसफूल मणिमाल बिंदनिया मुक्तामाल विसाल
कजरारे दृग पहर नथनियाँ चमचम चुरियाँ लाल
रर चरान प गुरग महन्दिया पगया रमण निर्कुंज चली है
राय ब्रज-नारी पिया की प्यारी ।। १

---

[1] मधुपुरा । [2] पपीहा । [3] दर्पित ।

राग – वहार

ताल – जलद तितालौ

कोकिल मोर चकोर वोलै कुजन
चकवै मिल कीर कुमरी[1]।
अगन चंडूल त्यौ जरी तुररे
एक साथ सब ककनस पपऐ[2]।
आयौ रितुराज तामै भवरा-भवरी ।। १

राग – वहार

ताल – जलद तितालौ

कोयलिंया कुहक रही इक सार
सखि[3] अबवा की डार।
मजर सौं मिलती अलबेली
कलिया सू करतो प्यार ।। १
फल चाखती पत्र परसती
निरखती त्यौं फूल बहार।
रमती बन पिय[4] कौ रस लेती
रसराती रिझवार ।। २

राग – वहार

ताल – जलद तितालौ

परिभ्रत बोलै आली
सघन अबन की डार नवेली
पिछली रात रहै[5] रहै प्यारी।
फूल झरै और चटकै कलिया
खटकै अर हठ पनरी[5]।
त्यो हरे खेत दिस दिस मलिया[6] पुकारै ।। १

---

[1]कूमरी। [2]पए। [3]सखी। [4]पिया। [5]है ग। [5]पनडी। [6]मिलिया पुकारै आली।

राग – बहार

ताल – धमार तिताली

लंगरवा खेलौ फाग चली मधुवन कूं
जमुना पें कुंज कुंज कलियां चटकें
भंवरे गुंज गुंज डोलें
सस संग गहरौ सौंधा नीर अबीर लेलौ ।
मंजरीन की मुकट सुमार, कुंडल फूलवन केरे
पंसुरीन को चौसर में पहरू, किसलौ कचुवा मेरे करौ अबीर
पराग न को पिय
परिमल अस मकरंद बस[१] रस खिर केलौ मकेसे दोऊं ॥ १

राग – बहार

ताल – धीमी तिताली

बादरवा आए[२] आय झुके घन पपय्या[३] मुरबामा
मद बूंद बरस मेहा चाली सीत पौन कारे पीर स्वेत
सोहै अंगी अंधेरी राती ॥ १

राग – बहार

ताल – धमार तिताली

सखि[४] फूलवारी सोहै
सुरख केसरिया रंग रंग की
पिमरो स्वेत हरी सुखकारी ।
मालती माधवी चंदन चंबेली
स्वर्न[५] जूही सहकारे ।
केतकी कुंद चहु दिस
मदम केसर[६] की क्यारी ॥ १

---

[१]नहीं म । [२]बदरी । [३]आये । पपईमा । बरसें ध म । [४]सखी । [५]स्वरन । दिश दिस । [६]केसरि ।

राग — वहार

ताल — जलद तितालो

हरे द्रुम हरी लता हरे चीर भूपन हु
हरे हरे[1] वन मे मिल्यौ हर।
उवैसैही सिगार राधा आपस मे हेरे[2]
पावै नही लाग्यौ आनद भर॥ १

राग — वहार

ताल — त्यौंरो

वसत खेलै री जुवजन निकुज मिले
जुवति-जन[3] सग मे सुख फाग समै[4]
जहा होत नूपर का भन भन भमक
मुख तान तरग नवेली।
केसर उडत अबीर कपूर चदन
नीर फूल[5] वन गेंद भूलत हिंडोलै
यू रसाल कै त्रीया[6] मोहन कै सग
रगी समै वहार कै सुहेली॥ १

राग — बहार

ताल — त्यौंरो

समीर चालौ री,
दिस दिस सुगध भर्यौ
कोयल बोल त्यू अलिब्रद वन भ्रमै
नवीने सुकलियै उडत मुख कुसुम केसू रगीलो।
बोलत मधुर अनेक विहग नई नई डार पर रस बोल
यौ रसराज
सदा बन्यौ सुख रहे सुन सुन छक छक अैसो बहार
कै प्यालै॥ १

---

[1]हरे ख ग। [2]हरे। [3]जुवतिन ख ग। [4]'समैं' नहीं। [5]कुल। [6]त्रिया।

राग – बहार
ताल – चमक तिताली

कलियां चटक नई नई रस सी भरीली फूलत मा
फूलत बेल बिरछ मालती माधवी
महु लहे कुंज कुंज विकस
त्यों सिरूज रहे गुंज भमरे
क्यारी केसरिया बिरखा
दिन दुपहरिया फूले।
चंदन चबेलो चपा
मधुमवा' महदिया नवगुंजा
मचवा केसु कदम कुंद नागबेल चद्रकन्या सरजुरी हसंती
कचनार
तैसे गुलतुररे गुलसुरख सेवती
प्रसि बारन सुक बोलत सरसे
परिभ्रत धुन पपियन' सुन दंपत'
हरख निहार
रसराज सारो सखियां झुलाय हो प्यारी पिय मिल झूलें ॥ १

राग – बहार
ताल – चमक तिताली

केसरिया सारो सीस हरयो कुच कंचवा छतियां हो लाल रंग लंहगो
पहरयो
वेनी फूल गूंथ सोभे भीने प्राज कारे कारे वार सवार भारी
सीसफूल मणिमाल बिंदलिया मुकतामाल विसाल
कठसरी दस पहर मचनियां चमकत चूरियां लाल
कर चरनम पें सुरख महदिया फगवा रमण निकुंज चली है
सब व्रज-नारी पिया सों प्यारी ॥ १

मधुमुवा। चर्दन। दंपति।

राग – वहार

ताल – जलद तिताली

कोकिल मोर चकोर वोलै कुजन
चकवै मिल कीर कुमरी[1]।
अगन चंडूल त्यौ जरी तुररे
एक साथ सव ककनस पपऐ[2]।
आयो रितुराज तामैं भवरा-भवरी ॥ १

राग – वहार

ताल – जलद तिताली

कोयलिंया कुहक रही इक सार
सखि[3] अवया की डार।
मजर सौ मिलती अलबेली
कलिया सू करती प्यार ॥ १
फल चाखती पत्र परसती
निरखती त्यौ फूल वहार।
रमती वन पिय[4] कौ रस लेती
रसराती रिझवार ॥ २

राग – वहार

ताल – जलद तिताली

परिभ्रत बोलै आली
सघन अबन की डार नवेली
पिछली रात रहै[5] रहै प्यारी।
फूल झरैं और चटकै कलिया
खटकै अर हठ पनरी[6]।
त्यो हरे खेत दिस दिस मलिया[7] पुकारैं ॥ १

---

[1]कूमरी। [2]पए। [3]सखी। [4]पिया। [5]है ग। [6]पनडी। [7]मिलिया पुकारैं आली।

राग – मल्हार

ताल – चमक तितालो

लंगरवा खेलो फाग चलो मधुवन कूं
जमुना पैं कुंज कुंज कलियां चटकें
भंवरे गुंज गुंज डोलें
तस संग गहरो सौंधा नीर अबीर लेलो ।
मंजरीन की मुकट तुमारें, फूलल फूलवन केरे
पखुरीन को चोसर में पहरू, किसलो कचुवा मेरे करो अबीर
पराागन को पिय
परिमल अल मकरंद वस[1] रस खिर भेलो अकेले दोऊं ॥ १

राग – मल्हार

ताल – धीमो तितालो

बादरवा आए आय झुके घन पपय्या[2] मुरवामां
मंद बूंद बरस मह्रा चालो सीत पौन कारे पीर स्वेत
सोहै अ गी अबेरी राती ॥ १

राग – मल्हार

ताल – चमक तितालो

सखि[3] फूलवारी सोहै
सुरख केसरिया रंग रंग की
पियरो स्वेत हरी सुखकारी ।
मालती माधवी चदन चंबेली
स्वर्न[4] जूही सहकारें ।
केतकी कुंद बहु विध
कदम केसर[5] को क्यारी ॥ १

महीं न । [1]बसती । भाये । [2]पपईया । बरसें घ म । [3]सखी । [4]स्वरन । दिव दिव । केसरि ।

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

हरे द्रुम हरी लता हरे चीर भूषन हु
हरे हरैं[1] बन मे मिल्यौ हर।
उवैसैही सिगार राधा आपस मे हेरैं[2]
पावै नही लाग्यौ आनद झर ॥ १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

वसत खेलै री जुवजन निकुज मिले
जुवति-जन[3] सग मे सुख फाग समै[4]
जहा होत नूपर का झन झन झमक
मुख तान तरग नवेली।
केसर उडत अबीर कपूर चदन
नीर फूल[5] बन गेंद झूलत हिंडोलै
यू रसाल कै त्रीया[6] मोहन कै सग
रगी समै वहार कै सुहेली ॥ १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

समीर चालै री,
दिस दिस सुगध भरयौ
कोयल बोल त्यू अलिव्रद वन भ्रमै
नवीने सुकलियै उडत मुख कुसुम केसू रगीले।
बोलत मधुर अनेक विहग नई नई डार पर रस बोल
यौ रसराज
सदा बन्यौ सुख रहे सुन सुन छक छक असी बहार
कै प्यालै ॥ १

[1]हरे ख ग। [2]हरे। [3]जुवतिन ख ग। [4]'समैं' नहीं। [5]फुल। [6]त्रिया।

राग – बहार
ताल – त्यौरो

ससक सोहैं री,
ससि नव प्रकास भरचौ
सरवर वैसे ही नव नदी जल भरै सुहावैं
तहां फूलै कंवल और कुमुद मुनि मन मोहैं
चालत उडत पराग सुगंध श्रवत हैं
मोग भर मकरंद त्यौं कलहंस रमैं
अलि भ्रमैं कंजन में बहार को समै
सुख भरचौ बन्यौ है ॥ १

राग – बहार
ताल – धीमी तिताली

वहार आज आई छै जी पना राजकंवार।
कंवळ वदन सेवैं छ सुदर
नैन भंवर झकार।
केसू फूल पाघ केसरिया
अव मोर पट पीत सवार ॥ १

राग – बहार
ताल – धीमी तिताली

हेरी मा आज कोयलिया बोलै
अंबरहन की डारन पर मा।
अमृत बौर सौं गौर पकत हैं
जुवती जन घर घर मे आनंद सौं
लागी सिंगार सवारन पर
पन्नी पूनी धमारन पर ॥ १
बसत पदाम्‍ब आय द्रवी रस
रमीलाराज रिझयारन पर ॥ २

राग – बहार

ताल – जलद तितालौ

हरे द्रुम हरी लता हरे चीर भूपन हु
हरे हरै[1] बन मे मिल्यौ हर।
उवेसैही सिंगार राधा आपस मे हेरै[2]
पावै नही लाग्यौ आनद झर ।। १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

वसत खेलै री जुव्रजन निकुज मिले
जुवति-जन[3] सग मे सुख फाग समै[4]
जहा होत नूपर का झन झन झमक
मुख तान तरग नवेली।
केसर उडत अबीर कपूर चदन
नीर फूल[5] बन गेंद झूलत हिंडोलौ
यू रसाल कै त्रीया[6] मोहन कै सग
रगी समै बहार कै सुहेली ।। १

राग – बहार

ताल – त्यौंरो

समीर चालौ री,
दिस दिस सुगध भर्यौ
कोयल बोल त्यू अलिव्रद वन भ्रमै
नवीने सुकलियै उडत मुख कुसुम केसू रगीलो।
बोलत मधुर अनेक विहग नई नई डार पर रस बोल
यौं रसराज
सदा बन्यौ सुख रहे सुन सुन छक छक ऐसो बहार
कै प्याले ।। १

---

[1]हरे ख ग। [2]हरे। [3]जुवतिन ख ग। [4]'समै' नहीं। [5]कुल। [6]त्रिया।

राग – मल्हार
ताल – त्यौरो

ससक सोहैं री,
सखि नव प्रकास भरयो
सरवर वसे ही नद नदी जल भरे सुहावें
तहां फूल कंवल और कुमुद मुनि मन मोहैं
चालत उड़त पराग सुगंध प्रबल हैं
लोग झर मकरद त्यों मसहूस रमें
अलि भ्रमें कजन में मल्हार को समै
सुख भरयो बन्यो है ।। १

राग – मल्हार
ताल – धीमो तिताली

मल्हार आज आई छै श्री पना राजकवार ।
कंवळ वदन सेव छ सुदर
नन भंवर झकार ।
केसू फूल पाम केसरिया
भव मोर पट पील सवार ।। १

राग – मल्हार
ताल – धीमो तिताली

हेरी मा आज कोयलिया बोलै
अवराइन की डारन पर मा ।
अम्रत बांन तें कीर पढ़त हैं
जुवती जन घर घर मै आनद सौं
मागी सिंगार सवारम पर
फूली फूली अनारन पर ।। १
बसंत बदावम आव छकी रस
रसीलाराम रिझवारन पर ।। २

राग – बहार

ताल – धीमौ तितालौ

उदै भयौ ससि आलो ताकी साझ समै छुट चलंती किरणै
च्यारौ[1] ओर मै हु कैसी सोहै।
लस[2] रही रस मे भरी रतिया
वन वन चकोर चकवन कौ सोर
गल पहरै हार कर गडवा जहा लियै,
जुवती जन रसराज मिलत जुव जन कौ मन मोहैं ।। १

राग – बहार

ताल – धीमौ तितालौ

राधे मिल चली है सघन निकुज ता मे उमग सौ ।
मिल्यौ प्यारौ कान छानै गळबहिया लाऊ[3]
उड उड दीनी बतलाय विहग ।। १

राग – भटीयार

ताल – धीमा तितालौ

निजरा[4] तैडी रग दी सावळवे मैंनू बी रगी
साथ तुसाडे नू छाड न सक दी घडी वे ।
माल मकान दी परवा नदारद
आगै सुहाणे दै आके खडी वे ।। १

राग – भटीयार

ताल – धीमौ तितालौ

एतौ सईया छैला छै
ए छैला बाला बाका
बाका अलबेला अलबेला[5] ।
ना घणौ नही घणौ दिल या मे
रसराज नही छै अकेला ।। १

---

[1] च्यारू । [2] ल रही रसीली रतिया । [3] ला । [4] निजरयां । [5] 'अलबेला' नही ।

राग – भैरवी

ताल – मारो तिताला

वन वन बोल कोयल अंबुवा की डारी है मा ।
आईलो वसत सरस केसरिया
पिऊ आयो नां री ॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इकी

मारू बिलमा[1] लियो[2] हे कांमणगारी
किसो सरो सूं रसराज पीयारो[3]
बिन रो आंटो सूळजाय लियो है ॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इको[4]

सिधाव[1] चाकरी वालो राज ।
कांई नै करां म्हे उपाव सहेली
कोई राखे सेण आज ॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इकी

कलाळी ते मैंनूं मदवा पिलाय ।
मोहर तोल गुल सुरख केसर का
भर भर प्याले लाय[2] ॥ १

राग – भैरवी

ताल – इकी रेखता इको[4]

न्याज[1] भरी नाजो मा दिखलाई वे मैंनूं मेरी ज्यांम

---

[1]ताल–इकी ख म । [1]मान । मयी । पियारा री । [3]'री' नहीं म । [4]'रेखता इकी' नहीं । [5]'सिधावे चाकरी वाली राज' चरण नहीं । [6]रेखता इकी नहीं ख ताल इकी म । [1]लाय । [2]रेखता ताल में ख ताल–इकी म । मान । [7] ना कोर ।

दिल तरसता है मेरा
इतना तै क्या करतो गुमान ।
जलती है चिराक तेरे इस्क की
दिल मे हजार वेस तामे[1]
रसराज तेरा हुसन है[2] की बागबहार ।। १

राग – भैरवी
ताल – इकौ रेखता इकौ[3]

मुखडा ए महबूब तेरा दिसदाणी विच सावरे नुकाब[4]
सोहता री क्या खूब सावन के बदलै मे मानू महताब ।
मारा है बिन खून मुसाफर, तीर से नैन चला सताब
सो मुजे रसराज बता[5], साहब कू क्या देगी जवाब ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

कन्हईया काहे कु लगाई मोसौं[6] प्रीत ।
प्रीत लगाकर मिलन न करही
सावरे रग की रीत ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

किही बिरमायौ तेरौ कान कन्हईया
झूठी[7] गवालन दोस लगाती ।
मोरै सग वदिया करत बन बन मे
सो मोरौ जानै सांईया गुसाईया[8] ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

मोरा खेलत मोती वेसर का

---

[1] ता । [2] ही ख 'है' नहीं ग । [3] रेखता चाल मे ख ताल–इकौ ग । [4] नकाब ख ग, । [5] बताय । [6] मोसूं । [7] झूठी री ग । [8] सु साईया ग ।

अलौकिक नौसर का
गिर गया है स्याम तोरो होरियां में ।
यों ही गुजरिया चोरी देत[1]
तोरा कचुवा समाल पला दावन का ।
कैसा अलौलक नौसर का
गिर गया नां गुजरिया मोरो होरियां में तोरा ॥ १

वसन[2] चुरावै महि मटकिया मानें
रतनन की इचरज[3] को मानें
अब ही जाय बाबा नद पें पुकारूंगी
एतौ मान दियें ही बनेंगी
जवैसा अमोल अलौलक मोरा
जाल रहेंगा[4] तोरी होरियां में कैसें मोरा ॥ २

रतन झगामग नदराय घर
रूपा सोना कौ कबहु नहिं आदर
नहीं समाले को तूं मतवारो
मोही कूं समालम वै अगियां विहारी
अब ही लाय दूं याही वेर में
कहां जात है री मोरी होरियां में तोरा ॥ ३

देखो जू देखौ गवामन, बोलै
काहे कुसंगरू मोरी अखियां खोल
यूं सुन कचवा समाल्यौ गुजरिया को
चित मै आयौ[5] सो कियौ हाल वाकौ
रसीलेराज[6] एलै रतन गेंद दो
लाय दिये है अमी मोरो होरियां में तोरा ॥ ४

---

[1] प्र. । देत है व न । [2] बस । [3] इचर । [4] रहना । [5-5] इसके अंतर्गत का पाठ प प्रति में नहीं । [6] रसीला ।

दिल तरसता है मेरा
इतना तै क्या करतो गुमान ।
जलती है चिराक तेरे इस्क की
दिल मे हजार वेस तामे[1]
रसराज तेरा हुसन है[2] की बागबहार ।। १

राग – भैरवी
ताल – इकौ रेखता इकौ[3]

मुखडा ए महबूब तेरा दिसदाणी विच सावरे नुकाब[4]
सोहता री क्या खूब सावन के बदलै मे मानू महताब ।
मारा है बिन खून मुसाफर, तीर से नैन चला सताब
सो मुजे रसराज बता[5], साहब कू क्या देगी जवाब ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

कन्हईया काहे कु लगाई मोसौ[6] प्रीत ।
प्रीत लगाकर मिलन न करही
सावरे रग की रीत ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

किही बिरमायौ तेरौ कान कन्हईया
झूठी[7] गवालन दोस लगाती ।
मोरै सग वदिया करत बन बन मे
सो मोरौ जानै साईया गुसाईया[8] ।। १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

मोरा खेलत मोती वेसर का

---

[1]ता । [2]हो ख 'है' नहीं ग । [3]रेखता चाल मे ख ताल–इकौ ग । [4]नकाब ख ग, । [5]बताय । [6]मोसू । [7]झूठी री ग । [8]सु साईया ग ।

सोलक नौसर का
गिर गया है स्याम तोरी होरियां में ।
यों ही गुजरिया चोरी देत[1]
तोरा कचुवा समास पला दावन का ।
कैसा अलोलक नौसर का
गिर गया नां गुजरिया मोरी होरियां में तोरा ॥ १

वसन[2] चुराय महि मटकिया भानें
रतनन को इबरज को मानें
अब ही जाय बाबा नद पें पुकारूंगी
एतो मान दियें ही बनेंगी
नवैसा अमोल अलोलक मोरा
जात रहैगा[3] तोरी होरियां में कैसे मोरा ॥ २

रतन झगामग नदराय घर
रूपा सोना को कबहु नहिं आदर
नहीं समाल जो तू मतवारी
मोही कू समालन द अंगिया तिहारी
अब ही साय यूं माहो वेर में
कहां जात है री मोरी होरियां में तोरा ॥ ३

देखो पू देखो गवासन बोसे
काहे कुलगरू मोरी छतियां खोलें
यू सुन कंवधा समाल्यो गुजरिया को
चित मै आयो[4] सो कियो हाल वाको
रसीलेराज[5] एल रतन[6] गेंद दो
लाय दिये है अभी मोरी होरियां में तोरा ॥ ४

---

[1]। [2]देत हैं च प । [3]चप । [4]दचर । [5]रहूता । [6]-[6]इसके अंतर्गत का पाठ प प्रति में नहीं । [5]रसीला ।

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

वाकी[1] होरिया मे मै नहिं जाऊ री अमा।
आज गोकुल वरसानै गाव विच
जाझ मदलरा[2] वाजै[०] जुझाऊ[3]।
कुल की बहुरिया वेसक होय खेलू
पचू मे कौन सौ सुजस कैसै पाऊ॥ १
करू काम तौ उवैसौ[4] हो करू मा
साग जैसौ ही नाच बनाऊं।
रसोलेराज[5] नहिं जाऊ अवस[6] हो
जाऊ तौ जोतही कै आऊ री अमा मोरी॥ २

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

सावरौ बुलावै तौ मै आऊ री ननदिया।
सरम मरू व्रजगाव रै सोर पर
जुलम कियौ इन वस की वसरिया॥ १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

सावरौ मोही दै गयौ ताना
ना जानू री[7] कर गयौ की वहाना।
जो होय सौ रसराज होय अब
उसकै मिलनवा री अलबत जाना॥ १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालौ

चमकै चपा चीरा महबूबा।
चद-सा मुखडा चमकै वे रसराज

---

[1]उवाकी ख ग। [2]मदिल रा। [०]वाजै रै ग। [3]जुझाऊ। [4]वैसौ। [5]रसीला ख ग।
[6]अवस्य। [7]'री' नहीं ग।

अग वस्म चूड़ा चूड़ा ।
छाप छला और जेवर जरी
कठ-सिरी दा' हीरा ॥ १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालो

जिद लगी वे सांवरी हूर में
रोज गुजर दे उसी मचकूर में ।
रसराज मिलस्यां जरूर में
टपे दी तान गरूर मे ॥ १

राग – भैरवी
ताल – जलद तिताल

याम भरी परियूं दी मजर मियां
दीन जराई मओकसें ये ।
हासल हुई है ऊमेद पूर की
फजल इलाही क होती फजर मियां ॥ १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालो

भर[३] भर दे दी सराब दे प्याले
गिर गिर जांदा किये गया जीवा ।
चला जांदा रसराज ध्यान में
इस घड़ी सो टप दी तान में ॥ १

राग – भैरवी
ताल – जलद तितालो

झलकया सेल जे' हास पै
बितिमक रण के वो' गये ।

---
[१]हरीच पूरा चरहा नहीं । इलाई । [३]भे । [४]मैं बीवा च ग । [५]ग्यू सहियां ल क. ।
[६]मईमा ल म ।

चढया सिर चद आनद सै
वमै किरती के झूमक सै[1]।
ऊजाली रैण सौहेणी
फिरस्ते[2] जाद मोहेणी ॥ १

चमकता था उवो लस्करिया
की सिर पर चीरा* केसरिया।
चमकते नैण चगेणी
की सुरखै रग रगेणी ॥ २

दुलहणी ज्यू सभा - रैनू[3]
की बुलबुल गैद हजारै नू।
वौपारी ज्यू इजारै नू
मै नैणा दे निजारै नू ॥ ३

रहा सारी रैण मुझ सग उवो
लगा गया दिल कु इक रग उवो।
रहा भरपूर नैंनू मे
न सक दी आख बैनू सै ॥ ४

तरसती मीन पाणी नू
विरहणी ज्यान ज्यानी नू[4]।
चौमासै ज्यू वदरा झुक दा
न आसु नैण सै रुक दा ॥ ५

मिलावैं राझ नू कोई
जियावै दोस्त उवो मोही।
पनादे[5] उसकौ मे आईयाणी
रसराज दी दुवाइयाणी[6] ॥ ६

---

[1] झुमकै सैं। [2] फरस्ते। *चीर ग। [3] रनूं। [4] 'विरहणी ज्यान ज्यानी नू' चरण नहीं। [5] पना मैं उसकी। [6] दूवायांणी।

अग वस्त्र चूड़ा जूड़ा।
छाप छल्ला और जेवर जरी
कंठ-सिरी दा[1] हीरा ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताली

जिद लगी वे सांवरी छूर में
रोज गुजर दे उसी मधकूर में।
रसराज मिलस्यां जरूर में
टप्पे दी तान गरूर में ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताल

प्याज भरी परियूं दी नजर मियां
दीन जराई मजीकसें वे।
हासल हुई है उमेद दूर की
फजल इलाही क होती फजर मियां ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताली

भर भर द दी सराब दे प्याले
गिर गिर जांदा किये गया जीड़ा।
चला जांदा रसराज मान में
इस घड़ी सी टप्पे दी तान में[2] ।। १

राग – भैरवी
ताल – बलद तिताली

ममक्या सेल ज[3] हास पै
कितियक रण क यो[4] गये।

कीरा [1]पूरा चरण नहीं। इनाई। [2]भे। [3]मैं चीड़ा रा म। [4]क्यू, परियां म न। नहीं न न।

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

अलवेले चंपा चीर मे
विजळी सौ चमकै सरीर पियाजी[1] री
पिय री घटा की भीर मे ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

मारवणी आई महल में
सरद चद को चानणी सी* ।
पिय[2] मन रौ अंधियारौ दूर गयौ
सुख सैजा री सैन मे ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

रमझम वदरिया वरसै
मेरो प्यारौ वसै परदेसन में ।
रळ रह्यो क्यू अंजना अखियान मे
पायल[3] क्यू वाज दी झमझम ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

केसरिया चीरा चमकैणी
अमा तुरा सोनेरी बालाणी ।
रसराज सज कर आया नी दुलहा
औरता दी ज्यान विच चमकै झमकेणी ।। १

राग – भैरवी
ताल – धीमो तितालो

गुलसन की लेती वहार परी
खरी हरी विच घरी घरी मे मिया ।

---

[1]पियारीजी । *'सी' नही ग । [2]पिया । [3]पायलडी ख ग ।

राग – भैरवी

ताल – बसव तितालो

मोहो बे मैडी हीर निमाणी
क्या किया तेर रांझण[1] न ।
रसराज सौ स्याणा सीया सयाणी
इस्क कारण हो रही मै बियांनी ॥ १

राग – भैरवी

ताल – बसव तितालो

या नबी ईस्कदा की मांमला
मेहरबान[2] पूछ वा तूं करीमा ।
रसराज एक तीर खडी हीरां
एक तीर सांई तखत हजारे दा ॥ १

राग – भैरवी

ताल – बसव तितालो

वसजा चसमां वे बीच, नादाणिया वे ।
रसराज हरानी विरह कर जा तूं वे[3]
नहां दी नजरां स[4] सींच ॥ १

राग – भैरवी

ताल – बसव तितालो

सांवरा चसमां दे दरम्यान में
बस गया छैलडा मैंडडी ज्यांन में ।
यांन में बसड अुयान मैं रमजां
दिल[5] तो लगा है टप्पी दी तान में ॥ १

---

[1]रांझणो । [2]महरबान । [3]'वे' नहीं ग । [4]नजरां वे ख., निजरां सैं ग । [5]चसमों
[5]रसराज दी तब क्या भैरवी दी तान में ल म ।

रसराज जेही समसेर दी धार धार
इस्क दी[1] लडाई में सावरा तू मैनू मत मार मार ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमौ तितालौ

लौलीया[2] मिलिया बागा दे वीच
जिथे[3] फूलिया बेलिया वे ।
रसराज कैसी बहार बणी
गुलाब से सोन[4] चबेलिया वे ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमौ तितालौ

हमला ज्वानी[5] रुकदा सावळ नाही वे ।
मिल दा नी क्यू रसराज
ऊमर नादानी दा कमला ॥ १

राग – भैरू
ताल – चौतालौ

एहो गुरु तैं मोरा जोसीया बताय मोहिकु[6]
उवो दिन कब मिल हैं प्यारौ नवल लाला ।
जब तै विदेस गयौ, तब तै है यो हाल
आतुर भई है सारी ब्रजबाला ॥ १

राग – भैरू
ताल – चौतालौ

स्रवन भनक परी एरी मेरी माई उवाही दिसन तै
जाही दिसकु खेलै कुवर[7] कान ।
गईया चरावै बैन बजावै
मन भरमावै लो मधुर तान ॥ १

---

[1]इस्क की। [2]लियां। [3]जिथा ख जिथ ग । [4]सोवन। [5]ज्वानी दा ख ग । [6]मोकू। [7]कवर।

चम्मा लगा[1] रसराज स्यराव दा[2]
ईस्कदे[3] नेनूं से देस नवेली ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमी तिताली

ढूंढ दी भूक दी नी हीर निमाणी
रांझे दा मुकाम वे लोको।
वस्ता नी हेरी वारी वे जगल भी हेरया मेरा मियां
नहिं पाया वे विसराम ॥ १

राग – भैरवी
ताल – जमद तिताली

तेरे वेखणे दी मनू लाग वे मियां रांझा।
रसराज हीर निमाणी मांझ दी
रन गुजारी केई जाग जाग ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमी तिताली

परियूं दे[4] नेन निआर दी
हवा चलदी रेंदी खुसबोही मियां।
होरे[5] ह भंवर चस्म भास्कां दे
गुल खिले दिल से हरियूं दे ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमी तिताली

रमजां तेरी यार यार
दिल विच भगियां मेरे दिमदार स्यापा[6]।

मसा राम। [1]सराब दा। [2]ईस्कदे पूरा चरण नहीं। [3]"परियूं दे नैन निआरं दी" नहीं।
[4]हो रहे य। [5]भास्कम। [6]वे। [7]स्याणी

रसराज जेही समसेर दी धार धार
इस्क दी[1] लडाई में सावरा तू मैनू मत मार मार ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमौ तितालौ

लौलीया[2] मिलिया बागा दे वीच
जिथे[3] फूलिया बेलिया वे ।
रसराज कैसी बहार बणी
गुलाब से सोन[4] चबेलिया वे ॥ १

राग – भैरवी
ताल – धीमौ तितालौ

हमला ज्वानो[5] रुकदा सावळ नाही वे ।
मिल दा नी क्यू रसराज
ऊमर नादानी दा कमला ॥ १

राग – भैरू
ताल – चौतालौ

एहो गुरु तैं मोरा जोसीया बताय मोहिकु[6]
उवो दिन कब मिल है प्यारौ नवल लाला ।
जब तै विदेस गयौ, तब तै है यो हाल
आतुर भई है सारी ब्रजबाला ॥ १

राग – भैरू
ताल – चौतालौ

स्रवन भनक परी एरी मेरी माई उवाही दिसन तैं
जाही दिसकु खेलै कुवर[7] कान ।
गईया चरावै बैन बजावै
मन भरमावै लो मधुर तान ॥ १

---

[1]इस्क की। [2]लियां। [3]जिथा ख जिथ ग । [4]सोवन। [5]ज्वानी दा ख ग । [6]मोकू। [7]कवर।

मोर मुगट कट काछनी काछ
पीत पिछोरा उर्मसो छिब को निधान ।
रसीलेराज जागिया की मिहरतें
गोकुल त्रियन के वस किए है प्रान ॥ २*

राग – भैरु
ताल – चलत तितालो

कोकिल मोर चकोर मराल
बोलत हैं उपवन वन¹ ।
सुक चातक चकवा² मिल सारस
मत्त भवर भमरीगन ॥ १
बिहर रहे उन वन छबि छाके
देखत फूली बहार फूले मन ।
रसीलोराज सहेलिन के सग
लाडली राधा लियैं ललन ॥ २*

राग – भैरु
ताल – धीमी तिताली

रग बरसत भयौ ।
रसराज भाज मिलत भये दपत
नई दुलही दुलहन नयौ ॥ १

राग – भैरु
ताल – धीमी तिताली

तोसे मोरा जीरा लागा बिरहईया मोरे ।
मे सौ सहयो न जावे बिरहा मोस ।
रसीलाराज मोरा दरद न देखे तू तो
मै तो निरदई रई तिहारे भरोसे ॥ १

---

*दूसरा पद नही ब म । ¹बे प । ²चकवी म । *दूसरा पद नही ब म । यह गीत भावर्प प्रति मे नही । ³ठंसौं । यह गीत भावर्प प्रति मे नही ।

राग – मल्हार

ताल – गाठ चौतालौ

सोह्नी बूद लागत है मोरी माई ।
ऊमड्यौ घन विजली चमकत है
मुरवन धूम मचाई ॥ १

सीतल मद सुगध पवन उवै-सौ
हरे विरछन लता लपटाई ।
कुज भवन रसराज मिलन कू
पिय की जात बुलाई ॥ २

राग – मल्हार

ताल – चौतालौ

उमड आयौ मेघ चहु दिस एरी राधे
सघन धार छूट अवर छायौ है ।
सियरौ सुगध भर्यौ पवन बहैन[1] लाग्यौ
मुरवन त्यौ मिल सोर मचायौ है ॥ १

हरे द्रुमबेल रहे लपट लपट उवैसै
जल भरे ताल समै सबन सुहायौ है ।
आयौ आज रसराज पिया कू देख
आज हो[2] आखन कौ फल पायौ है ॥ २

राग – मल्हार

ताल – चौतालौ

उमड घुमड नभ चक्र कारे पियरे सुरग
सुकल धुम्र वादर आए हैं चढ उवा पै लाला ।
तनत इद्रधनुस चमकै चपला त्यौ धारा छूटै
मारुत झकझोलत[3] द्रुम वेल माला ॥ १

---

[1] वहन ख । [2] 'ही' नही ग । [3] झकझोरत ।

मुरव मल्हार गाव पपय्या मन भाय
बोरा सोहत बक-पत ऊडत, चहुदिस स्यों विसाला।
प्रतिदिन मग निरखत, घन ज्यों चातक[1] प्यार
चालहु प्रब कप रह्यो है व्रजबाला[2] ॥ २

राग – मल्हार
ताल – चौताली

सियरो पवन चारो[3] ह्यो कान्ह चहु दिस कूं
एते मांह सिहर उठत सुरस धुम्र कोर पियरे।
सुरधनु तनियत उडत बकपत
भविरल प्रबल परत सलिल धार।
परिभ्रत धुन मुरवन सुर सोहत धरनि
भमर देखत पावत सुख ह्यो में हियर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – चलत तिताली

उमड भाए री मा[4] बदरा
चमकन लागी बीज।
सब ही गोरी सज सज मिळ गावत
तरुणी खेलन तीज ॥ १
मै भी कहै तो जाऊं सासरिया
मोहि न करै जो तूं खीज।
रसराज राधा-कुंवर यूं चाली
सांवरे मिळन को रीझ ॥ २

राग – मल्हार
ताल – चलत तिताली

निमख न भूल्यौ री आवै
उन बेदरदी कौ नेह।

---

[1] चातक। [2] व्रिज की बाला। [3] चारो [4] 'एते' क ग। [5] 'मा' नहीं।

राग – मल्हार

ताल – गांठ चौतालौ

सोहनी वूद लागत है मोरी माई ।
ऊमड्यौ घन विजली चमकत है
मुरवन धूम मचाई ।। १

सीतल मद सुगध पवन उवै-सौ
हरे विरछन लता लपटाई ।
कुज भवन रसराज मिलन कू
पिय की जात वुलाई ।। २

राग – मल्हार

ताल – चौतालौ

उमड आयौ मेघ चहु दिस एरी राधे
सघन धार छूट अवर छायौ है ।
सियरौ सुगध भर्‌यौ पवन वहैन[1] लाग्यौ
मुरवन त्यौं मिल सोर मचायौ है ।। १

हरे द्रुमवेल रहे लपट लपट उवैसे
जल भरे ताल समै सवन सुहायौ है ।
आयौ आज रसराज पिया कू देख
आज हो[2] आखन कौ फल पायौ है ।। २

राग – मल्हार

ताल – चौतालौ

उमड घुमड नभ चक्र कारे पियरे सुरग
सुकल धुम्र वादर आए है चढ उवा पै लाला ।
तनत इद्रधनुस चमकै चपला त्यौ धारा छूटै
मारुत झकझोलत[3] द्रुम वेल माला ।। १

---

[1] वहन ख । [2] 'हो' नही ग । [3] झकझोरत ।

मोर मुगट कट काछनी काछ
पीत पिछोरा उबैसो छिब को निधान।
रसीलेराज जोगिया की मिहरतें
गोकुल त्रियन के बस किए है प्रान ॥ २*

राग – मैरू
ताल – धमद तितालो

कोकिल मोर चकोर मराल
बोलत हैं उपवन वन[1]।
सुक चातक चकया[2] मिल सारस
मत्त मंवर भमरीगन ॥ १
बिहूर रहे उन मन छवि छाके
देखत फूली बहार फूल मन।
रसीलाराज सहेलिन के संग
लाडली राधा लियैं मलन ॥ २*

राग – मैरू
ताल – धीमो तितालो

रग बरसत भयो।
रसराज आज मिलत भये दपत
नई दुलही दुलहन नयो ॥ १

राग – मैरू
ताल – धीमो तितालो

तोसे[1] मोरा जीरा लागा बिरहईया मोरे।
मे तो सहयो न आवे विरहा मोस।
रसालाराज मोरा दरद न देख तूं सो
मै तो निरखई रई विहार भरोस ॥ १

---

*दूसरा पद नहीं ख ग। [1]बेन। [2]चकवी ग। *दूसरा पद नहीं ख प। [1]यह गीत आदर्श प्रति मे नहीं। [2]ईसौ। यह गीत आदर्श प्रति मे नहीं।

एक नेह दूजौ चढ आयौ
यौ सावन कौ मेह ।। १
तीसरौ विरह ऐसै है सजनी री
कैसै कहु जळ जावेगी देह ।
रसराज अब तौ जानत हु न दैगौ
सावरौ[1] सनेही मैनू छेह ।। २

राग – मल्हार
ताल – जलद तितालौ

याही रितु मे लगी अमा
सावरै सनेही सु लगन ।
याकौ दरद करतार जानत है
कै जानत मेरौ मन ।। १
आयौ सावन अब तौ आवैगौ
कौल निभावैगौ कियौ है वचन ।
रसराज उवाकौ विरह-विख कैसौ
मीठौ अम्रत सौ मिळन ।। २

राग – मल्हार
ताल – धीमौ तितालौ

बालम रे मोरा सावरा नदकवर बर ।
जाकै वस तू भयौ अलबेला
ग्रैसी को मोही तै नागर ।। १
कौन ग्यान तै सीख्यौ सुधरमी
अपनी तजत बिना ही दोख पर
निठुर लगरवा तू पर घर जा
आक ग्रहत अबा परहर ।। २

[1] सावरै ग ।

मुरव मल्हार गाव पपय्या मन भाव[१]
मोल सोहत थन-पस ऊडत, चहुंदिस रमों विसाला।
प्रतिदिन मग निरखत घन ज्यों चातक[२] प्यार
बालहु भय कप रही है ब्रजबाला[३] ॥ २

राग – मल्हार
ताल – चौताली

सियरो पवन भागो[१] हा कान्ह चहु दिस फूं
एवें मांह सिहर उठत सुरख धुम्र कोर पियरे।
सुरधनु तनियत उडत बकपत
अविरल प्रबल परत सलिल धार।
परिभ्रस धुन मुरवन सुर सोहत बरनि
भवर देखत पावत सुख हों में हियर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – जमद तिताली

उमड आए री मा[२] बदरा
चमकन लागी बीज।
सब ही गोरी सज सज मिळ गावत
तरुणो खेलन तीज ॥ १
मै भी कहै तो जाऊ सासरिया
मोहि म बर जो सूं खोज।
रसराज राधा-कुंवर यूं भाखी
सांवर मिळन की रीझ ॥ २

राग – मल्हार
ताल – जमद तिताली

निमग म भूल्यो री जावै
उस बेदरदी को नेह।

---

[१] बादल। [२] प्रिय की बाला। [३] बादरी। [१] एवं बा न। [२] 'मा' नहीं।

या अलवेले सुखद समै मे
रसीलेराज[१] पिय पाये ।। २

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

मोर बोल्लन लागे पपीहरा ।
सावन मे मनभावन बी[२] नही
सारी रैन के जागे ।। १

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

स्याम हिंडौरै भूलै
संग किसोरीजी कै ।
सघन कुज चपा औ[*] चवेली
जहा द्रुम वेली फूलै ।। १
रतन जटित[३] पटरो कचनमय
रग रग की गूथी मखतूलै ।
°सखी सुहागन देत भूलाना
या छिब निमख न भूलै° ।। २

राग – गौड मल्हार
ताल – गाठ चौतालौ

कन्हईया[४] आयौ मेघ उमड सिर मोरै हो ।
लागहु गळ रसराज डरत मे
आज कियौ[५] सिरजोरै ।। १

राग – गौड मल्हार
ताल – गाठ चौतालौ

हो कन्हइया, बंहिया मेल मिल मिली द्रुम वेली हो ।

---

[१]रसीलाराज ग । [२]विन ही ग । [*]और ग । [३] °-°इसके अतर्गत का पाठ ग मे नहीं । [४]'कन्हईया' आदि मे नही है, अपितु 'सिर मोरे हो कन्हइया है । [५]कौ यौ ।

राग – मल्हार
ताल – धीमो तिताला

हो हर हर हर हर महादेव घन ह्व गगाधर।
जग पर परसन आयो।
सकल सरूपो धारा छूट कर
पवन नाथ को चलायो सकल आनद कर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – धमद तिताला

आज धन भाग मोरे
नटनायक घर आयो।
सुभ दिन सुभ रजनी सजनी री
मोतियन म्हे[१] बरसायो ॥ १

राग मल्हार
ताल – होरी री

आज रग लाग रह्यो स्याम सुंदर क द्वार।
नवल कुवर वृषभान-नदिनी
सज आई है सिंगार ॥ १

राग – मल्हार[२]
ताल – होरी री

उमड घुमड घन आये सहेली री
जग-जीवन मन भाये।
देखत देखत कारे पियर[३]
सब दिग-मंडळ छाये ॥ १
बडी बडी बूद परत है सीतळ
मुरवा बोलत सबद सुहाय।

हर २ बार है ग। मेह ग। राग-सोरठ मल्हार ताल-होरी और राग मल्हार ताल होरी ग। इस प्रकार पुनरावृत्ति हुई है। उमड-घुमड ग। [३]पियरे में ग।

राग – मिया की मल्हार

ताल – होरी रौ

चमक माई वादर विजरिया री

बोली कोयल बगवा मे कूक मचा।

गरजत वरसै सोहती

मही बूद नाचै मिल[1] मोर ।। १

राग – मारू

ताल – धीमौ तितालौ

चालौ नै स्याम्राजी म्हारा मारू हो

मारवणी आई महैल[2] मे।

चानणी चौक मे सेज फूला री

मौहर तोळा रौ दारू हो ।। १

सग सहेल्या रै लागै जिण आगै

किरता मे चद उतारू।

रसीलाराज देखण नै मिलण नै

वण-ठण नै था सारु हो ।। २

राग – मारू

ताल – धीमौ तितालौ

मारूडौ मारवी दोऊ चौसर खेलै छै आज।

चद्र महैल[3] री अटारी की चानणी मे

सारी सहेल्या रै समाज ।। १

विच विच नौक-चौक री वतिया

नटता करता लाज।

वाज रही छै तीवा वाजणो

रग बण्यौ छै रसराज ।। २

---

[1]मिले। [2]महला। [3]महल।

राग – मल्हार
ताल – धीमो तिताली

हो हर हर हर हर[1] महादेव घन ह्व गंगाधर।
जग पर बरसन आयो।
सकल सरूपी धारा छूट कर
पवन नाथ को चलायो सकल आनंद कर ॥ १

राग – मल्हार
ताल – धमार तिताली

आज धन भाग मोरे
नटनायक घर आयौ।
सुभ दिन सुभ रजनी सजनी री
मोतियन म्हे बरसायौ ॥ १

राग मल्हार
ताल – होरी री

आज रंग लाग रह्यौ स्याम सुंदर के द्वार।
नवल कुंवर वृसभान-नंदिनी
सज आई है सिंगार ॥ १

राग – मल्हार[2]
ताल – होरी री

उमंड घुमड घन आये सहेली री
जग-जीवन मन भाये।
देखत देखत कारे पियरे[3]
सब दिग-मंडळ छाये ॥ १
बडी बडी बूंद परत है सीतळ
मुरवा बोलत सबद सुहाये।

---

[1]हर ४ बार है म मेह म। [2]राग-सोरठ मल्हार, ताल-होरी और राग मल्हार ताल होरी म। इस प्रकार पुनरावृत्ति हुई है। उमड-घुमड म। [3]पियरे में म।

या अलबेले सुखद समै मे
रसीलेराज[1] पिय पाये ॥ २

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

मोर बोलन लागे पपीहरा ।
सावन मे मनभावन वी[2] नही
सारी रैन के जागे ॥ १

राग – मल्हार
ताल – होरी रौ

स्याम हिंडोरै भूलै
संग किसोरीजी कै ।
सघन कुज चपा औ[2] चबेली
जहा द्रुम वेली फूलै ॥ १
रतन जटित[3] पटरो कचनमय
रग रग की गूथी मखतूलैं ।
°सखी सुहागन देत भूलाना
या छिब निमख न भूलै° ॥ २

राग – गौड मल्हार
ताल – गाठ चौतालौ

कन्हईया[4] आयौ मेघ उमड सिर मोरै हो ।
लागहु गळ रसराज डरत मे
आज कियौ[5] सिरजोरै ॥ १

राग – गौड मल्हार
ताल – गांठ चौतालौ

हो कन्हइया, बंहिया मेल मिल मिली द्रुम वेली हो ।

---

[1]रसीलाराज ग । [2]विन ही ग । [2]और ग । [3] °-°इसके अतर्गत का पाठ ग मे नहीं । [4]'कन्हईया' आदि में नही है, अपितु 'सिर मोरे हो कन्हइया है । [5]कौ यौ ।

सावन में रसराज मानती हु
मान तजत अलबेली ॥ १

राग – गौड़ मल्हार
ताल – चमद तितालो

चमकै छै चंगा केसरिया चीरा।
तुररा सोनै री किलंगी चमकै
कंठसरी रा हार ॥ १
कानां सोहै मोती सिर सिर सोभा
दुपटा केसरिया जरी रा।
रसराज घर आया सावण में
म्हांरी वाली नणद रा वीरा ॥ २

राग – गौड़ मल्हार
ताल – चमद तितालो

झुक झूम झूम बदरा
बरसन लागे नांनी बूंदन तें।
रसराज पिया अजहु नहीं आए
विरह लता रही लूंम लूंम ॥ १

राग – गौड़ मल्हार
ताल – चमद तितालो

नवल विहारीजी री देखो ए मा प्रीत।
आपां सुं और दूसरां और ही
ए पकड़ा छ अनोखी नीत ॥ १
स्याता प्रीत बणावै बतीयां
पीछ दिखाव नादांनी अनीत।
रसराज अब तो पिछाणियें एही
म्हो नायक की गीत ॥ २

चा। च न।

राग – मिया की मल्हार

ताल – होरी रौ

चमक माई वादर विजरिया री
बोली कोयल बगवा मे कूक मचा।
गरजत वरसै सोहती
मही बूद नाचै मिल[1] मोर ॥ १

राग – मारू

ताल – धीमौ तितालौ

चालौ नै स्याबाजी म्हारा मारू हो
मारवणी आई महैल[2] मे।
चानणी चौक मे सेज फूला री
मौहर तोळा रौ दारू हो ॥ १
सग सहेल्या रै लागै जिण आगै
फिरता मे चद उतारू।
रसीलाराज देखण नै मिलण नै
वण - ठण नै था सारु हो ॥ २

राग – मारू

ताल – धीमौ तितालौ

मारूडौ मारवी दोऊ चौसर खेलै छै आज।
चद्र महैल[3] री अटारी की चानणी मे
सारी सहेल्या रै समाज ॥ १
विच विच नौक-चौंक री वतिया
नटता करता लाज।
वाज रही छै तीबा वाजणी
रग बण्यौ छै रसराज ॥ २

---

[1] मिले। [2] महला। [3] महल।

राग – माड
ताल – धीमी तिताली

सायधण साहूबौ[1] दोऊं चौसर का रिझवार।
रतनभई पासा राज छ
सुंदर सोनै को सार॥ १
बाजी लाग रही छ आपस में
जामन सखी जिणवार।
इतर सुन[2] सवाय पियाजी
नटण न पावे पार[3]॥ २

राग – माड
ताल – होरी री

माड विछड़ेली प्रास
रयण भव यौवन लागो।
रे चंदा खट मास की कर दै
गौकळ सरद की ज्यूं रात॥ १
भरीयारी हु घरी न बजा सूं
मन की मन में रह जावेली बात।
तीन पौहर रसराज घड़ी सा
रगीला बालम रो साथ॥ २

राग – माड
ताल – होरी री

कुंज भवन की रसियां
बिसारी बिसर नहीं जासी।
फूले चंपक फूल चमेली
मौर बहु बिरछन लसियां॥ १

---

[1]साबवी। [2]सुन। [3]मार।

राग – मिया की मल्हार

ताल – होरी री

चमक माई वादर विजरिया री
बोली कोयल बगवा मे कूक मचा।
गरजत वरसै सोहती
मही बूद नाचै मिल[1] मोर ।। १

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

चालो नै स्याबाजी म्हारा मारू हो
मारवणी आई महैल[2] मे ।
चानणी चौक मे सेज फूला री
मौहर तोळा री दारू हो ।। १
सग सहेल्या रै लागै जिण आगै
किरता मे चद उतारू ।
रसीलाराज देखण नै मिलण नै
वण - ठण नै था सारु हो ।। २

राग – मारू

ताल – धीमो तितालो

मारूडी मारवी दोऊ चौसर खेलै छै आज ।
चद्र महैल[3] री अटारी की चानणी मे
सारी सहेल्या रै समाज ।। १
विच विच नौक-चौंक री वतिया
नटता करता लाज ।
वाज रही छै तीबा वाजणी
रग बण्यो छै रसराज ।। २

---

[1] मिले । [2] महला । [3] महल ।

राग – माड
ताल – धीमी तिताली

सामघण साहृबी[1] दोऊं चौसर का रिझवार ।
रतनमई पासा राज छ
सुंदर सोनै को सार ॥ १
बाजी लाग रही छ आपस में
जामन सखी जिणवार ।
इतर सुन[2] सवाय पियाजी
नटण न पावै पार[3] ॥ २

राग – माड
ताल – होरी री

माड विछड़ैली प्रात
रयण अब बीतन लागी ।
रे घणा झट मास की कर दै
गोकळ सरद की ज्यूं रात ॥ १
घरीयारी हु घरी न बजा सूं
मन की मन में रह आवेली वात ।
तीन पोहर रसराज घड़ी सा
रंगीला वालम री साथ ॥ २

राग – माड
ताल – होरी री

कुज भवन की रसियां
विसारी विसरै नहीं भामी ।
फूले चपक फूल चंमेली
मौर बहु विरछन मतियां ॥ १

---

[1]सायबो । [2]सुन । [3]मार ।

मोहन चन्द्र मुख सौ[1] मैं सुनी जे
अम्रत प्रीतरस भरी बतिया ।
लाग मिली जे रसराज सावरै
छैल छबीलै - सौ[2] छतिया ।। २

राग – मालकोस
ताल – जलद तितालौ

आई री बहार नय्यौ रग ल्याई माई ।
विनु ही बदरिय्या कै बरसत जळ
भूम बेलरियन उ च्छाई[3] ।। १
पुस्प परागन की अधिय्यारी
मुरवन - सी पिक धुन सरसाई ।
लेहै बुलाय कनाई ।। २

राग – मालकोस
ताल – जलद तितालौ

निजारे नाल मोही राझण वालिया ।
जग सयालै छोडी जागीरी स्यहर हजारै[4] दै ईजारे ।। १

राग – माझ
ताल – इकौ

आलीजा रिझवार छो जी म्हारा सायबा ।
नैणा रा लोभी पनाजी राजगहेला मारू
साईना सिरदार सजदार[5] ।। १

राग – माझ
ताल – इकौ

कोई सैण मनावै
म्हासू मारूजी रूठडा जावै रे ।
रसराज काई जाणा कुण भरमावै
म्हे किस भांत मनावा बिलमावा जी ।। १

---

[1]मुख सोम । [2]सू ख सा ग. । [3]'उ' नहीं ख ग । [4]'हजारै' नहीं ग । [5]'सजदार' नही ।

राग – मांझ
ताल – इको

गूंघटड़ो मगज कर छ मांहरा राज ।
सामा दोय कदम थो साहबा[1]
नोछावर लायक छै ।। १

राग – मांझ
ताल – इको

रस ल बेलड़ियां री भवरां[2] रे ।
या रित आवे छ वसत दुहेली
रसराज मीकी नवेलड़ियां री ।। १

राग – मांझ
ताल – इको

सेता आजो जी[3] सलांम म्हारी
नीले रा असवारा जी ।
रसराज अलबेला नवेला सिरदारा थे
थोड़ो सो मह्लो थो मे नैणा रा रिझवारोजी ।। १

राग – मांझ
[illegible] ताल – इको

अरी रो तारो चमक छ
भूवो विच गोरियो ए[4] ।
रसराज मथनो म्हेंधो[5] चमकै
हार चमक मोसरी रो प्यारो ।। १

राग – मांझ
ताल – इको

तेरे माम जोराजोरो, थारो नही वे मेरे सामा ।

---

[1] साहबा । [2] भवरे । [3] 'जी' नहीं न । [4] गोरियां ए अरी रो तारो । अरी री [illegible]
[illegible] है न होकर ज्यों में है । [5] म्हेंथो ।

बाबल छोडावा री वेग्रमानी छोडी वे मीया
सब सै गई तोसै जोरी ॥ १

राग – माझ
ताल – इको

राझै दी सूरती भूल दी नहीया[1] वे लोका[2] मे ।
लोक न जाणं उत्रारी वे
केहा बेदरदी वे मीया
ग्रजब इलाही कुदरती ॥ १

राग – मांझ
ताल – जलद तितालो

छोडो छोडो बालम हाथ राज
नाजक बहिया उभट जायली म्हारी ।
वेसर डाड बाक पडी ग्रौर
सालूडो रह्यो छै मुरभाय राज ॥ १

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

नणदल गवरल री यो ग्रायो छै सुहाणो तिंवार ।
सात सहेल्या मिलकर द्यो नै
सावळडी नै सिणगार ॥ १
सीसफूल बाजूबध सवारो
गजरा चौसर हार ।
रसराज इण तूठा[3] घर ग्रासी
ग्रालीजा रिझवार ॥ २

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

भीजै भीजै चुनडी सुरग राज
केसर ग्रगीया रग*चुवै म्हारी ।

---

[1]नईया । [2]लोको । [3]वूठा ग । *चुवै ग्रै ग ।

राग – मांझ
ताल – इकी

गूघटड़ो मगण कर छ म्हांहरा राज।
सोमा घोम कदम घी साहबा[1]
मोछावर लायक छै ॥ १

राग – मांझ
ताल – इकी

रस सै बेलड़ियां री भवरां[2] रे।
या रित आवे छ वसंत दुहेली
रसराज नीकी नवेलड़ियां री ॥ १

राग – मांझ
ताल – इकी

नेता आओ जी[3] सलाम म्हारी
नीले रा असवारां जी।
रसराज अलबेला नवेला सिरदारां थे
थोड़ी सी महोली घो म नेणां रा रिझवारांजी ॥ १

राग – मांझ
१८ ताल – इकी

जरी री तारो चमक छ
मूंवां बिच गोरियां ए[4]।
रसराज नयनी म्हैंघो[5] चमके
हार चमकै नौसरी री प्यारो ॥ १

राग – मांझ
ताल – इकी

तेरे माल जोराजोरी, चोरी नही वे मेरे लाला।

साहबा। [2]भवरे। [3]'जी' नही प। [4]'गोरियां ए जरी री तारो। जरी री तारो' आदि के न होकर पंत में है। [5]महघी।

बाबल छोडावा री वेग्रमानी छोडी वे मीया
सब से गई तोसें जोरी ॥ १

राग – माभ
ताल – इकौ

रांभै दी सूरती भूल दी नहीया[1] वे लोकां[2] मे ।
लोक न जाणे उत्रारी वे
केहा बेदरदी वे मीया
ग्रजब इलाही कुदरती ॥ १

राग – मांभ
ताल – जलद तितालौ

छोडौ छोडौ बालम हाथ राज
नाजक बहिया उभट जायली म्हारौ ।
वेसर डांड बाक पडी ग्रौर
सालूडौ रहचौ छै मुरभाय राज ॥ १

राग – माभ
ताल – जलद तितालौ

नणदल गवरल रौ यौ ग्रायौ छै सुहाणौ तिवार ।
सात सहेल्या मिलकर द्यौ नै
सावळडी नै सिणगार ॥ १
सीसफूल बाजूबध सवारौ
गजरा चौसर हार ।
रसराज इण तूठा[3] घर ग्रासी
ग्रालीजा रिभवार ॥ २

राग – माभ
ताल – जलद तितालौ

भीजै भीजै चुनडी सुरग राज
केसर ग्रगीया रग[*]चुवै म्हारी ।

---

[1]नईया । [2]लोकौ । [3]वूठां ग । *चुवै ग्रै ग ।

फूल मार[1] जिन मारो मोहन
ऊभटे[2] छ माजक मगराज ॥ १
किसी तरां सु पिचकार चलावो छो
वदन मिलावो छो सूको रग।
पीयारो[3] मणायो सिंगार उजाड़यो
रसराज थांरे परसग राज ॥ २

राग – मांझ
ताल – चलत तितालो

म्हांनै भर दीजो ए कलाळी चगा दारूड़ा।
रसराज सांवळ बिछड़या[4] पाया
म्हांरे माया सो कोसां सू मारूड़ा दारूड़ा ॥ १

राग – मांझ
ताल – चलत तितालो

विरहां धूम मचाई तन मांय
कांई म्हू कियो छो थांरो वेर[5] हो।
चसन चसन निद्रा हू भूली
भूली सब सुख री सर ॥ १
गांव नगर जगळ सब हेरया
हेरी मद नदियां री मेर[6]।
कद मिळसी रसराज सांवळ वे
मन सग रहयो उबारी लर ॥ २

राग – मांझ
ताल – चलत तितालो

छड़ियां वासा सांवरा वे मेहडी ज्यांन।
रसराज मुस्ताक रदी जिदडी
टपै दो सुनावी वरही दान ॥ १

---

[1] मार। [2] ऊमटै च। [3] पियारो। [4] बिछड़या। [5] वैर। [6] नहेर।

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

राझणा हस बोल निमाणा वे
अरज करा दी लख वेरी।
लाज की मारी वारी बोलन सक दी
इस्क दा मारी फिर दी ॥ १

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

राझणै दी हजूर मेरा साईया वे
खडी तो पुकार दी हीर।
जो तू मालिक[1] दिल मे रैदा मीयां
निमख न रैना दूर ॥ १

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

सइया मेरी जिदडी दा राझण[2], वाली नी।
जिदडी दा[3] वालो राझा और राझै पर
साहव दी रखवाली नी ॥ १

राग – माझ
ताल – जलद तितालो

सावरा जिद हो रही कमली।
रसराज चिठीया भेजण सेतो
नही होना यार तैसलो[4] ॥ १

राग – मांझ
ताल – जलद तितालो

सावळ चलणा नी* चलणा वे
क्या कहुगी उस हीर नू।
लगन लगी उवारी[5] वे रसराज स्याणा मेरा
वेखणै तुसी दे विन नैणा नू कलना ॥ १

---

[1]मालक। [2]रांझणा। [3]जिदडा। [4]तसली। *'चलणा नी' नहीं ग। [5]बारी।

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

हो मेरी परियू दी नजरां न्याज भरी ।
न्याज भरी रसराज जुवानो
माद रैंदी वाकी घरी घी घरी ।। १

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

अब तो न जाणा परदेस हो नवली रा बनां ।
नैंण तो जोबन में सुरख होय रह्या छै
उळझ रया छै लया केस ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमी तिताली

छोटी सी नाजक धण रो मुजरो लीजो जो ।
रसराज नैंणा ही सूं गुघटड़ा में
मारू घणा मोठा मन रो ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमी तिताली

पना म्हांरे सेवती रा गजरा लाजो जी ।
बागां पधारो सायबा गजरा लाज्यो
होती सांझ घर आज्यो पना ।। १

राग – मांझ
ताल – धीमी तिताली

म्हारी बैरण सोव मारू बिलमायो है ।
कांई जाणों कांई जादू सो कीनों
भंवर मेल लपटायो ।। १
महुत जतन कर रही किते ही[१]
किति वार परचायो ।

नीज्यो जी । [१]माजी । [१]'गमां' नहीं । बोणा प म । [१]केते ही ।

रसराज मोसू अनोखी कोई जिण सू
नही सुळझै उळझायो ॥ २

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

म्हारै मन रौ अदेसौ मारूडा मिटा दे प्यारा ।
रसराज कागद यू लिख भेजू
लेजा रे पातकवा सदेसौ ॥ १

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

सारौ रस लै रे म्हारा भवरा बेलडिया रौ ।
या रित जावै छै वसत दुहेली
फूली फूली कलियान बेलडिया रौ ॥ १

राग – माझ
ताल – धीमो तितालो

कोई[1] राझै नू लाय मिलावै रे
दोस्त उवो मैडडी ज्यान जिवावै ।
असन वसन वारी कछु न सुहावै मेरा स्याणा वे
वालैंनी नैना वारी नीदरी न आवै मेरा स्याणा वे
विरह् अगन सारौ वदन जळावै ॥ १

राग – मांझ
ताल – धीमो तिनालो

तखत हजारै नू राझण चलावे
रैंदी वे हीर निमाणी मनाय ।
आखै नी वरसै दी पावस झर मेरा स्याणा वे
वेखन सकदा कोई यो विछोहा मेरा स्याणा वे[2]
साई यौ विरहमिटावै तौ मला ॥ १

---

[1]काई ग । [2]'वे' नही ख ग ।

फूल मार[1] जिन मारो मोहन
ऊभटे[2] छ नाजक अंगराज ॥ १
किसी तरां सु पिचकार चलावो छो
मदन मिलावो छो सूको रंग।
पीयारो घणायो सिंगार उजाड़यो
रसराज थारे परसंग राज ॥ २

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

म्हांनै भर दीजो ए कलाळी चंगा दारूड़ा।
रसराज सांवळ विछड़ा[3] पाया
म्हारे आया सो कोसां सूं मारूड़ा दारूड़ा ॥ १

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

विरहा धूम मचाई तन मांय
कांई म्हे कियो छो थारी वेर[4] हो।
असन वसन निद्रा हू भूली
भूली सब सुख री सर ॥ १
गांव नगर जंगळ सब हेरया
हेरी नव नदियां री नेर[5]।
कद मिळसी रसराज सांवळ वे
मन लग रह्‌यो उवारी लर ॥ २

राग – मांझ
ताल – जलद तिताली

छड़ियां वाला सांवरा वे मैंढ़ी ज्यांन।
रसराज मुस्ताक रदी जिदड़ी
टप्पे दी सुनाती वरही तांन ॥ १

---

[1]मार। [2]उमटे ग। [3]पियारी। [4]बिछड़या। [5]वैर। [6]नहैर।

रसराज मोसू अनोखी कोई जिण सू
नही सुळझै उळझायौ ॥ २

राग – माझ
ताल – धीमौ तितालौ

म्हारै मन री अदेसौ मारूडा मिटा दै प्यारा ।
रसराज कागद यू लिख भेजू
लेजा रे पातकवा सदेसौ ॥ १

राग – माझ
ताल – धीमौ तितालौ

सारौ रस लौ रे म्हारा भवरा बेलडिया रौ ।
या रित जावै छै वसत दुहेली
फूली फूली कलियान बेलडियां रौ ॥ १

राग – माझ
ताल – धीमौ तितालौ

कोई[1] राझै नू लाय मिलावै रे
दोस्त उवो मैडडी ज्यान जिवावै ।
असन वसन वारी कछु न सुहावै मेरा स्याणा वे
वालैंनी नैना वारी नीदरी न आवै मेरा स्याणा वे
विरह अगन सारौ वदन जळावै ॥ १

राग – मांझ
ताल – धीमौ तितालौ

तखत हजारै नू राझण चलावे
रैदी वे हीर निमाणी मनाय ।
आखै नी वरसै दी पावस झर मेरा स्याणा वे
वेखन सकदा कोई यो विछोहा मेरा स्याणा वे[2]
साई यौ विरहमिटावै तौ मला ॥ १

---

[1]काई ग । [2]'वे' नहीं ख ग ।

राग – मांझ
ताल – धीमो तितालो

मैनू छांड न जाइयौ रे
सांवरा प्रसि सूं लगाई मिलक ।
रसराज रमजा दिल बस गई मेरा स्याणां वे
नेहा करया तो निभा करीयौ ॥ १

राग – मांझ
ताल – होरी री

बाईजी कमधजियौ रमै छै सिकार ।
कस्यां बांकड़लो कमर सजदार
चचळ तुररा नै नीलो असवार
मयेली लाडलडी री सिर री सिणगार ।

राग मांझ
ताल – होरी री

हे वेरण म्हांरा छकिया नै वेग बुलाय
रहयौ नहिं पल हो उण बिन जाय
बैरी यौ जोबनियौ रहयौ छ सताय
रसीमाराज नै प्राज हो प्राज मिलाय ॥ १

राग – मांझ
ताल – होरी री

इण गलां मोल लड़ी सुणदीयां भलां सयाणी ।
रसराज जा हीरां दी परखो रमजां
जांणदी सांवरा ज्यांन मैडड़ो ॥ १

राग – माड
ताल – होरी री

माई माई सांवणीयां री तीज
हींडो ने बंधावो चंपाबाग में आमीजा जी म्हांरा राज ।

पन्नी री ब म ।

दे गळबांही मारवणी सू
हीडै म्हारी भवर सुजाण ॥ १

राग – माढ
ताल – होरी रौ

महोलौ सावणीया री तीजरी रे लीजो मारूडा ।
पना मारू किण दिस छै थारौ वास
किण दिस[1] व्याणै प्यारा चालणौं रे ॥ १
पना मारू जिण दिस देखौ जिण दिस नै
अगानैण्या री छै प्यारा भूलरौ रे ॥ २
गोरी म्हारी रसनगरी छै म्हारौ वास
दिल राखै जिण दिस नै अजो[2] चालणौ रे ॥ ३
पना मारू चालौ चालौ म्हारै घर मिजमान
तन मन करस्या अजो वारणै रे ॥ ४
पना मारू या धण चगी सेज सुरगी
यो आनद बरसै छै सौं गुणौ रे ॥ ५
पना मारू यो भुक आयौ छै मेह
चमकै बादळ मे अजो बीजळी रे ॥ ६
पना मारू सोनै री सीसी प्यालौ रतना रौ
पनै रै रग रौ दारूडौ रे ॥ ७

राग – मांढ
ताल – होरी रौ

लायौ[3] रगरेजा चूनर सारी
कंचुकी कसूमी हरचौ लहगा घूमघुमाला कलीदार ।
क्या खूब सीया मेरा सुघर दरजिया
कोर किनारो का लपादार ॥ १

---

[1] 'दिस' नही । [2] 'अजी' नही । [3] ल्यायौ ।

राग – ललित
ताल – इकी

मत सौ आगो न राज बनरा हो ।
नणद जेठाणी रा बोल सुणी ज
फिर रही घर र काज ॥ १

राग – ललित
ताल – इकी

ममला री मातो दारूड़ी रो छावयो
माये है मा म्हारै मेहलां ।
जोवन जोर रगरासो मारू
सणा रा नैणां नु' सुहातो ॥ १

राग – ललित
ताल – इकी

माई रग बहार भाली
मवा मोरे केसू फूल
मधरस को झनकार ॥ १
फूली फूल कळी त्यों बोलै
कोयल मधुभा की डार ।
रसीलाराज जहां मवीर कुमफुमें
खेल राजकुंवार ॥ २

राग – ललित
ताल – इकी

बाजी नौबत मांझल रात में
बिणीम सयाणो यिलमायो सारी रात्यूं
सारा दई परभात म म्हारी भालो ॥ १

म । विद्रुम ।

राग – ललित
ताल – इकी

चीजा जो म्हासू बोल्या अजाण मे ।
नाव न जाणू उवा रो गाव न जाणू
सोरठ री सहनाण पनाजी ॥ १

राग – ललित
ताल – इकी

तयारी जोर वणी मोरो राधे ।
वाकी वेसर चाल रय्यो[1] झुक
वेसर वारौ मोर ॥ १
चुनरी कुमली अजन कुकुम
फैल्यो जखम बहु ठौर ।
प्रात भयौ रसराज पहैलौ
जोसौ[2] नद - किसोर ॥ २

राग – ललित
ताल – इकी

मनोहर लागत मुख महताब ।
नए गुलाब फूलत उत है
इत[3] कुमळत[4] नैन गुलाब ॥ १
गहरे बोल भये मुख केरे
अलसाती तन आब ।
इक थी परी नव नायक जीत्यौ
कोन सी द्यू मै किताब ॥ २

राग – ललित
ताल – इकी

विगानी य्यू सैनेडा[4] न ज्याईये[5] वे
ल्याईयै तो ल्याय निभाईये ।

---

[1]रह्यो । [2]जीत्यो । उत फूलत हैं गुलाव नए इत ख ग । [3]तेरे । [4]सैं नेहडा । [5]ल्याईयैं ।

रसराज प्रीत करी सौ सांवरे[1]
इस्क नदी महा[2] आइयै ॥ १

राग – ललित
ताल – इकी तिताली

रांझण डेरे आया सांवरा वे
आया मेरो हीर निसांणी दे।
रसराज लिख लिख भेज दा कितावां
जग सियाल सैं ल्याया वे ॥ १

राग – ललित
ताल – जलद तिताली

मांन मनावे मारूडी माननी।
रसराज मोहन पाय परयौ अब
तू केही बात बनावे ॥ १

राग – ललित
ताल – जलद तिताली

वाली वे प्यार जुलफां तेरो काळी।
रसराज इण जुलफां में सरसी
उळझी सुहाणे वाळी ॥ १

राग – ललित
ताल – जलद तिताली

सांवरो सनेही मा मोहि कूं सुहावे।
बिन ही दाम बहानो कर कर
अपने नगर में आवे ॥ १
योस रसीलो सब रस जाने
नइ नइ रमक बतावे।

---

[1]सांवरे हुए है। [2]महा। [3]समाने।

रसराज तू व्रपभान कू कह मा[1]
या कु मोहि विहावै ।। २

राग – ललित
ताल – धीमौ तितालौ

राधे सिर चमकै सोसनीय्या साळू ।
बादळ जिसै गूघट मे चमकै
चद जेहौ वदन रसाळू ।। १
मोतीय्या री लडिया अैसी[2] सोवै[3]
बुगला - सो पात विसाळू ।
रसराज पीय्या पपईय्या रै कारण
आई छै[4] रित वरसाळू ।। २

राग – ललित
ताल – धीमौ तितालौ

हो छंदागारी रा बालम बोलौ
वन वन तौ भवर वेलरिय्या[5] मे बोलै ।
फूली अचानक ही फुलवारी
किसा ही पवन रौ बहै झोलौ ।। १

राग – ललित
ताल – जलद तितालौ

चद घर चाल्यौ तू भी चाल ।
मेरौ[6] मोहन मोह[7] लिय्यौ तै
इन नैना नू पाल ।। १
क्यू बरजै अब ही घर आई
तेरे नायक मे जजाळ ।
व्हौ[8] नायक रसराज तिहारौ
आज और और काल ।। २

[1] कहे । [2] उर्वसी । [3] सोहै । [4] गोरी ख ग । [5] वेलडिया ख ग. । [6] मेरै । [7] मोहि । [8] वहो ।

राग – ललित
ताल – धीमी तितालो

झमकन लागी विरहा की आग माई ।
द्रुमन कोयलिय्या कूक मचावै
ज्यु ज्यु नेरो आवे फाग ॥ १

राग – ललित
ताल – होरी रो

मारूडाजी म्हांरा आया मांझली' रात ।
लटपटीय्या सिरपेच छ रय्या
घास लगी छ गोरै गात ॥ १

राग – ललित
ताल – होरी रो

मारूडाजी म्हांरा हो राज झमर्सा रा माता हो राज
किण सिखलाया थांन' ।
सूधी बात में तरक करो छो
काई थांरो हो गय्यो मिजाज ॥ १

राग – ललित
ताल – होरी रो

बनाजी थांरी सेजडल्यां रंग लाग्यो ।
रंग बरसै केसरिय्या साड़ी
मोर केसरिय्या बागो ॥ १

राग – ललित
ताल – होरी रो

सहेल्यां म्हांरी मांयरो छवागारो ।
अपू नहीं छ रंगराज यो असो
तन मन आऊ सैं वारी ॥ १

बावड़ा । आंगण । बांधे पाग । गाली ।

राग – ललित

ताल – होरी री

सावराजी म्हारा हो राज, मत वोलो म्हासु प्यारा ।
थे अणखोला म्हे तेखीला
थासु म्हारै नही काज ॥ १

राग – विभास

ताल – आडो तितालो

वन वन मे फूले सुमनमा[1] ।
वन वन मे कलियन फूलत विकसत मंजर
नव पत वन द्रुम द्रुम वेलन[2]
वेल निहार सहेलिन मोद भय्या
कदम कुज प्रति भ्रमर पुज विहरन उड उड कें
सोर मचाय रहे तिनका
कुसमाकर रितु वहार का अगमन भईलवा
तिह पर सखि अब आय है नाह नय्या ॥ २

राग – बिभास

ताल – चौतालो

आई वसत वन घन फूलो ।
रसीलो[3] राज आए पथिय्या विदेसन तै
अजहु न आय्यो है कत ॥ १

राग – विहाग

ताल – इको

मुदरिया कोई ले गयौ मेरो चोर ।
रजनी सौ जहा दिन दिखियत है
ऊरभो लता चहु ओर ॥ १

---

[1]सूमनमा ख सुमना ग । [2]वेलैंन । [3]रसीला ख ग ।

गई सघन वन रमण सखी में
जहाँ पिक कूजत मोर।
आयो अणांन न जानूं कौन यो
रसराज उवौ सिरजोर ॥ २

राग – बिहाग
ताल – चलन्द तिताली

भाई भाई सावणियां की रित आ
चलवेलिया क मेलै चालौ
झूम झूम' घन बरसै, बदरिया बिजली चमकै।
मुरवा नाच कोयल बोलै
पपय्या पिउ पिउ पुकारै।
उमड घुमड नभ सिखर चढे हैं
सुरस पियरे कारै ॥ १

राग – बिहाग
ताल – दीपचंदी

मतवारो मोती बेसर रो
मोनें म्हासो लै'र भुलावे पना जी।
मधग्न की रस लेतो लोभी
रंग बरसातो बेसर रो ॥ १

राग – बिहाग
ताल – दीपचंदी

रगभीनी रांजिद चाली चावरी
एठै में' मिश मिष राखूं सुभाम सरी।
रसीमाराज माहि ब्याह बेदरदी
पहलैं मिरै मो मैं या करो ॥ १

१ झूम। २ चेटो।

राग – विहाग
ताल – धीमौ तितालौ

गैरी गैरी चंपा फूल्यौ
एरी मोरो बंन मोरै अगना मे ।
रसीलाराज याकै फूलन मे[1] आवन कौ
कौल कियौ कर भूल्यौ ।। १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

जांणी जी थारी बातडली म्हे
रसीलाराज प्यारा अलवेलिया ।
छिन भर ठहरत नही थारौ
कोई तौ चढी छै चित मे सयाणी[2] ।। १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

मनावत रैन गई सगरी री* ।
तू माननी अजहु नही मानत
वार किती मै झगरी री* ।। १
सीतल मुक्ताहार भये है
जेहे[3] ते जगमग री ।
रसराज अबहु ऊठ चटकीली
सोय ऊठी नगरी री ।। २

राग – श्रीराग
ताल – जलद तितालौ

बाडी रौ रस ले गयौ भवरा रे ।
फूल फूल और कळी कळी रै
पखुडी पखुडी[4] दाग दियौ ।। १

---

[1] पैं ख, पें ग । [2] सयाणीजी । * *'री' ग मे नही । [3] जेहो ख ग । [4] 'पखुडी' ग. नही ।

राग – श्री राग

ताल – बलद तितालो

केही न्याज भरी नवरां मेंबूवां' री।
रग भरी रसराज सग रांभण दे
चगी नैंन रसीलां दे नौकां दी पल दी वे ।। १

राग – श्रीराम

ताल – चीमो तितालो

नहिं बुझ दी सांवल ए गला
मैं तो कहु दी सहजें माय मीयां'।
इक मास्यूक उवारी इक आस्यक' मेरा स्याणा
एक ही इस्क कहाय ।। १

राग– पट

ताल – बलद तितालो

अब घर आवण दो आलीजा जी
प्रात हुवो मेरो' लाज छुटसी।
जातां प्राण प्रीत नहिं छूटे
लाज के जातां प्रीत तूटली ।। १
उवा किसो प्रीत कहीसो' सखियां
लाज हो ब जातां अहुटली।
पण बिसोयय रासां बहु सोई
पूटस पूटस नदियां पूटसी ।। २

राग – पट

ताल – होरी री

अब घर जानें दे मोहना मोहि
प्रात भयो मरा लाज छूटेगो।

मन्दूवां। मर तो। 'मियां। आमन। प्यारी। 'करोगा। लाज न।

राग – विहाग
ताल – धीमौ तितालौ

गैरौ गैरौ चपा फूल्यौ
एरी मोरो बैन मोरै अगना मे।
रसीलाराज याकै फूलन मे[1] आवन कौ
कौल कियौ कर भूल्यौ ।। १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

जाणी जी थारी बातडली म्हे
रसीलाराज प्यारा अलबेलिया।
छिन भर ठहरत नही थारौ
कोई तौ चढी छै चित मे सयाणी[2] ।। १

राग – विहाग
ताल – होरी रौ

मनावत रैन गई सगरी री* ।
तू माननी अजहु नही मानत
वार किती मै भगरी री* ।। १
सीतल मुक्ताहार भये है
जेहे[3] ते जगमग री।
रसराज अबहु ऊठ चटकीली
सोय ऊठी नगरी री ।। २

राग – श्रीराग
ताल – जलद तितालौ

बाडी रौ रस लो गयौ भवरा रे।
फूल फूल और कळी कळी रै
पखुडी पखुडी[4] दाग दियौ ।। १

---

[1] पै स, पॅ ग। [2] सयाणीजी। * *'री' ग मे नही। [3] जेहो ख ग। [4] 'पखुडी' ग. नहीं।

राग – श्री राग

ताल – कमद तितामी

केहो न्याज भरी नयरां मसूवां[1] री।
रग भरी रसराज सग रोभण दे
पगी नैंन रसीलां दे नौकां दी चल वो मे ॥ १

राग – श्रीराग

ताल – धीमो तितालो

नहि मुझ दी सांवल ए गलां
मै तो कह दी सहजें भाय मीयां[2]।
इक मास्यूक उवारी इक आस्यक[3] मेरा स्याणा
एक ही इस्क कहाय ॥ १

राग – पट

ताल – कमद तितामी

अब घर आवण दो आलीजा जी
आज हुवो मेरी[4] लाज छुटली।
आतां प्राण प्रीत नहि छूटे
लाज के आतां प्रीत तूटली ॥ १
उवा किसो प्रीत महेलो[5] सखियां
लाज हो क आतां महुटेलो।
पण कितोयक रातां बहु सोई
खूटत खूटत नदियां खूटसी ॥ २

राग – पट

ताल – होरी री

अब घर आने दे मोहना मोहि
आज भयो मेरो लाज[6] छूटेगो।

मसूवां। [2]मन ली। [3]मियां। आसक। [5]म्हारी। [6]म्हेलो। लाज न।

प्रान कै जात प्रीत तोसौं जोरी[1]
लाज कै जातै प्रीत तूटैगी ।। १
कैसी उवा प्रीत कहैगी सखिया
लाज कै जातै जो अहुटैगी ।*
पर कितियक राखौ[2] बहु खोई
खूटत खूटत नदिया खूटैगी ।। २

राग – पट
ताल – जलद तितालौ

झम झननननन[3] बाजै झाझरु
क्यौ घर जाऊ मेरा प्राण पियरवा ।
वडी कील दे डारी सुनारियै
निकसन पावै नही जानैगौ लोकवा ।। १
हो गयौ प्रात न जान्यौ[4] परचौ मोहि
बतिया लगा दइ जान रसिकवा ।
रसिकराज रसराज सावलिया
अबहु तौ मेरौ छोड अचरवा ।। २

राग – षट
ताल – जलद तितालौ°

लाल रगीलौ मोरौ स्याम रगीलौ
वैसी कुवर मोरी राधा रगीली ।
सखा सखी सब छैल छबीले
गोकळ और बरसाणौ छबीलौ ।। १
रूप नवेला नैण नसीला चटकीलौ
तन साज सजीलौ ।
सहज सुभाव प्रीत गरबीलौ
रसोलाराज समाज रसीलौ ।। २•

---

[1] जोरू । *'कैसी' और 'लाज' दोनो चरण नही । [2] राखा । [3] झनन । [4] जान्यौं न ।
° दूसरा पद्य नही । • रेखतौ ।

राग – पट

ताल – जलद तितालो*

इस्क दी भाजी है नौवत
कीस्या दे भाग[1] चले दुसमन ।
तसत पर भा खड़ा माश्यूक
मदालत जुलम की करके ।
सजन कीता जुलम मुझ[3] पर
की मारा बेगुने मुझ कू ।
करगा जो इनसाफ भला
पकड़ सौंपे मुझ तुझ कू ॥ १
परी तहकीक मै कीता
जो जांणा था सो झूठ था सब ही ।
जुलम दिल में भवस था प्यार
न था नैंनू में नेह कब ही ॥ २

राग – सरपरदो

ताल – जलद तितालो

भाज तो भलबेली सी[4] निजर सूं
महैर करो म्हांर डेरै भ्रगानैंणी जी ।
कर त्यारी म्हांरी कवर
बागां करण विहार ।
सरसी भाई बाग मे
लियां सहेल्यां सार मे ॥ १
रंग भरया काजळ रळयो
भ्रग अणियारा वेस ।
मिसी गुलाबी मिल रही
रुचिर मतीसी रेस मे ॥ २

---

*रेखतो । [1]भाज गयो । [2]माशूक । [3]'मुझ' नहीं । [4]'सी' नहीं।

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

आलीजाजी हो आलीजाजी वाजी ल्याकर आई ।
ना राजी म्हारी सासु नणदल
रसराज म्हारो मन राजी ।। १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

काई रस बरसै या चगा नैणा सावराजी[1] ।
चगा नैणा[2] रा चितवन मिळता
रसराज म्हारो मन तरसै जी[3] ।। १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

कोठै बोली मीठै बोल होतै प्रात या[4] कोयलडी ।
वाडी गुलाब फूलण री वेळा
कळिया रही छै चटक मुख खोल ।। १

भवर उडचा कवळा सु साथ ही
फूला[5] भरचा छै रसता अतोल ।
काई छिब[6] दोय घडी की चगी
मलिया रह्या छै चहु दिस डोल ।। २

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

थारा तो नैणा रा कामण लाग्या[7] ।
रसराज क्यू सह सकस्या अकेला
हमला तीज री रैणा रा ।। १

---

[1]माहजी ख ग । [2]नैंणा निजारा मिळता ख ग । [3]ओ ख ग । [4]आ ख । [5]फूल्या ।
[6]छब । [7]लागा ।

राग – सरपरदो
ताल – वलद तितालो

दारूड़ो भर दीजो ए कलाळी
मैंसा मायो म्हांरो मारू मतवाळो ए[1]
फूल पान और फल रह्या
मतरदान मेवास।
राजे कंचन रतन रा
प्यालो सीसी पास में ।। १

राग – सरपरदो
ताल – वलद तितालो

भर दीजो ए कलाळन[2] दारूड़ो
मैंसा मायो म्हांरो मारू मतवाळो ।
रसीलाराव उवारे उवारण होय कर
रीझ मैं देसां सांगानेर रो साळू ।। १

राग – सरपरदो
ताल – वलद तितालो

मारूड़ाजी हो मारूड़ाजी थे तो म्हांरी ज्याम विसमाई।
रसराज हित चित सु संग[3] रमता
हँस हँस वेता दारूड़ो ।। १

राग – सरपरदो
ताल – वलद तितालो

मिजाजीड़ा रे सेता आज्यो जी राज
बहता बटाऊ री खबर
म्हांरी एक तूही रखवारो
सग म कोई समाज ।। १

---

[1]'ए' नहीं। [2]कलाळी। [3]'संग' नहीं। बाजो।

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

आलीजाजी हो आलीजाजी बाजी ल्याकर आई ।
ना राजी म्हारी सासु नणदल
रसराज म्हारो मन राजी ।। १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

काई रस वरसै या चगा नैणा सावराजी[1] ।
चगा नैणा[2] रा चितवन मिळता
रसराज म्हारो मन तरसै जी[3] ।। १

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

कोठै बोली मीठै बोल होतै प्रात या[4] कोयलडी ।
वाडी गुलाब फूलण री वेळा
कळिया रही छै चटक मुख खोल ।। १

भवर उडचा कवळा सु साथ ही
फूला[5] भरचा छै रसता अतोल ।
काई छिब[6] दोय घडी की चगी
मलिया रहचा छै चहु दिस डोल ।। २

राग – सरपडदो

ताल – जलद तितालो

थारा तो नैणा रा कामण लाग्या[7] ।
रसराज क्यू सह सकस्या अकेला
हमला तीज री रैणा रा ।। १

---

[1] माहजी ख ग । [2] नैण निजारा मिळता ख ग । [3] ओ ख ग । [4] आ ख । [5] फूल्या ।
[6] छव । [7] लागा ।

राग – सरपरदौ

ताल – चलत तितालौ

दारूड़ी भर दीजो ए कलाळी
मैंसा मायो म्हांरो मारू मतवाळो ए[1]
फूल पांन और फल रहूया
अतरदान अेवास।
राजे कंचन रतन रा
प्यालो सीसी पास वे ॥ १

राग – सरपरदौ

ताल – चलत तितालौ

भर दीजी ए कलाळन[2] दारूड़ो
मैंसा मायो म्हांरो मारू मतवाळो।
रसीआराज उवारे उवारणै होय कर
रीझ मैं देसां सांगानेर री साळू ॥ १

राग – सरपरदौ

ताल – चलत तितालौ

मारूडाजी हो मारूडाजी वे तो म्हांरी उयाम बिसमाई।
रसराज हित चित सूं संग[3] रमता
हँस हँस देता दारूड़ो ॥ १

राग – सरपरदौ

ताल – चलत तितालौ

मिजाजीड़ा रे मेता आज्यो जी राज
वहता बटाऊ री खबर
म्हांरो एक तूंही रखवारो
संग न कोई समाज ॥ १

---

१ 'ए' नहीं। २ कलाळी। ३ 'संग' नहीं। ४ सायो।

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

म्हे तौ थानै छैलाजी हो थांरा सु[1] न जाण्या।
बाकी अकस किसा[2] देस रा वासी
रसराज[3] दीसो अलबेला ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

राज गहेला हो पना थे लाडीजी रा बना
अगानैणी बनरी नै बिलमा ली काई करसी।
सुख दीजो[4] जी साजन अलबेला
छोटी-सी या धण राज[5] नवेला।
रसीलाराज पीया सुख रा सुहेला ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

राझणा राझणा राझणा मेरा वे
रसराज इस्क लगा की लाजणा[6] ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

अबुवा[7] की डारी[8] कोयल बोलै
नहिं बोलै मेरौ कान रिसानौ।
रसराज कहा लुँ[9] विनती करियै
कर मीलु[10] मोरी छतिया छोलै ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

झूल* ना मै तो जानू री बिरहीया
तू हठ लागी मेरी[11] सुघर ननदीया।

---

[1]सू। [2]किसै। [3]अ। [4]दीज्यो। [5]और थे वी नवेला ख ग। [6]जाणां। [7]अबवा।
[8]डार। [9]लू। [10]मिलूं। *झूलाना ग.। [11]री।

रसराज तोरै संग कर दी-नहोरा मैं
भला करैगी तेरो छोइयां गुसम्यां[1] ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – बमर तिताली

झोलना मेरी भरदै सनेहीया
मैं नहीं भरवांण दी सांवरै की सू ।
रसराज मई या रुसाय रहैगी
भीज जायगी मोरी सुरग चुवरीया[1] ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – बमर तिताली

दुपट्टे वारो प्यारो म्हांरो[1] मन लियां जाय जी ।
महीयां भराज बंसी बजावे
मइ नइ रमक बताय जी ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – बमर तिताली

रग भीनी हो रही गुजरेटी
रन रमी सांवरै संग झुम्क दी ।
रसराज क्यूं साळूड़ो सुखा गयो
कित गयो घणवट कितहूं मंगूठी ॥ १

राग – सरपरदी
ताल – बमर तिताली

भासकी मत होमा किसू सै
भासिका नुं महबूबा दी[1] दवाई बे ।

गुसाईयां । चूंनरिया । [1] म्हारो नहीं । भाषका मैं । [1] दी ल म ।

मारे निजरा दे मूये
आसिक केरे अग[1]
जर मर कै फिर जी उठै
सच मास्यूका सग वे ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

आख लगाइयां वे मजनू तैनै चीरै वाले ।
अब तो नहि मिल दा तू किस नै गला सिखलाइया ।
सब सग सुलभ तो सै उलभाइया
देखी जो निभाई बेग विसराईया
रसीलाराज अेती बेपरवाईया ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

चमकै दी सिर पै सोनै री वमे[2] तुररे
पगडी[3] नी चकरदार मिया मजनू दे
उवैसा दुपट्टा रसराज सोहैं सुहेदा
वस रहया जी लैलियू[4] दे ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

ज्यान मेरी नू कीभेडा[5] ल्याया लाया[6] वे स्याणा[7] ।
सुण दा वे रसराज की आखा[8] आन तेरी नू ।। १

राग – सरपडदो
ताल – जलद तितालो

ज्यानी महर-मयार वे तू दिल दा वे

---

[1]संग ख ग. । [2]बमैं । [3]पघडी । [4]लियौं । [5]कीभेडघा । [6]'लाया' नहीं । [7]स्याणौं ।
[8]अखां ख. ग ।

इस्क तुसी दा सारी जीवन मैंडा वे
रसीलाराज सिरदार तूं सिरदा वे ॥ १

राग – सरपड़वी
ताल – जलद तिताली

मैंडा वे मिजमांन मोही जांदा वे[1] मही वालड़े ।
मोहि लियौ मनमोहनी मूरत
मिलण दी[2] मरज रोका मैंडी[3] मांन ॥ १

राग – सरपड़वी
ताल – जलद तिताली

बिजली चमकां दी याद देंदी वे ।
हिक बिरहा ने[4] दूजी महार रस[5]
दो दो दरद न सेंदी ॥ १

राग – सरपड़वी
ताल – जलद तिताली

सजण दा हाल मैंहेर दा[6] याद रैंदा वे ।
रसराज पेच दुपट्टा निकस दा[7]
जोर[8] सरां सें मण दा ॥ १

राग – सरपड़वी
ताल – जलद तिताली

पमूं म्हारो मुजरो लीजो जी
हो सांवळिया चीरे वासे छैला ।
रसराज सजरी मीठी निजरयां सूं
मिल्यो हुसी मरका गजरा सूं ॥ १

---

[1] वे नहीं। [2] मिलण दी म। [3] मेरी। [4] घोर म। [5] रसराज स म। [6] महर दा। [7] मीरम दा। [8] जो तरह सूं बण दा।

राग – सरपडदो

ताल – धीमो तितालो

म्हारै गळ लागो नै साहबा[1]
भवर सुजाण मारूडाजी थे।
मे[2] थारा चाव करा छा निस दिन
चरण[3] बिछावा म्हारा साळूडाजी थे ॥ १

राग – सरपडदो

ताल – धीमो तितालो

म्हारै डेरैं चालो नै, सायधण कर रही चाव खडी छै जी।
रसराज या चंदावदनी राधा
नाजकडी मुकता लडी छै जी ॥ १

राग – सरपडदो

ताल – धीमो तितालो

मारूडो छे रिझवार म्हारी आली हे।
जाय सलाम कहे आलीजा नै
कुरन सवार हजार ॥ १

इतनो सदेसो और कहीजै
चाल्या तुरत विसार।
रसीलाराज रसराज सिरोमण
आवा म्हे थारी लार ॥ २

राग – सरपडदो

ताल – धीमो तितालो

मै सरायो[4] हे म्हारी नणदी
प्यारे[5] बालम इं बनरा नै।

---

[1]साहिबा। [2]म्हे। [3]चरणां। [4]सराह्यो। [5]चगी ख ग।

इस्क सूली दा चारी जीवन मैंडा वे
रसीलाराज सिरदार सूं सिरदा वे ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – वसंत तिताली

मैंडा वे मिजमान मोही आंदा वे मही वालड़े।
माहि लियो मनमोहनी मूरत
मिलण दी[*] अरज रांझा मैंडी मांन ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – वसंत तिताली

बिजली चमकां दी याद देंदी वे।
हिक विरहा ले दूजी बहार रस[*]
दा दो दरद न सैंदी ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – वसंत तिताली

सजण दा हाल मैंहिर दा[*] याद रैंदा वे।
रसराज पेच दुपट्टा निकस दा[*]
जोर[*] तरां सें वण दा ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – वसंत तिताली

पनूं म्हारो मुजरो मीजो जी
हो सांवळिया चीरैं वासें खेला।
रसराज सजरी मीठी निजरयां सूं
मिल्यो हुवो करका गजरा सु ॥ १

---

[१]वे नहीं। [२]मिलण दी च। मेरी। [४]और च। [५]रसराज का च। महर च
[६]नीकस दा। [७]जो तरह सूं नसा दा।

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जिद ग्रटकी सावळ नाल तुसी दे
नही रुकदी रेंदी किसू सै पनु ।
रसराज रमजा दिल विच खटकी
सहर सुहाणै दी ससि भूली भटकी ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जो दम गुजरै सो दम तेरा
सुकर गुजार तू हो साई दा वे ।
राजी कुसी[1] उसी मे रहैणा
रसीलाराज उवौ ही सुख चाणौ ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दिल तरसै सावळ वेर वेर
नही ग्रादा तू कभी मिल दा पियारे[2] ।
रसराज गाव सहर ग्रौर जगल
जिथै जादीया मै तिथै तूही दरसै ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दूतां दे फदनू वे स्याणा[3] ।
मैं की जाणा रसराज
इस्क दुहेला जिंद नू ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – रेखतौ[4]

चस्म चोट चलाय कै सावरा
दिलकु चेटक दे गया वे ।

---

[1]खुसी । [2]मिया रे । [3]स्यौणा । [4]इकौ रेखतौ ग

दिल राख मो रखावे लाडलडो[1]
यो गुण ममोलक किण तो पढायो नणदी ॥ १
इक रस हेत मोहत सी चागे*
उयो चतरो न नहीं मायो।
रसीलाराज दोनु मोर सरीखो
धन छ उय मोर सुख उयां ही छ सुहायो नणदी ॥ २

राग – खरपड़ी
ताल – धीमो तितालो

बनरा नी माया मा, करूंगो मैं मानद वधावना।
रसराज मोत्यां चोक पुरावां, प्रान पियारा मन भावना ॥ १

राग – खरपडी
ताल – धीमो तितालो

सामाने पधारो धण मद छकियो ऊभो बार।
लाज्यो लाज मत सौगन थांन
मिलज्यो लाग गळ-बांह् पसार ॥ १
बांकी सरह् मोर वेस बांकडलो
प्यारो नाना रो असवार।
रसीलाराज कांई छब अलबेली
मारूडो देखण जिसो सिरदार ॥ २

राग – खरपड़ी
ताल – धीमो तितालो

अटियू दे नाल उलझाई वे जिंदडी
नहीं छूटै लग गई मेरे महीवाले।
इस्क किया के वैर वसाया
हो गया अजब[1] स ख्याल ॥ १

---

*यह चरण आदर्श प्रति में नहीं। घण। मती। [1]हुवाणो। [1] 'स' नहीं।

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जिंद अटकी सावळ नाल तुसी दे
नही रुकदी रेंदी किसू सैं पनु ।
रसराज रमजा दिल विच खटकी
सहर सुहाणे दी ससि भूली भटकी ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

जो दम गुजरै सो दम तेरा
सुकर गुजार तू हो साई दा वे ।
राजी कुसी[1] उसी मे रहैणा
रसीलाराज उवौ ही सुख चाणी ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दिल तरसै सावळ वेर वेर
नही आदा तू कभी मिल दा पियारे[2] ।
रसराज गाव सहर और जगल
जिथै जादीया मै तिथै तूही दरसै ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – धीमौ तितालौ

दूतां दे फदनू वे स्याणा[3] ।
मै की जाणा रसराज
इस्क दुहेला जिंद नू ।। १

राग – सरपडदौ
ताल – रेखतौ[4]

चस्म चोट चलाय कै सावरा
दिलकु चेटक दे गया वे ।

---

[1]खुसी । [2]मिया रे । [3]स्योणा । [4]इको रेखतौ ग

लोकूं सैं गया कैं मुज कूं
आप मैं मनमस्त रहया[1]
जला कैं खाख छ दस्त रखो ॥ १
उसके मैन गुलाबां दे फूल खायो
आसकां का दिल मुस्ताक किया[2] ।
आसकां का दिल मुस्ताक रहया
मास्यूक नै अपना रूप दिया ॥ २

राग – सरपरदो
ताल – होरी रौ

कामणगारा हो मैंणां रा आलीजाजी म्हांरा छल ।
रसराज या नैंणां रै मिलन री
नित री करामो सायबा म्हांन सल ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – होरी रौ

बन रै बाग बहार गुल लाला से लाला लागणे ।
मैन गुलाब कवळ सा मुसका
बन रहया सांवरा प्यारा सजदार ॥ १

राग – सरपरदो
ताल – होरी रौ

गरीबां रा दिल ले जांणा नैं आसांन ।
रसराज को ले गया लो जबर तुम
अपना आप दे जांणा ॥ १

राग – काफर
ताल – चौताली

भवर फूले तैसे हो फूले फूल ।

---

[1] भ्या न । [2] कीता न । न । [4] तुमै ।

कलिया विकास पत बाहु हरीले
नीकै सोहत भूल ।। १
पल्लव अदुतर सोहत डारन मे
सरसी साखा अकुरे नवीने मजुर तैसौ मूल ।
अैसे व्रछ वेली कै कुज मे
भूलै रहे है दोऊ भूल ।। २

राग – सागर
ताल – चौतालौ

सरस रूप तेरौ जुगलकिसोर लाल
रति मन्मथ ज्युं खेलत कुज भवन
प्रात भयौ जागौ मेरे लाल
कली कुसम फूलन की वार
चटकत कली चहकत चिरिया
भीनी भीनी बान बोलत पछी
मानु वाजै वीन सतार ।। १

राग – सारग
ताल – इकौ

उमड घुमड[1] गगन वादर आए
सीरी बूदन तै तैसे विजली हु मिल चमकती बोलै मोर प्यारे ।
केसरिया पिय आकर पीछे जावतु है ।। १

राग – सारग
ताल – इकौ

केसरिया वन रे देखौ नीकै[2]
केतकिया फूली है वारी क्यारी बीच मे ।

---

[1]घमड । [2]नीकौ ।

लोकूं सें गया कें मुज कूं
आप में मनमस्त रह्या[1]
जला क खास क दस्त रखी ॥ १
उसके नन गुलाबां दे फूल सामो
आसकां का दिल मुस्ताक किया[2] ।
आसकां का दिल मुस्ताक रह्या
मास्यूक नें अपना रूप दिया ॥ २

राग – सरपरदौ
ताल – होरी री

कामणगारा हो नैंणां रा आलीजाजी म्हांरा छल ।
रसराज या नैंणां रे मिलन री
निस री करावो सायबा म्हांनै सेल ॥ १

राग – सरपरदौ
ताल – होरी री

बन रे बाग बहार गुल लाला से लाला लागणे ।
नैन गुलाब कवळ सा मुखड़ा
बन रह्या सांवरा प्यारा सजदार ॥ १

राग – सरपरदौ
ताल – होरी री

गरीबां दा दिल से जाणा नें[3] आसान ।
रसराज ओ से गया छौ अबर तुम
अपना आप दे जांणा ॥ १

राग – खाबर
ताल – चौतालौ

मभर फूले तैसे हो फूल फूल ।

---

[1]रया थ । [2]कीता थ । [3]न । [4]तुमें ।

हो हैं तौ धनो आवैगे मुकर माई
गोरस हो है तौ अहै मिजमानी कू ।
जिन देखी उवा व्रषभानजू की सपत
उवौ न सरावैगौ[1] तिहारी राजधानी कू ।। २

राग – सारग लूहर
ताल – जलद तितालौ[2]

अलबेलिया घरानै पधारौ
अगानैणी जोवै थारी वाटडली ।
यौ सावणीयौ उमड रयौ छै भूल्यौ न जावै
उण सूरत रौ उणिहारौ ।। १

राग – सारग लूहर[3]
ताल – जलद तितालौ

अलबेलियौ तौ व्रस ह्वै रह्यौ
छदागारी थारा लोयण लागणा ।
अजी बाई आवै छै तनै खट नट घणा
और यौ मतवाळौ सिरदारजी ।। १
अजी थारै पीहर रा कहै छै जणा जणा
इरौ कामणगारौ छै सुभाव जी ।। २
अजी अैतौ तिरछी निजर चलावणा
बरछी सु तीखा घाव जी ।। ३
अजी अग मीन कवळ सू बी मोहणा
खजन सू चपळ खतगजी ।। ४
चिरजीव रहौ ए बनी बना
रसराज सहेल्या री आसीस जी ।। ५

---

[1]सराहैगौ । [2]ताल-होरी रौ ख. ग. । [3]'लूहर' नही ।

चले चहुं दिसा करो झोले नीके सांमन क[1]
अगमन[2] ऊपर चढ़ अटरिया ॥ १

राग – सारंग

ताल – इकौ

बदरिया बरसें झीनी बूंद
बिजळियां चमक मा बोल्ल मोरा कोकिला[3] ।
मिली सुहावनी निस उबें-सी
तामें किसनक दिनन में चमत पिऊ केसरिया ॥ १

राग – सारंग सूहर[4]

ताल – चौताली

माई रित ग्रीपम में प्यारे लगन लागे
चदन उसीर नीर सघन अमराई ।
सीत लपटी की बिछायत तापर
लपट भलस सोरंभ अति सुखदाई ॥ १
ग्रैसी जेठ दुपरी के मांही
छांही[5] सोहु चाहत छांई ।
रसराज जोवन धूप में, नवल-वधू छांही[6]
रूप प्यारे की चाहत गलबांही ॥ २

राग – सारंग सूहर[7]

ताल – चौताली

काहे कू रिसांनी भेरी माई नवरानी
मैं तो इहां माई थी सुनन कहांनी कू ।
कहा कहु इस पारोसन सयांनी कूं
मोहि कर ग्रहि मांनी मेरो-सी भयानी कूं ॥ १

---

[1] 'कै' नहीं । [2] अगमन में स० प्रापम मगमन प । [3] कोकिले ग । [4] 'सूहर' न[illegible]
[5] छाई । [6] [illegible] [7] 'सूहर' नहीं ।

हो है तौ धनी आवैगे मुकर माई
गोरस हो है तौ अैहै मिजमानी कू ।
जिन देखी उवा व्रषभानजू की सपत
उवौ न सरावैगौ[1] तिहारी राजधानी कू ।। २

राग – सारग लूहर
ताल – जलद तितालौ[2]

अलवेलिया घरानै पधारौ
अगानैणी जोवै थारी वाटडली ।
यौ सावणीयौ उमड रयौ छै भूल्यौ न जावै
उण सूरत रौ उणिहारौ ।। १

राग – सारग लूहर[3]
ताल – जलद तितालौ

अलबेलियौ तौ व्रस ह्वै रह्यौ
छदागारी थारा लोयण लागणा ।
अजी बाई आवै छै तनै खट नट घणा
और यौ मतवाळौ सिरदारजी ।। १
अजी थारै पीहर रा कहै छै जणा जणा
इरौ कामणगारौ छै सुभाव जी ।। २
अजी अैतौ तिरछी निजर चलावणा
बरछी सु तीखा घाव जी ।। ३
अजी अग मीन कवळ सू बी मोहणा
खजन सू चपळ खतगजी ।। ४
चिरजीव रहौ ए बनी वना
रसराज सहेल्या री आसीस जी ।। ५

[1]सराहैगौ । [2]ताल-होरी री ख. ग. । [3]'लूहर' नहीं ।

राग – सारंग मुहर[1]
ताल – बसंत तिताली

म्हांरी छोटी बाईजी री साहबौ ।
अजी उवांरौ मोहन चद रौ सौ आयबौ
कांई मेटण बिरह री धूप जी ॥ १
अजी कांई धण रौ राधा सौ सोम जायबौ
रैन[2] कवळणी रै रूप जी ॥ २
अजी कांई धण बादळीयां री बीजळी
मोर पिय सांवण[3] रौ मेह जी ॥ ३
अजी कांई सोन चंबेली सी साहबी
म्हांरो मारूड़ो चपा[4] रौ फूल जी ॥ ४
अजी कांई सायधण रै सिर चूनड़ी
मोर पियाजो रै पचरंग पाग जी[5] ॥ ५
उठ राधा करो ने वधावणा
ब्रिजराज आयो छै मिजमांन जी ॥ ६

राग – सारंग मुहर
ताल – बसंत तिताली

आवों छो सम्भारा री रण रा मुजरै
रसराज मोहम मिळन जी तरस
रोक राखी छ इण लोक व्रज रै मुजरै ॥ १

राग – सारंग मुहर[6]
ताल – बसंत तिताली

घणां न दिनां सुं घर आया री, म्हांरै छोटी रा गुमांनोड़ा ।
रसराज पहले मिलाप रा बिछड़ा
इतनो दरग म्हांरो देश[7] री म्हांरी[8] ॥ १

---

[1]मुहर नहीं । [2]साइनी । [3]कांई रैण । [4]सांवणिया । [5]चंपे । [6]पाग जी । [7]'मुहर' नहीं । [8]'मुहर' नहीं । [9]बेल री म । [10]आरी ।

राग – सारग लूहर[1]
ताल – जलद तितालो

थारा वीरा नै समझाय म्हारी[2] नणदी ।
म्हा सू[3] झूठा कौल करै छै
नित रा पर घर जाय[4] ॥ १

राग – सारग लूहर[5]
ताल – जलद तितालो

रग भीना[6] राजवण झीणा राजाजी बुलावै ।
थे मद-छकीया री सेजा चालौ
अनरा नै थारी चाव ॥ १

राग – सारग लूहर[7]
ताल – जलद तितालो

लीजोजी लीजोजी महाराज मुजरौ म्हारौ थे ।
रसराज इत गोकल वरसाणौ
जो गुजरै सौ सिर पर गुजरौ ॥ १

राग – सारग लूहर[8]
ताल – जलद तितालो

अब मान पियरवा मोरे
मन केरी कहानी जो तू सुनै तौ
सच है रसकराज की द्वाई तो कु ।
कोयलिया कै रग त्रिय मे देखी तोरै
घर तै निकसत ताकौ तोहि[9] कौ नित है ध्यान ॥ १

राग – सारग लूहर[10]
ताल – जलद तितालो

आए आए उमड मेघ वरण वरन कारे मिल लाल केसरिया ।
चमक विजरिया मा, बूदे मद छूटी लो
फूली फूलो चहु ओर केतकिया ॥ १

---

[1]'लूहर' नही । [2]'म्हारी' नही । [3]ओ म्हासू । [4]जाय म्हांरी नणदी । [5]'लूहर' नही ।
[6]मीनी स्व ग । [7]'लूहर' नही । [8]'लूहर' नही । [9]तूही । [10]'लूहर' नही ।

राग – सारंग मूहर[1]

ताल – जलद तिताली

भाज फगवा रमण कू, सज सज भाई व्रजबाला री।

रसराज इत सब ह्वो व्रजनारी

उत मोहन मतवारा री ॥ १

राग – सारंग मूहर[2]

ताल – जलद तिताली

मसो[3] कैसो देख्यौ री मा नद को लगरवा।

रसराज बहीयां[4] मुरक गई गोरीयां

चूरीयां[5] तरक गई सारी री तेरो ॥ १

राग – सारंग मूहर[6]

ताल – जलद तिताली

गरज घन गढ़े है भलवेले मा

नभे स्याम गगन में

सियरी छूटी हैं झीनी बूंद।

पिऊ भायो नहीं री नभे[7] रसराज

झनक्स पंछी

रहूंगी स्रवन दाहूं[8] मूंद ॥ १

राग – सारंग मूहर

ताल – जलद तिताली

नद का लगरवा मोहि डर लागै रे।

मै तो भमांणी रसराज कला क्रूं देख गई

तरह भनोखी जियरा जागै[1] रे ॥ १

---

[1]मूहर नहीं। [2]सज सज भाई व्रजबाला री भाज फगवा रमस कं। [3]'मूहर' नहीं। [4]गई। [5]बहियां। [6]चुरियां। [7]'मूहर' नहीं। [8]नभ नहीं। [9]दोऊं। [10]'मूहर' नहीं। लगरवा। जागै।

राग – सारग लूहर[1]
ताल – जलद तितालो

पना हस बोल वे लाडली छोटी रा पना[2] ।
कुज भुवन रसराज
मोहनो ताना नी लै लै
मुरली मे लै गया मोल वे[3] ॥ १

राग – सारग लूहर[4]
ताल – जलद तितालो

पहलै मुकलावै गयौ मेल री, कोई सावरौ मिळावै ।
रसराज उण बिन कळ नही निस दिन
होरी कौ सूझै कैसे खेल री ॥ १

राग – सारग लूहर[5]
ताल – जलद तितालो

फूली फूली नवल लाल
सरस सबज बारी
चढ देखौ अटरिया ।
इत कू बिंदलिया हो
और मोरी सीस की लाल चुनरिया ॥ १

राग – सारग लूहर[6]
ताल – जलद तितालो

बसरी की तान सुनाय गयौ सावरौ ।
कुज भुवन रसराज आधी रैण कू री
मेरौ मन कर गयौ बावरौ ॥ १

राग – सारग लूहर[7]
ताल – धीमौ तितालो

सजनी कारे बादर आए
उमड घुमड चढ मेरै सिर पै नवेले ।

---

[1] 'लूहर' नहीं । [2] बर्ना ख ग । [3] मैं ग । [4] 'लूहर' नहीं । [5] 'लूहर' नहीं । [6] 'लूहर' नही ।
[7] 'लूहर' नही ।

तिन्हैं देख वन वन में बोलै मुरवा पपया
कोयल कूक मच बेलैं ॥ १

राग – सारंग मूहर
ताल – मत्त तिताली

सजनी नियरो सावन आवै, बादर ध्याव
बोलै मुरवा मा मिळ वनू में।
त्यों कछु कछु मिळी चपळा हु कैसी
चमके पिया के कहि घी सगनूं में ॥ १

राग – सारंग मूहर[1]
ताल – मत्त तिताली

सायबा थारी सेजरिया में म्हांने डर लागै हो[2]।
कांई कह्यो रसराज म्हे नही आणां सांवरा
नैंण उळझ रया नींदरियां मैं ॥ १

राग – सारंग मूहर[3]
ताल – मत्त तिताली

सांवरे सुदर बिन यूं प्रीतल्यां कोई[4] तोरै री सयां।
रसराज मारवा कोयलिया बोलै
वन वन मांवा मोरे री ॥ १

राग – सारंग मूहर[5]
ताल – मत्त तिताली

सांवरो वसी परदेस री कैसें आऊं री कजरवा।
रसराज कर कुं महैदीया[6] गाऊं कैसें
सवाई होय भेस री मैंना ॥ १

---

[1]मूहर नहीं। [2]'मूहर' नहीं। [3]म्हाने डर लागै हो सायबा थारी सेजरिया में। [4]'मूहर' [illegible]। मेरे तरे री न। [5]'मूहर' नहीं। [6]महंदीया।

राग – सारंग लूहर[1]
ताल – जलद तितालो

सावरौ बेदरदी प्रीत लगाकर[2] भूल्यौ री मोही ।
रसराज श्रे मतवारे दिन जावे
वन वन केसू फूल्यौ री ।। १

राग – सारग लहर[3]
ताल – जलद तितालो

सुन प्यारे बात हमारो
राखै ना मोरा जिया ।
माहि सम बौहती है, लख जुरवा
तोसा तू ही पीया ।। १

राग – सारग लूहर[4]
ताल – जलद तितालो

सुन मा बोल रहे है
मुरवा कोयलिया
बन मे फूली लता नई री
मितवा नही है घर सुख की चीज सब
दुख-दायक मई री ।। १

राग – सारग लूहर
ताल – दीपचदी

इन नैनन* का मोरे राम जादू लग गया ।
जादू लागया वैदै मिटावै[5]
नैनू दा दुहेला कांम ।। १

राग – सारग लूहर
ताल – दीपचदी

ठाढी का देखै परदेसी तू कर खात ।

---

[1]'लूहर' नही । [2]लगाय कर । [3]'लूहर' नही । [4]लूहर नहीं । *नैन ग ।
[5]मिळाव ।

सावन कळस भरे जळ सिर प
पनिहारन की पांत ॥ १
मन सौं मन मिळे तब तेरी
हो रही माननी की भांत।
रसीलाराज तब राग पिद्यानी
बजन लगी जब तांत[1] ॥ २

राग – सारंग सूहर
ताल – दीपचंदी

मनदीया कौन सुनें कासु कहियै।
रसराज भायो फागन मतवारो
सांवरे बिनां क्यूं रहीयै ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – दीपचंदी

मनदीया नंद को संगरवा न भायो।
रसराज बहु अगन परजाळत
बैरी जोबन तन छायो ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – दीपचंदी

लाला ऐसी भर पिचकार[2] न मारौ।
रसराज चूंनर भीजतीं निवारो
आंख अबीर न डारौ ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – दीपचंदी

ससरिया काहे कूं द मोय गारी।

तांप क । [2]पिचकारी मारौ । मोहि ।

रसराज मोहन लग्यो मन न रहु
लख समसेरन मारो ॥ १

राग – सारग लूहर[1]
ताल – धीमो तितालो

आली[2] अवा अवा कोयल बोली, सिखरा नाचै मोर
काई कमळ कमळ पर भवरा डोलै फूली मा वसत[3] ।
फूली छै वसत नवेली
तू क्यू कुमळी जाय ।
काई सरस सनेही घर मित, न
आयो दीसै धण री कत ॥ १

राग – सारग लूहर[4]
ताल – धीमो तितालो

चपला री छाया[5] पना मारू चालोनै रमणनै ।
हरया हरया पात सुरगा किसलै
रसराज फूल छै सुहाया ॥ १

राग – सारग लूहर[6]
ताल – धीमो तितालो

नैणा री वाता, प्रीत थे लगाई पना मारू जी ।
रसराज नैण नादाणा लग जावे
दोहिलो मन नू निभाता ॥ १

राग – सारग लूहर[7]
ताल – धीमो तितालो

म्हारै डेरै चालो नै छोटी रा भवर पना
अनत क्यू विलम रया छो[8] ।

---

[1] 'लूहर' नहीं । [2] 'आली' नही । [3] वसत । [4] 'लूहर' नहीं । [5] छांहया । [6] 'लूहर' नही । [7] 'लूहर' नही । [8] छोजी ।

काई र सिखलायें मालीजाजी थे
नई प्रीत लगाम पना, थोड़ा सा दिनां में बिसर गया ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – होरी री

मासक तेरी नदोयां गहरी' बरन हुई रे।
घस भाई लोक सरम विसार
क्यूं कर प्यारे उतरूली पार
रसराज बिन मिले होसी ज्यांन जुई ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – होरी री

चतर कलाळी तूं बतलादे हे
या दारूड़ी कोठे कोठे जावे छै मतवाळी।
इण दारूड़ी रा मनवार में मारू इस सा रमें
मोहि लीयो छै उण ज्यूं त्यूं विलमादे हे
या दारूडी कौठे कौठ जावे छ प्रीत जादी ॥ १

राग – सारंग सूहर
ताल – होरी री

हो हो पनाजी अब घर आवो
अब घर आवो म्हारा राज
अब घर आवो म्हांने थांरो छै उमावो हो।
सिर पर आयौ छ चोमासौ पनाओ म्हारा राज
रसराज म्हारौ कांई मन तरसावो हो ॥ १

राग – सिन्धूरो
ताल – चीपचरी

भर भर डारत अबीर गुलाल कुमकुमा
केसर रंग पिचकारी।

बैरी। चतुर। 'अब घर आवो नहीं।

एक बहार सोहत फाग न
दूजी वेस मतवारो ।। १
गेंद गुलाव वहैत आपस मे
तक तक वारी वारी* ।
इत रसराज त्र जेस लाडलो
उत व्रषभान-दुलारी ।। २

राग – सिन्दूरो
ताल – दीपचदी

सज सज आवत है ब्रजनार खेलन कू
ससिवदनी अगनैनी ।
केसरिया सिर चीर वसती
फूलन गूथी वैनो[1] ।। १
भूहा नैन नचावत सरसी
गावत कोयल बैनी ।
सोहै रसराज आखै अलसानी
जगी फागन की रैनी ।। २

राग – सिन्दूरो
ताल – होरी रौ

कन्हइया मोरे अनवट बिछवा समेत ल्यादे
मोरे पैरू कू रतन नूपरवा ।
फगवा मे खेलत वाजत नीकें
सौत का कलेजा जलाऊगी सुनाकें ।। १
झीना झीना वाजना गूघरवा
होरा मोती पना उवा मे मानक लगादे
रसीलाराज पिय लटुवा भयौ जो तू
अपनै करन सौ वेसक पहरा दे ।। २

---

*'गेंद' और 'तक' दोनों चरण नही । [1]वेनी ।

राग – सिन्धूरी
ताल – होरी री

सख्यां उवै दिन कब[1] आवेंगे
जिन दिनन सांवरिया सौं[2] लागी लगन।
केसर क्यारी चमेली के बिरवा
दाख मंडप उलझावेंगे ॥ १
गुल लाला गुल सेरू सुनावेंगे।
रसीलाराज पिय ल्यावेंगे कौल पर
गुनिय बसंत बहार गावेंगे ॥ २

राग – सिन्धूरी
ताल – होरी री

हेरी मैं नाम न जानूं, उवा को गांव न जानूं[3]
को गोकुल बरसाना।
यूंही गुजरिया दोष लगावत
कौनसी राधा को काना ॥ १
डारी गुलाल करी कछु हांसी
सब ही करत है जान अजाना।
होरी के दिनन मेरा मनैं हांसि को
लिख दियौ है परवाना ॥ २

राग – सिन्धड़ी
ताल – चलत तिताली

नैणांवे निजारै नाल मोहि रांझणा वे
आढ घनी हुण[4] जग सियाणीं[5]
प्रीत लगी अब की पछतांणा मी।
रसराज चंद चढ़ा आसमान मैं
कुल आलम सिर चांनणा वे ॥ १

---

[1] अब कब। [2] स। [3] उवा को गांव न जानूं नहीं। [4] कान्हा। [5] हुस। [6] सयानाजी।

राग – सिंघडो
ताल – जलद तितालो

राझै दी नाल मेरा कौल सयाणी ।
रसराज कसम नवी दी रब जाण दा
इस्क लगा किस डोल ॥ १

राग – सिंघडो
ताल – जलद तितालो

सावरा निमाणा सानू भूल गया वे
इस्क लगाय बेदरदी हुआणो
क्यू कर रहा सिखला ने गया वे ।
केई केई गला वताके[1] धिगाणा*
सबज बाग दिखलाय गया वे* ॥ १

राग – सिंघडो
ताल – जलद तितालो

सावरैदा हमसे मिजाज केहा ।
रसराज मैं भी होती चपाहारे
जो जाणती उसमें लैहजा[2] भवरैदा ॥ १

राग – सिंघडो
ताल – जलद तितालो

हो महीडावे जुलफा उलभी गोरै मुखडे सुलभाज्या[3] ज्यानी यार ।
रसराज तेरै वेषणै नू विरोही
निस दिन रैदी मुरभी उलभी ॥ १

राग – सिंघडो
ताल – धीमो तितालो

अणवट मू न गही[4] मा
विछिया री धुन सुण[5] कर के, लाडलै री सेभां

---

[1]वतलाके । *-*ये दोनो चरण ग. मे नही । [2]लहजा । [3]जा । [4]गई । [5]सुण सुण ।

मलवेली रग भरी रग री, राजकवर मारवी रै ।
लचक छ लक कमर री
मचम रह्यौ छै पिलग मलवेलौ ।
झण झण झमक रही छ पायल
मत मत मोल पियारीजी रा
नाजी नाभी सरवृदार, इतनां जखम कपोल प्रधर कुच पर
वेसर बांक दाग चुनड़ी र ॥ १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमो तितालो

राज म्हारी मांनो छोटी रा भंवर' आलीजा जी हो।
इतनी अरज रसराज सुणों छायवा
म्हूं तो सारी विध थांसूं राजी वनरा जी हो ॥ १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमो तितालो

आ मिलक जाणां दोस्त, तेरा क्या जाता ।
रसराज तूं नहीं आता
मेरा दिल दुख पाता ॥ १

राग – सिन्धड़ी
ताल – धीमो तितालो

दें दी वे सरसी भर भर प्याल
लैं दा सांवरा जोग्तरां की मजा वे स्याणां ।
रसराज इस्कां दी गलां जांण गए
वे दिलमादे गांणें वाले ॥ १

भंवरजी म ।

राग – सिंघडो

ताल – धीमो तितालो

सावरै नु मिलादैणी कोई सइया
उस विन वेकल रंदीया मे।
वेप वेष मुख पाणी नी पीती
रसराज हुए दिन के विछरे नू ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

आज की अनोखी तयारी मोरी[1] राधे।
भूहा बक तणी छै कबाण* सी
मन अग द्रग सर साधे ॥ १
चंपा चीर ओढण[2] अलबेला
अगीया कसन छिब[3] साधे।
रसराज मोहन लटवा होसी[4]
जुलफ जाळ बिच वाधे ॥ २

राग – सोरठ

ताल – इकौ

काहे कू अखिया[5] लगाई नटनायक[6]।
समज[7] मिजाल[8] रूप मन मोह्यौ
मिळी[9] विछरै दुखदायक[10] ॥ १
तुम बाके सूधौ मन मेरौ
बदी नही किसु[11] लायक।
जोबन[12] जिहाज बचै रसराज
या प्यारा जो होय सहायक ॥ २

---

[1]म्हांरी। *कत्ताना ग। [2]ओढणी। [3]छब। [4]हो ग। [5]अखीयां। [6]हो नन्द-नायक। [7]समझ। [8]मिजांज ख ग। [9]मिल ख ग। [10]दुखदाय। [11]किसू। ख ग। [12]जोब।

अलबेली रग भरी रग री, राजकंवर मारवी र।
लचकै छ लक कमर री
मचक रह्यौ छ पिलग अलबेलौ।
झण झण झमक रही छ पायल
मल मल बोल पियारीजी रा
माजी माजी सरहदार, इतनां जखम कपोल अधर कुच पर
बेसर बांक दाग चुनडी र ॥ १

राग – झिंझोटी
ताल – धीमी तितालौ

राज म्हांरी मांनौ छोटी रा भंवर¹ मालीजा जी हौ।
इतनी अरज रसराज सुणों सायबा
म्हूं तो सारी विध थांसूं राजी बनरा जी हो ॥ १

राग – झिंझोटी
ताल – धीमो तितालौ

आ मिलक आणां दोस्त तेरा क्या जाता।
रसराज तूं नहीं आता
मेरा दिल दुख पाता ॥ १

राग – झिंझोटी
ताल – धीमी तितालौ

दें दी वे सरसी भर भर प्याल
लैं दा सांवरा औरसरां की मजा वे स्याणां।
रसराज इस्कां दी गर्मा आण गए
वे विससादे गांणें बामे ॥ १

---

¹ भवरजी र।

राग – सोरठ

ताल – इकौ

लगी छै म्हानै साहिबा मिळण री उम्मेद ।
आठ पहैर[1] इक सार अनोखा
विरह बाण रह्या वेध ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

वनाजी थारै[2] सैहरियै रग लाग्यौ[3] ।
गूघटड़ै रग लाग्यौ मारवण रै
और रग नेहरियै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

बादरिया तू मत बरसौ[4] मेरौ पियरवा विदेस ।
ऊन विन रसराज आज
ह्वै गयौ वैरी केस केस ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

कन्हइया[*] चुन चुन कलिया ल्यावै[5]
राधा गूथत चौसर नौसर[6]
पहरै आप पहरावै ॥ १
भवर मस्त भए लुटत पराग मे
पुष्प[7] कै धोखै[8] कर मे चल आवै ।
रस लूटत रसराज वसत कौ
दोऊ सुख मे न समावै ॥ २

---

[1]पहर । [2]थ्हारै । [3]लागो । [4]वरसै ख ग । [*]कहनईया । [5]लावै । [6]'नौसर' नहीं । [7]पुष्पन । [8]धोखै ग ।

राग – सोरठ

ताल – इकी

गुमानीड़ा कहीं समासे न* जा।
घणघट बाग बगीचे सांवळ
आवे सौ सब' मत' जा ॥ १
सरह किसू कै जिय लग जासी
इसमी भरज म्हारी मान जा।
सांवळीया रसराज सिरोमण
मांहो रहजा गळ लग जा ॥ २

राग – सोरठ

ताल – इकी

पना म्हांसु बोलो क्यूं नै राज, मासीजा बोलो क्यूं न राज
पिमारा प्रीतम किण सिखलाया थांनै सैना।
निजर न मेळौ छाती छोलौ
मसा सकसो काई तोलौ।
रसराज भौरां री साथ नित डोलौ
म्हांसु' दिस री नहीं बोलो ॥ १

राग – सोरठ

ताल – इकी

पना म्हांसु रूठड़ा जावे जी
हो सम्यां म्हारी कोई समझावै उवांनै जाय।
नैणां रा अंजन ज्यूं लागे छा
हार हिया रा दिखलावै छा।
रसराज म्हें भय क्यूं कर मनावां १
काई जांणां कुण सिदसावे
काई जांणां कुण भरमावै ॥ २

न य। °राम्ह। पडि। 'म्हांरा न। समझावै।

राग – सोरठ

ताल – इकौ

लगी छै म्हांनै साहिबा मिळण री उम्मेद ।
आठ पहैर[1] इक सार अनोखा
विरह बाण रह्या वेध ।। १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

वनाजी थारै[2] सैहरियै रग लाग्यौ[3] ।
गूघटडै रग लाग्यौ मारवण रै
और रग नेहरियै ।। १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

बादरिया तू मत बरसौ[4] मेरौ पियरवा विदेस ।
ऊन विन रसराज आज
ह्वै गयौ वैरी केस केस ।। १

राग – सोरठ

ताल – इकौ

कन्हइया[•] चुन चुन कलिया ल्यावै[5]
राधा गूथत चौसर नौसर[6]
पहरै आप पहरावै ।। १
भवर मस्त भए लुटत पराग मैं
पुष्प[7] कै धोखै[8] कर मे चल आवै ।
रस लूटत रसराज वसत कौ
दोऊ सुख मे न समावै ।। २

---

[1]पहर । [2]थ्हारै । [3]लागौ । [4]वरसै ख ग । [•]कहनईया । [5]लावै । [6]'नौसर' नही । [7]पुप्पन । [8]धोकै ग ।

राग – सोरठ
ताल – इकी

वैरागण कर गयौ स्याम सनेही।
उण विन भनस नही मन मामें
हो रही देह वदेही[1] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – इकी

सांवरीया[2] जासी है वेस वहार।
जमना तीर कदम की छांही
निस दिन कीजे विहार ॥ १
जं[*] वसंत वहार के दिन ए
हरे फूल हरी डार।
तामें मन को महरम कर तु
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – इकी
मजाकत नैंणांदी[3] या वे
भणी क्या खूब नजर की नाजो।
मूंहां दी वांक पानूं दी लाली
मिसी सोहै सोहै गुलाबी।
या रांभे नाल मोही गई रसराज
परी कोई जग सयासे दी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – पांठ चौताली
भंवरा क्यूं चल आयो वाडी म्हारी
नवसी वेलड़ी मपट रमौ रे सूं भूठा।

---

[1]विदेही ख ग। [2]सांवरिया। [*]दूसरा पद नहीं है ख ग। [3]नैंणा दिया ग। यह पद पूरी नहीं है।

लेसी सवाद कठासू वटाऊ
रखवाळै भी नही पायौ ।। १

राग – सोरठ
ताल – चौतालौ

उमड ग्राई री मा ।
कारी घटा चमकन लागो
बोज बुद सुहावनी झर ल्याई ।
इद्र धनुसि[1] रतनाए सुहाए
लाल पीरे मेहु दसू दिसा छाई ।। १
हरी हरी भूम पै विरछ वेली लपटाई
मुरवा कोयलीया[2] की धुन[3] मन भाई ।
रसराज या समै घर ग्रायौ सावरौ
ग्रावन मे जोबना को द्यूं वधाई ।। २

राग – सोरठ
ताल – चौतालौ

चंचल भूह चढाय नचाय नैन
चद्र-जोत वदन म्रदु मदहास हस हस
दुपटै कसन की नवेली छिब कैसी कहु
ग्रलवेली पाग[4] के सवारे पेच कस कस ।। १
मुरली की धुन मे तान* लै लै रसभरी
समज[5] सनेह मनमथ जोबन रस रस ।
रसराज ग्रैसी ग्रनोखी दिखाउ लीला
कियौ राधे लाडली को लालन मन वस वस ।। २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

ग्रब घर ग्रावौ नै विदेसी वालम
सिर पर ग्रायौ छै[6] चौमासौ सायवा ।

---

[1]धनू सीह । [2]कोयलिया । [3]धुनि । [4]पाघ । *ताना लै लै ताना रसभरी ग । [5]समझ । [6]न ।

राग – सोरठ
ताल – इकी

बैरागण कर गयो स्याम सनेही।
सण बिन मनस नहीं मन लागे
हो रही देह वदेही[1] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – इकी

सांमरीया[2] भाती है वेस महार।
जमना तीर कदम की छांही
मिस दिन कीजे विहार ॥ १
जैं[3] वसंत मह्रार के दिन ए
हरे फूल हरी डार।
साजें मन को महरम कर सूं
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – इकी

मवाकद नैणांदी[4] या वे
मणी क्या खूब नजर की नाजो।
मूंहां दो बांक पानूं दी लाली
मिसी सोहैं सोहैं गुलाबी।
या रांमै लाल मोही गई रसराज
परी कोई अग सयाली दी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – पाठ बीताली

भंवरा क्यूं चल आयो बाडी म्हारी
नमसी बेसड़ी लपट रमी रे तूं झूठा[5]।

---

[1]विदेही क न । [2]सांवरिया । [3]पूरा पद नहीं है क न । [4]नैणां दिया प । [5]यह पंक्ति पूरी नहीं है ।

लेसी सवाद कठासूं वटाऊ
रखवाळै भी नही पायी ।। १

राग – सोरठ
ताल – चौतालो

उमड आई री मा ।
कारी घटा चमकन लागी
बीज बुद सुहावनी झर ल्याई ।
इद्र धनुसि[१] रतनाए सुहाए
लाल पीरे मेहु दसू दिसा छाई ।। १
हरी हरी भूम पै विरछ वेलो लपटाई
मुरवा कोयलीया[२] की धुन[३] मन भाई ।
रसराज या समै घर आयी सावरी
आवन मे जोबना को द्यू वधाई ।। २

राग – सोरठ
ताल – चौतालो

चंचल भूह चढाय नचाय नैन
चद्र-जोत वदन म्रदु मदहास हस हस
दुपटै कसन की नवेली छिब कैसी कहु
अलवेली पाग[४] के सवारे पेच कस कस ।। १
मुरली की धुन मे तान* लै लै रसभरी
समज[५] सनेह मनमथ जोबन रस रस ।
रसराज ग्रैसी अनोखी दिखाउ लीला
कियौ राधे लाडली को लालन मन वस वस ।। २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

अब घर आवौ नै विदेसी वालम
सिर पर आयौ छै[६] चौमासौ सायबा ।

---

[१]धनू सीह । [२]कोयलिया । [३]धुनि । [४]पाघ । *ताना लै लै ताना रसभरी ग । [५]समझ । [६]न ।

राग – सोरठ
ताल – इकी

बैरागण कर गयो स्याम सनेही ।
उण बिन भनस नहीं मन लागै
हो रही देह बदेही[1] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – इकी

सांवरीया[2] जाती है वेस बहार ।
जमना तीर कदम की छांही
निस दिन कीजै विहार ॥ १
च[3] बसंत बहार के दिन ए
हरे फूल हरी हार ।
साजै मन को महरम कर तू
रसीलाराज रिझवार ॥ २

राग – सोरठ
ताल – इकी

नभाकस नैणांदी या वे
भणी क्या खूब नजर की नाजो ।
मूंहां दी बांक पांनूं दी लाली
मिसी सोहैं सोहैं गुलाबी ।
या रांझ नाल मोही गई रसराज
परी कोई जग सयालै दी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – पांठ चौताली

भंवरा क्यूं बल आयो बाडी म्हारी
नवली बेमड़ी सपट रयो रे तूं मूठा[*] ।

---

[1]बिदेही क ब । [2]सांवरिया । [3]दूसरा पद नहीं है क ब । मैंरा बिमा प । [*]यह पंक्ति पूरी नहीं है ।

पर नहिं मार सकै छै पारेवा*
अपछर देखण नैं हुळसै।
म्है[1] परवार चाह कर आयौ
मान अरज तौ मिळण दै॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

काई रस वरसै रसीली रात।
लाजती उमगती पास खडी छै
गूघट आलीजा रै हाथ॥ १
दारूडा री सीसी प्यालौ सोवै
रमज समज री बात।
सहेल्या सराहै सायधण चाहै
रसराज थारौ साथ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

कामणगारा नैणां री मारवण
म्हारौ मारूडौ मोहि लियौ।
रसराज इण गौनै री चूनडी
थोडा सा दिनां मैं काम कियौ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

केसरिया चमकै चीर
जरी रा पला रौ जी।
रसराज रैण अंधेरी मे अनोखो
चानणौ छाप छला रौ॥ १

---

*परेवा। [1]सह ख ग.।

घर घर गोरी सिंगार साजै छ
तीज रो बगीचो छ[1] तमासो ।। १
लोक विदेसां सूं घर भाव
लखा विरखा रो पासो ।
रसराज दूर सु भाय करोला
म्हारे महलां रणवासो ।। २

राग – सोरठ
ताल – बसंद तितालो

आज स्फळावो न पना म्हांन पीहरिय ।
मन भुलाई छे काल मिळण नैं
गवरल रो छ तिंवार ।। १
इस्वर गवरल आगै पूज्या
पाया थे सिरदार ।
आज्यो उठ ही रसराज क्रिपाकर
रंग रसीया[2] रिझवार ।। २

राग – सोरठ
ताल – बसंद तितालो

ई मिस रकां नैं मोहि कु पान दै ।
कहै नी मा[3]मोरी बाबा नैं इण सुभ दिन
याकी लैर मोहि जान दे ।। १

राग – सोरठ
ताल – बसंद तितालो

क्यूं रे मलवेसी रा देसण दै
म्हैं तौ तक आई छो थारी सायषण मैं ।
रूप वेस गुण भरी तो सुणी छ
मानवत्यां में मुख ।। १

---

[1] न । [2] रसिया ज ग । [3] कहूनी मा ।

पर नहिं मार सकै छै पारेवा*
अपछर देखण नैं हुळसै।
म्है[1] परवार चाह कर आयौ
मान अरज तौ मिळण दै ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

कांई रस वरसै रसीली रात।
लाजती उमंगती पास खडी छै
गूघट आलीजा रै हाथ ॥ १
दारूडा री सीसी प्यालौ सोवै
रमज समज री बात।
सहेल्या सराहै सायधण चाहै
रसराज थारौ साथ ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

कामणगारा नैणां री मारवण
म्हांरौ मारूडौ मोहि लियौ।
रसराज इण गौनै री चूनडी
थोडा सा दिनां मैं काम कियौ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

केसरिया चमकै चीर
जरी रा पलां रौ जी।
रसराज रैण अंधेरी मे अनोखो
चांनणौ छाप छला रौ ॥ १

---

*परेवा। [1]सह ख ग.।

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

केसरिया रग रो चीर पलुड़ा जरी रा जी।
रसराज मिष मिष तार जरी रा
मोहै मोहै भूल परी रा ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

छोटी रा गुमानीड़ा चूई रंग लाग्यो छै
महलां न पधारो जी।
रसराज म्राज तिवार गजर रो
सायमण सेजा न बुलावै ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

छदगारी राधा झुक झुकती सी वेसर री झोली ए।
मोहि लीयो छै ब्रजराज सांवरो
उड़[1] साळुर गूंघट री झोलो[2] ॥ १
चंदवदन म्रगमीन लोचनी
चढ़ते जोवनियां को लोलो।
मन री मुकर रसराज नैणा री
मन कै मोहन मैं दे महोलो[3] ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

दुपटै[4] री झालो भजी महाराज।
इण ने दुपटा रै झाल साहबा[5]
मनड़ो कियो छै मतवाळो ॥ १

---

[1]र। [2]झोलो ए। [3]महोलो ए। [4]दुपटा ब। [5]सायबा ब लाहिबा

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

नीकी लाजो जी पनाजी म्हारै नथ दुलडी ।
रसराज सूरत रा मोत्या सु पुवाई
सवज पना सु जडी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

नेहडलो दुनिया वीच इक सरसा रो जी[1] ।
रसराज मेळ वण्यो चाहीजै
रूप समज वरसा रो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

बतळावै कोई लसकरिया केसरिया[2] वालम राज
ऊठ रही लहर ब्रह[3] री अब तो
लोप गई कुळ लाज ॥ १
उवा सूरत उणिहार विसर गई
विसर गई सारो घर काज ।
रसराज आरत बंदी लाडली नै
आय मिळै रसराज[4] ॥ २

राग – सारंग लूहर
ताल – जलद तितालो

बाजूबध गैरीजी[5] गूघटडो
मगज करै छै म्हारा राज ।
पैला[6] दिन री लजीली रात नै
माफ करो तकसीर ॥ १

---

[1]इसक रसारो जी । [2]केसरीया । [3]विरह ख ग । [0]लाडनी नै ग । [4]ब्रिजरान ख, ब्रजराज ग । [5]गहरोजी । [6]पहला ख, पेला ग ।

राग – सोरठ

ताल – बसद तिताली

केसरिया रग रौ चीर पमुरा जरी रा जी।
रसराज विच मिच सार जरी रा
मोहै मोहै फूल परी रा ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बसद तिताली

छोटी रा गुमानीडा धूड़ रग लाग्यो छै
महलां नै पधारो जी।
रसराज म्राज तिमार गवर रो
सायधण सेजां मै झुलावै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – बसद तिताली

मदगारी राधा झुक झुकती सी बेसर री झोलौ ए।
मोहि लीयौ छै मजराज सांवरौ
उड़[1] साळूर गूंघट रौ झोलौ[2] ॥ १
चदवदन मृगमीन - लोचनी
चढ़ती जोबनियां की झोलौ।
मव सौ मुकर रसराज नैणां रो
मन कै मोहन ने दे महोलो[3] ॥ २

राग – सोरठ

ताल – बसद तिताली

दुपटे[4] रौ झाली मजी महाराज।
इण मे दुपटा रै झालै साहबा[5]
मनड़ौ कियो छै मतमाळौ ॥ १

---

[1]उर। [2]झोलौ ए। [3]महोलौ ए। [4]दुपटा ब.। [5]सायबा ब साहिबा ब।

मोहित हुई थारी सूरत ऊपर
मिट गई उवै सू लाज ॥ १
लाज उमंग भरी सायधण री
हस कर गूघट खोलौ ॥ २
आय रह्यौ छै सुख नै सनेह री
सरस पवन रौ झोलौ[1] ।
रसोलाराज अब ल्यौजी सोरठ री
माझल रैण रा महोलौ ॥ ३

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

मोही मोही सायबा नैणा रै निजारै
आई जला[2] थारै बूबन मुजरै
होर ज्यु सहर हजारै ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

या कोयलडी कौठै* बोली मा ।
आधी रात सघन वाड़ी रा
अबवा की डारी डारी डोल ॥ १
इणनै वसत रा सुगध पवन मे
पाख पाख झकझोल ।
नई व्याही[3] किणीयक विरहण री
वैरण छाती छोल ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

यौ वरज्यौ नहि मानै री ।
हठीलौ लाला, सारी रैन[4] रह्यौ रूस सया ।

[1]झैलौ ग. । [2]जल्ला । *कांरै ग । [3]व्याई । [4]सा रैंन ग. ।

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

म्हांन ल्याय[1] दीजो महाराज
मोतीड़ा मौसर मैं।
रसराज माणक मोहन माला
मोर पना नौसर[2] नैं॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मारू सब मायो हे मा
दै[3] सोती नादान।
झळकै भाल रसी मुख झिमकै[4]
निपट सागणी छै मांन॥ १
चलण बोलण मैं घमड समज रो
किसो छै सुहाणी मे बान।
रसराज मोहन सिर रो सेहरो
वाल्हा[5] म्हांरो मिजमांन॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मिलण रो मारू म्हांनै चाव
मिलण रो[6] प्यारा म्हांनै चाव।
निस मिलणो किण रीत होय सो[7]
थाप बताओ नैं[8] उपाव॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

भग णी[9] बोसैमी बोलो महाराज।

---

[1] लाय। [2] नैसर। [3] दे ...। [4] झमकै। [5] म्हारो ...। वाल्हो ...।
[6] रो नहीं। [7] होमला। [8] मन। [9] मृगनैणी ... मृगानैणी ...।

मोहित हुई थारी सूरत ऊपर
मिट गई उवै सू लाज ॥ १
लाज उमंग भरी सायवण री
हस कर गूघट खोली ॥ २
आय रह्यौ छै सुख नै सनेह रौ
सरस पवन रौ झोलौ[1] ।
रसोलाराज अब ल्यौजी सोरठ री
माभल रैण रा महोलौ ॥ ३

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालो

मोही मोही सायवा नैणा रै निजारै
आई जला[2] थारै वूवन मुजरै
होर ज्यु सहर हजारै ॥ १

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

या कोयलडी कीठै* बोली मा ।
आधी रात सघन वाडी रा
अवबा की डारी डारी डोल ॥ १
इणनै वसत रा सुगध पवन मे
पाख पाख झकझोल ।
नई व्याही[3] किणीयक विरहण री
वैरण छाती छोल ॥ २

राग – सोरठ
ताल – जलद तितालौ

यौ वरज्यौ नहि मानै री ।
हठीलौ लाला, सारी रैन[4] रह्यौ रूस सयां ।

[1]झैलौ ग । [2]जल्ला । *कांठै ग । [3]व्याई । [4]सा रैन ग. ।

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालौ

म्हांनै न्याय[1] दीजो महाराज
मोतीड़ा नौसर नैं।
रसराज मांणक मोहन माला
मोर पना नौसर[2] मैं ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालौ

माळ सज आयो हे मा
वै[3]सोती मादांन।
झळकै भाल रती मुख झिलकै[4]
निपट सागणी छै भांन ॥ १
चलण बोलण मैं चमक समक रौ
किसी छै सुहाणी प बान।
रसराज मोहन सिर रो सेहरो
मारू[5] म्हांरो मिजमांन ॥ २

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालौ

मिलण री चाव म्हांनै चाव
मिलण रौ[6] प्यारा म्हांनै चाव।
नित मिलणौ किण रीत होय सौ
आप बतावौ नैं[7] उपाय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालौ

अग णी[8] बोलैजी बोलौ महाराज।

---

[1]न्याय। [2]पैंसर। [3]हे ब प। [4]झलकै। [5]मारो ब, वाल्हो ग। [6]रौ नहीं। [7]होवसा। [8]न। [9]भूमरीको ब भूवारीगी प।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

सांवणीया तू काई रग सरसै रे ।
चढी घटा विच विजळी चमकै
जळ बूदा वरसै रे ।। १
वसन सुरगा रा चगा पलुडा[1]
पवन सु[2] पिया परसै रे ।
तीज रो रैण मिलण रगरसीया[3]
सराज मन तरसै रे ।। २

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

सावणीया तू काई सुख दै छै रे ।
झूलरा झूलरा चंदावदनी
झूमर झूला लै छै रे ।। १
लता विरछा सु लपट रही छै
सोरभ पवन वहै छै रे ।
रसराज दूर गया गोरचा नै
विछड्यां सजन लहै छै रे ।। २

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

सावळडा थे आज्यो जी मिजमान ।
सावळीया[4] दुपटा तन कसता*
नैणा मे अलसान ।। १
अलवेलीया[5] सिर सावळ चीरो
रसराज माझल रैण री लेता
सोरठ री मुख तान ।। २

---

[1] पलूडा ख ग । [2] सू । [3] रगरसिया । [4] सांवळिया । * कसवा ग । [5] अलवेलिया ।

किसीय धिगांणी दिरायौ मोळ
उण पर मैं मार रही मसूसैं।
मैं मन ही न ऊथाप्यो[1] वचम सूं
नंदरायजी का सूंस[2] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तिताली

विदेसीड़ा मिळ मत जा।
या सौ वहार वणी छै रसीली
भाग की रासी रहू जा ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तिताली

बेसर रौ मोती ठमक रयौ छै मारा[3] राज।
रसराज ठमक रै मिस सुं सुधर रयौ
थासु करै छ समजोसी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालौ

सायबा वे गया म्हानें मणा रौ महोसौ।
भाय गयौ सायबा किणीय[4] वलस रौ
कोड़यक सुख रौ भोसौ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – चलत तितालौ

सावणीया चंगा मास पीव मिलासी रे।
रसराज पपइया मोरला बोलै
बोल रया वदिरासी रे ॥ १

---

[1] उथाप्यो म। [2] सुंस प [3] मह ज., म्हारा प। [4] कि याहि प।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारूड़ा जादुड़ा की कीया ।
रसराज थाई नै देख्या जीवा छा
व्हो[1] नायक अलवेलीया ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

रंग डारी हो लला मोरी चुनडीया[2] ।
बुंद वुद[3] और मोर पपईया
एकमेक की मारी[4] ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

वालम का नेहरवा सजनइया[5] मोरी
पल पल मे मोहि कु याद आवै री ।
यौ नातौ[6] रस रीत प्रीत कौ
ज्यू तौ सजनी काचौ वेहरवा ।
आन मिळै रसराज मोहन अब
झुक झुक कै ज्यू सावन का मेहरव ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो व्रज[7] चद प्यारे नैना तो उनीदे चक मतवारे[8] ।
डगमग चरन धरत भुव भारे
वीतत रयण पधारे ।। १

---

[1]वहो ख ग. । [2]चूनरीया । [3]बूद बूद । [4]सारी । [5]सजन इहां ख । [6]न्यातौ ग । 'रस रीत' से लेकर 'आन मिलै' तक ग मे नहीं । [7]व्रिज ख । [8]चमकत वारे ग ।

राग – सोरठ

ताल – मसद तिताली

सांवळीया छैला नैंण लगा कैं जादुड़ा कर गया वे ।
रसराज मोहन[1] बेदरदी
सी थोड़ा सा दिनां मैं विसर गया वे ॥ १

राग – सोरठ

ताल – मसद तिताली

सैणां मैं संदेसो कोई ले जाय म्हारी सजनी
वाला मिलण री लगन मत लागी[2] म्हांने ।
रसराज उवासुं मिल्यां विना न सरै
मणद थामीजो नूं जताजे नी सजनी ॥ १

राग – सोरठ

ताल – मसद तिताली

सोहैं दारूड़ीरा वे छाकया नैंण ।
रूप मिजाज मरया मसमसा
सरसी मांझम रैण ॥ १
मोह[3] लिया नई गोरयां रा मन
वरण्यां न आवै वैंण ।
सांवळड़ा रसराज सिरोमण
वाल्हा[4] लागे छ सैण ॥ २

राग – सोरठ

ताल – मसद तिताली

हो मसवेमीया[5] म्हारे गळ लागी जी ।
रसराज थोड़ी सी रैण रही छै
दारूड़ी रा छाकया मत हो जागी जी ॥ १

---

[1]विजमोहन ब ब्रजमोहन प । [2]लागी नहीं म । [3]मोहे प । मोहि । [4]सांवलिया
[4]बाला । [5]मसवेलिया ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारूडा जादुडा की कीया ।
रसराज थाई नै देख्या जीवा छा
व्हो[1] नायक अलवेलीया ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

रग डारी हो लला मोरी चुनडीया[2] ।
वुद वुद[3] और मोर पपईया
एकमेक की मारी[4] ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

वालम का नेहरवा सजनइया[5] मोरी
पल पल मे मोहि कु याद आवै री ।
यौ नातौ[6] रस रीत प्रीत कौ
ज्यू तौ सजनी काचौ वेहरवा ।
आन मिळै रसराज मोहन अब
भुक भुक कै ज्यू सावन का मेहरव ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो व्रज[7] चद प्यारे नैना तो उनीदे चक मतवारे[8] ।
डगमग चरन धरत भुव भारे
वीतत रयण पधारे ।। १

---

[1] वहो ख ग.। [2] चूनरीया। [3] बूद बूद । [4] सारी। [5] सजन इहा ख । [6] न्यातौ ग ।
'रस रीत' से लेकर 'आंन मिलै' तक ग मे नहीं। [7] व्रिज ख । [8] चमकत वारे ग ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तिताली

सांवळीया छैला नैण लगा कैं जादूडा कर गया वे ।

रसराज मोहन[1] बेदरदी

सो थोड़ा सा दिनां में विसर गया वे ॥ १

राग – सोरठ

ताल – जलद तिताली

सैणां नैं संदेसौ कोई ले जाय म्हांरी सजनी

बाला मिलण री लगन प्रत लागी[2] म्हांनै ।

रसराज ज्वासूं मिल्यां विना न सरै

नणद बामीजी नूं जताय नां सजनी ॥ १

राग – सोरठ

ताल – जलद तिताली

सोहैं दारूडीरा वे छाकया नैण ।

रूप मिजाज भरया मतवेला

सरसो मांझम रैण ॥ १

मोह्[3] लिया नई गोरयां रा मन

बरण्यां न आवै बैण ।

सांवळड़ा रसराज सिरोमण

बाल्हा[4] लागे छ सैण ॥ २

राग – सोरठ

ताल – जलद तिताली

हो मतवेलीया[5] म्हांरै गळ लागो जी ।

रसराज थोड़ी सी रैण रही छ

दारूडी रा छाकया मत तो जागो जी ॥ १

---

[1]बिजमोहन क ब्रजमोहन ग । [2]'लागी' नहीं ग । सोहे ग । [3]मोहि । सांवळिया । [4]बाला । [5]मतवैलिया ।

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो म्हारा मारूडा जादुडा की कीया ।
रसराज थाई नै देख्या जीवां छा
व्हो[1] नायक अलबेलीया ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

रग डारी हो लला मोरी चुनडीया[2] ।
बुंद बुद[3] और मोर पपईया
एकमेक की मारी[4] ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

वालम का नेहरवा सजनइया[5] मोरी
पल पल मे मोहि कु याद आवै री ।
यौ नातौ[6] रस रीत प्रीत कौ
ज्यू तौ सजनी काचौ वेहरवा ।
आन मिळै रसराज मोहन अब
झुक झुक कैं ज्यू सावन का मेहरव ।। १

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालौ

हो व्रज[7] चद प्यारे नैना तो उनीदे चक मतवारे[8] ।
डगमग चरन धरत भुव भारे
वीतत रयण पधारे ।। १

---

[1]वहो ख ग.। [2]चूनरीया। [3]बूद बूद । [4]सारी। [5]सजन इहां ख । [6]न्यातौ ग । 'रस रीत' से लेकर 'आन मिलै' तक ग मे नही। [7]ब्रिज ख । [8]चमकत वारे ग ।

राग – सोरठ

ताल – त्यौरी

मनमोहनां छिनक में मुरली अधर लगाय कै मन ले गयौ।

जमुना तट बसीवट निकट

नटवर को भेप बनाय कैं दुख दे गयौ* ॥ १

राग – सोरठ

ताल – दीपचंदी

म्हांरा मारूजी नें मनाय सौत¹ सहेलड़ी।

पहली विछोहौ क्यूं कर निसरै

साले छै दिन रात प्रीत नवेलड़ी ॥ १

भली म्हांनें वालमजी² रा सूं छै

घड़ीयन नीसरै।

रही सूरत दिल ठहराय

पल नहीं बीसरै ॥ २

मैं तौ विलखधा नैण लगाय

वेदरदी हो गया।

रहया परदेसां मैं छाय

किसी बिलमा लिया ॥ ३

मैं नहीं करती प्रीत

येहा जो जांनती।

सखी सांईन्या री सीख

मुकर'र मांनती ॥ ४

जा पर होय तो विदेस

उडासुं उड़ मिलूं।

---

*यह गीत म ग्रंथ में पृ. २४ पर है। और दूसरा राग सोरठ ... ताल होरी पृ. २१ पर है। ¹सौत स.. ताल म। ²बालम ज्यू।

कोई साथी होय लेजाय
अव ही सग चलू ।। ५
जोवन पवन झकोळसू* जी
लूव रही छै वेलडी ।
रसराज पहैली° प्रीत लगा नै[1]
छाडी छै किण तकसीर म्हानै अकेलडो ।। ६

राग – सोरठ
ताल – दीपचदो

मोरा वलमा वसत है विदेस
नैनू नीदरिया गई ।
मुख तै प्यास छुध्या[2] गइ तन तै
ऊळझे सीस के केस ।। १
चलत कहा कहा रहत होयगौ
का पै कौन विध कैसे हु वेस ।
दै है वेग रसराज सीख उहा
जो रिजवार[3] नरेस ।। २

राग – सोरठ
ताल – इकौ

होरी खेलै[4] मोहन मुरार ।
तक तक गेंद वहै आपस में
चदन कुमकुमै चलत पिचकार
रसीलाराज आनंद रह्यौ लग
रीझ रहैं वरसानै की नार ।। १

---

*झकझोरन सू ग । °पैहली ग । [1]लगाय नै । [2]छुधा ख ग । [3]रिझवार ग ।

राग – सोरठ

ताल – धीमो तितालो

अजी म्हारा पायल बिछीया बाजै
कैसें आवां साहिबा[1] सेज[2] ।
मुंदे गुघरू तो चूडलो चमके
यो तंत बिजळी साज ।। १
इक पग सेज[3] एक पग बारणे
थारे मिलण क[4] काजे ।
रसराज कह्यो सो करां इत हित
उत लोक लाज मन लाज ।। २

राग – सोरठ

ताल – धीमो तितालो

आज्योजी[5] मोतीड़ां वाळा थे ।
आठ पहोर जी रहे थांई मैं
अेकरसां बतळाज्यो[6] जी ।। १

राग – सोरठ

ताल – धीमो तितालो

माया म्हारा[7] लाडण मनरा
छोटी सी धण संग सियां मां ।
सेहरा री जोत जगामग होतां
सायीड़ां रै साथे जीवन धण रा ।। १

राग – सोरठ

ताल – धीमो तितालो

आली म्हारी आलीजा नै स्याम[8] समझाय ।

सेज साहिबा क । [2]सेज क । सेज क । [4]रै क । आवोजी क । [6]बतळाइ
जो क । मारा प । [7]मारी क [8]स्याम क ।

प्यारौ रह्यौ किण ही उळगाणी रा
पेचा मे उळझाय ॥ १

दिन दिन री लीला उण तन[1] री
निस दिन रही छै सताय ।
आय मिळै रसराज सावळ अब
रहुली गळ लपटाय ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

आलीजा जी हो[6] विसर गया
नेहड़ौ नैंणा रौ लगाय मारूड़ाजी हो ।
ऊची नीची वाता कर कर सायबा
अनत थे जाय रया ।
ल्याता प्रीत जुगा[0] रा सहदा[2]
अब तौ थे हो गया नया ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

आलीजा म्हें चाकर रहस्या[3]
अलवेलीयां छैल थारा ।
वसीदार चाकर हुवै* स्या[4]
मनमानै सोई जद कैस्यां ।
म्हे भी तौ और न देखां
थानै न देखण देस्या ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

क्यू समझायौ जावै
बाईजी थारौ मारू छै जो मतवाळौ ।

---

[1]दिन स । [6]हो ग । [0]युगा ग । [2]सैंधा ख । [3]रहसा ख. । *सा ख ।
[4]ह्वै ।

लोक लाज मद देखण लाग्या[1]
पेली दे दुपटा रो भालो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

कामणगारा नैणां मोही महाराज।
दांवण गही छै कंठ लगाय लीजो
सुख दीजो श्री सिरताज ॥ १
बहोत लजाळू या धण तो माहांने छ
रसे जुदाई दिखलावो न राज।
रसराज वचाय[2] लीजो खेवटीया
जोबन करी या जिहाज ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

किण सारयो हे अजन मारवो
मणियाळा यां नैणां मांय।
सखी सुहागण थगा नें हाथ सुं[3]
गैरा दरपण री छांय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

कौठ चाल्याजी लोभी पनला
जीजी बाई रा वासा[4] पीव।
इण[*] मेहरले री महलायत रे
किसीयक दी छ नींव ॥ १
रसीसाराज कस्यां मे मनावो
रूटर्या मे रासो सींव[*]।

---

[1] लागा। [2] लीजो बचाय ख प। [3] सूं। [4] वास्ती रै ख प। रसिकराज प।
[*–*] इण– रासो सीव' तक ख प में नहीं।

घडीयक मुखडो दिखाय सुहेली[1]
छानो मार दे जीव[2] ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

चालो चालो सहियां म्हारी सांवरे री लैर।
प्यारी गयी कही विरह वेदरदी
खोजल्या नें उवा रा सूधा पैर ॥ १
वन वन कुज कु गिरवर सोधा
सोधा नद नदीया री नैर।
रसराज उण सावरै विन उठ रही
व्रिह* जोवनीया री लैर[3] ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

जोवनिया रो जोरी[4] छै जी म्हारा राज
नैण भळक्यो नेहरी तोरो।
थारे मिळण विन जी म्हारी दोरो
रसराज थे मत[5] म्हासु दिल मत चोरो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

झूठी ना करो मै[6] तो थारी
काई तकसीर करी छै सायबा गुमानीडा।
म्हासू झूठ साच औरा सु
देख्या में कही[7] दिस जाता ॥ १

---

[1] 'सुहेली' नही ख, अलवेलिया ग। [2] जी ख ग। * विरह ग। [3] लहर ख। [4] जोरो। [5] ख में नही। [6] म्हे ख। [7] कांई ख।

लोक लाज मम देखण लागा[1]
पेली दे दुपटा री झालो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

कामणगारा मणा मोही महाराज ।
दांवण गही छ कंठ लगाय लीनो
सुख दीनो जी सिरताज ॥ १
बहोत लजाळू मा घण तो नादान छ
रसे जुदाई दिखलावो मैं राज ।
रसराज वधाय[2] लीजो सेवटीया
जोबन करी मा जिहाज ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

किण सारयो हे भजन मारवी
भणियाळा थां नैणां मांय ।
सखी सुहागण पंगा में हाथ सु[3]
गैरा दरपण री छांय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

कौठे थाल्याजी लोभी पनसा
जीजी बाई रा वाला[4] पीव ।
इण[5] नेहरले री महलायत र
किसीयक दी छे नीव ॥ १
रसीलाराज रूस्या ने मनावो
सूटपा में राखो सीम[*] ।

लागा । लीजो वधाय क ख । [3]सू । [4]वाल्ही ? क ख । कामणराज ख ।
*-*पद – राखो सीम क ख ग में नहीं ।

साचौ कियौ थे पना बोल आगलो
हिय रौ भाव मुख माय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितलौ

पना देस्या देस्या झाला कमधजीया राज वाळा ।
रगमहल मे पधारौ* सावरा सनेही वाळा
मतवाळा दारूडी का
रग सुं पियास्या[1] प्याला ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

मन भावन विन सखि सावन मे
मेरे धीरज कैसे रहै मन मै ।
पवन लता झुक लावै विरछ विन
अैसै जोवना दुख दै तन मे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

मानौं जी थे मानौ सायबा म्हारी तौ अरज ।
अब• न मिल्यौ• क्यो[2] लगायौ नेहडौ
पैला थे आपरी गरज ॥ १
म्हारा सिर रा किया छै थानै सेहरा
सिरजणहारै तौ सरज ।
अनत ठौर रसराज न जावौ
कितायक राखा म्हे वरज ॥ २

---

*पधारे ग । [1]पियासा । •अबै ग । •मिलो ग । [2]क्यू ख ग ।

राग – सोरठ

ताल – धीमो तितालो

तीखा तीखा लोयण लागै
इणन यनीजी रा कानळिया ।
मोहि[1] लीया सुर जन सारा ही
कांई नें मानव जग का ज्यां भागै ॥ १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तितामो

थां कुण छौ जी थां कुंण छौ
थें भ्राया कौठें सूं कूरम जी ।
मड़ल्यो उठाथो म्हारो मीकों नीको
इतनी भरज म्हारी जावोला सुण ॥ १

राग – सोरठ

ताल – धीमी तितालो

थे गोरा मीरा बोलोजी छल वेदरदी सांवळड़ा ।
वेस र मंक मरो नादांणीया
कितीयक घण[2] छै घण कुसम करी मत ॥ १
भ्रम नायक रै तरफ री बोलौ
मारू भ्रप्यौं छ यौ महोलो ।
भंवर भार नहिं छूटै वेलड़ी
मन मानै ज्यूं बोलो[4] खेल ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तितालो

नादांणीया कांई बोल्या बोल
मधी सायबा दारूड़ी रा रंग में म्हांसूं ।

---

[1]मोह । [2]मीको ब प । [3]बलाब म । [4]बोलै म. ।

साचौ कियौ थे पना बोल आगलो
हिय रौ भाव मुख माय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितलौ

पना देस्या देस्या झाला कमधजीया राज वाळा ।
रगमहल मे पधारौ* सावरा सनेही वाळा
मतवाळा दारूडी का
रग सुं पियास्या[१] प्याला ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

मन भावन विन सखि सावन मे
मेरे धीरज कैसे रहै मन मे ।
पवन लता झुक लावै विरछ विन
अैसे जोबना दुख दै तन मे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

मानौ जी थे मानौ सायबा म्हारी तौ अरज ।
अब[•] न मिल्यौ[•] क्यो[२] लगायौ नेहड़ौ
पैलां थे आपरी गरज ॥ १
म्हारा सिर रा किया छै थानै सेहरा
सिरजणहारै तौ सरज ।
अनत ठौर रसराज न जावौ
कितायक राखा म्हे वरज ॥ २

---

*पधारे ग । [१]पियासा । [•]अवै ग । [•]मिलो ग । [२]क्यू ख ग ।

राग – सोरठ

ताल – तीमो तिताली

मारू मत चालो[1] हेली धण कामणगारो।
सेज सुरगी सुघर सहेली
सरद चांदणो चंद्र ग्रटारी ॥ १
दारूडा री मनभार ग्रापस री
घण रही थारी बारी।
उसी तयारी प्यारीजी री ग्रमवेलो
रसीलाराज ग्रालीजा री छिब न्यारी ॥ २

राग – सोरठ

ताल – तीमो तिताली

मिळ कर ग्राज ही बालम जी
थे तो फिर चाल्या परदेस।
म्हांनें कांई कहि[2] जावो केसरिया
सायधण ग्राळी वेस[3] ॥ १

राग – सोरठ

ताल – तीमो तिताली

मैमें चालो नें म्हांरा मारूडाजी[4]
ग्रगामैणी जी जोवै बाट।
सेज सवारी छै तन री तयारी छै
ग्रौर उवां री थारी छै ग्राज ॥ १
पडती सांभ्र बिजळी संजोयौ
सह कर राख्या छै साज।
रसीलाराज गोरी ग्रुगलकिसोर की
लिखी छै विधाता लिलाट ॥ २

वाली म। कह ब। [3]वेस म। महैला ब मैला म। [4]मारूडा ब म
[5]पूरा पद नहीं ब ब।

राग – सोरठ

ताल – धीमौ तितालौ

लैरा लैरा चालौ जी थे
इण धण रै मुख चद्र चादणै[1] ।
सावणिया[2] री रैण अधेरी
चद गयौ मुरझाय गगन छिप ।। १

नायक तरफ र अब सखी बोलै
सूरज ऊगण दै री ।
रसराज आवण दै मनमोहन
सौ चदा रौ छुप जाय उजाळौ ।। २

राग – सोरठ

ताल – धीमौ तितालौ

हे मारवण थारा तौ नैणां रौ पांणी लागणौं ।
तू सरसीली वेल मालती री
उण नायक रौ भवर पणौ ।। १

सज सिणगार सेजा[3] नै चालौ
अपछर रभा रूप वणौ ।
रसराज या सूरत देखण रौ
आलीजा नै लग रयौ चाव घणौ ।। २

राग – सोरठ

ताल – धीमौ तितालौ

हेरी हेरी मा मन ले गयौ
सावरौ सनेही अलवेलौ मा ।
नैन लगाय मन ले गयौ वेदरदी
दिल विच छाय रयौ ।। १

[1] चांनणौ ख । [2] सावणीया ख. । [3] सेझा ख ।

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

मारू मत चालौ[1] हेली घण कामणगारो।
सेज सुरंगी सुघर सहेली
सरद चांदणी चंद्र मटारी ॥ १
दारूड़ा री मनवार आपस री
घण रही वारी वारी।
उसी तयारी प्यारोजी री अलवेली
रसीकाराज भालीजा री सिव प्यारी ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

मिळ कर माज ही वालम जी
ये तो फिर चाल्या परदेस।
म्हांनें कांई कहि[2] आवो केसरिया
सायघण वाळी वेस[3] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो

मैसे[4] थामो मैं म्हारा मारूड़ाजी[5]
अगामेंगी की जोर्व वाट।
सेज सवारी छ सन री तयारी छै
मीर उवा री वारी छै माज ॥ १
पड़ती सांझ दिवळौ सजोमौ
सह कर राख्या छै साज।
रसीकाराज जोरी जुगलकिसोर की
लिखी छै विधाता लिलाट ॥ २

---

[1] चालो न। [2] कह न। [3] वेस न। [4] मरैसा न मैसां न। [5] मारूड़ा न न[illegible]
[6] पूरा पद नहीं न न।

निपट नसौ छै दोय वारै री निसरयौ
सुदर वण्यौ छै जंवार री ।
रसराज आनंद अपार री सायवा
नेह वदो रा छै हाथ री ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हो म्हारा बाळसनेही पना
थारी सीख मानु ली[1] ।
थांरौ ध्यान रहै[2] निसदिन
थां विन और न जाणुलो[3] ।। १
लोक लाज कीनै काण करूली
नहि परवार पिछाणूली[4] ।
थारी थै जाणौ सावलडा
एतो ताण मै ताणूली[5] ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हे अगानैणी थारी मारूडौ मानै[1] नहि जाणै ।
झूठा ताना तू दै छै म्हानै
खबर पडैली विहाणै ।। १
पारौसण री वालक घर आवै
नितरी अगीया तांणै ।
यौ ही चैन देख दुख दै छै
थारी सी रीत पहचाणै ।। २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

वरसत आयौ मा घन चढ कै सिर ।

---

[1],[3],[4],[5] लि । [2] रहै छै ख ग । [1] म्हांनै ।

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हेरी हेरी मा सांवरी सनेही मन ले गयौ।
पहली रूप बिसराय गयौ री
दे गयौ रूप नयौ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो मलवेलीयो महलां आवै
लाडलो वहाय बुलावै।
यो सुख बरणुं कितोयक सजनी
अपछर देख सुभाय ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो छदागारो गुमांनीड़ा लागी प्रीत दुहेलड़ी।
जिण सिर बीती हुव* सोई जांणै
पायल जिण तन सेलड़ी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो नणदी रा वीरा सासरियै से चालो।
थोह परवारां पीहरीयौ व्हालौ
सासरियौ थांसु व्हालौ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – धीमी तिताली

हो पनां मीजो की मीजो जी प्यालौ मनवार रौ।
एक तौ प्यालौ पना दारूड़ा री तार रौ
दूसरौ सनेह री तार री ॥ १

ध। हुँ। तन जिर। वाल्ही न। वहाली न।

निपट नसौ छै दोय वारै री निसरयौ
सुदर वण्यौ छै जंवार री ।
रसराज ग्रानंद ग्रपार री सायवा
नेह वदी रा छै हाथ री ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हो म्हारा बाळसनेही पना
थारी सीख मानु ली[1] ।
थांरौ ध्यान रहै[2] निसदिन
था विन ग्रौर न जाणुलो[3] ॥ १
लोक लाज कीनै काण करूली
नहि परवार पिछाणूलो[4] ।
थारी थैं जाणौ सावलडा
एती ताण मैं ताणूली[5] ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

हे ग्रगानैणी थारी मारूडी मानै[6] नहि जाणै ।
भूठा ताना तू दे छै म्हानै
खबर पडैली विहाणै ॥ १
पारौसण रौ वालक घर ग्रावै
नितरी ग्रगीया ताणै ।
यौ ही चैन देख दुख दे छै
थारी सी रीत पहचाणै ॥ २

राग – सोरठ
ताल – धीमौ तितालौ

वरसत ग्रायौ मा घन चढ कै सिर ।

---

[1],[3],[4],[5] लि । [2] रहै छै ख ग । [6] म्हानै ।

मुज विरहन पर करक समारी
खड्ग धार विछळी कटके सिर[1] ॥ १
जमुना तीर सखी मे अकेली
सखियन के आगे बढ़ के।
सांम[2] आयो रसराज पिया हर
जा रही अक सरन गढ़ के सिर[3] ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमो तितालो

विसवा परी का अर्मा
समजे चिमन में डेरा।
चंदन चंबेली चंपा
कचनारे और केलें।
हरसत[4] हजारों फूल
सिम पर लपटती वेल ॥ १
रंगीन तरो तरो के
डेरे जरी देखे[5] थे[6]।
खोसम सुरंग सबजा
मांमूं खिले बगीचे ॥ २
उसमें तखत पें बैठी
महबूब खूब सोहैं।
चलती खड़ी अदा सें
मन आसकां का मोहैं ॥ ३
विंवसी झुलाक बूंदा
झुगमु[7] चमकता आला।

---

[1]सिर' नहीं च। [2-3]इसके अंतर्गत के दोनों चरण च में नहीं। [4]हरसत प... है थीचे ग। [5]पूरा चरण नहीं। [6]झिगमु च।

क्या खूब लचकती[1] दावन
उड़ता दुपटा काला ॥ ४

सावन घटा सी उमडी
छुटती खुसी की धारें ।
बूंदैं वरसती रस की
लगती वदन हमारें ॥ ५

बौह* दूर है उवो देख्या
नहि ज्यादा मा किसी सैं ।
दिल आंख सैं जो देखै
नजदीक है उसी सैं ॥ ६

नजदीक है पै देख्या
किस हुआ[2] आदम कबीना ।
दुरवीण इसक की मा
जिस आख कै लगी ना ॥ ७

रसराज आसिका[3] दा दिल
सांझ औ सवेरा ।
साहिब करै तौ होवै
उस डेरै मैं वसेरा ॥ ८

राग – हिंडोल

ताल – जलद तितालौ

कुसमाकर आय्यौ रो सजनी
रहे फूल पलासन के बन घन
सब वन केसरिय्या भये[4] तिनकौ
देख केसरिय्या भये है नयन ॥ १

---

[1]लचकता ख । *वोहो ग । [2]हूआ ख, हु ग । [3]आसका ख ग । [4]भये देख ।

मुच विरहन पर करक सवारी
खडग धार विजळी कटकै सिर' ॥ १

जमुना तीर खड़ी में अकेली
सखियन के आग मठ के।
सांम* आयो रसराज पिया हर
ना रही अक सरन गढ के सिर* ॥ २

राग – सोरठ

ताल – धीमी तितालो

दिसदा परी का अर्मा
सवजे चिमन में डेरा।
चंदन चंबेली चंपा
कचनारे और केलें।
हरखत* हजारां फूल
तिन पर लपटती बेल ॥ १
रगीन हरां हरां के
डेरे जरी देखें* चे*।
सोसन सुरंग समजा
मांनू खिले बगीचे ॥ २
उसमें तखत पें बैठी
महबूब खूब सोहै।
चलती खड़ो अदा से
मन आसकां दा मोहैं ॥ ३
चिदसो जुलाफ बूंदा
जुगनु* चमकता धासा।

---

*सिर नहीं ग। *-*इसके अंतर्गत के दोनों चरण ग. में नहीं। *हरखत ग
*दे बीचे ग। *पूरा चरण नहीं। *जिगनू ग।

राग – सोरठ

ताल – सवारी

सांवन आवन कहै[1] गयौ हे सहेली म्हानै ।
अबलु[2] नै आय मिल्यौ रसराज सावळ
अलवेलौ[3] मिळ रही विरछन मे[4] नवेली बेली ।। १

राग – सोरठ

ताल – होरी रौ

अलवेलड़ी लाडली बुलावै छै
रसिया चाल रग री रात छै ।
केसरिया कर साज साहबा[5]
फूला सेज कसी छै चानणी चौक मे ।। १

रग रमौं घणी समज सुख सु
झुक्या झरोखा री छांह मे ।
गूघटडो इक हाथ मे और
चपकवरणौ गात दूजौ गळबांह मे ।। २

मदन[6] - रस लूटौ नै मारूडा
ऊग्या नसा अमलान में ।
सुणौ सहेल्या रा मुख सू सरसो
सोरठडो री तान में[7] गळती रात मे ।। ३

राग – सोरठ

ताल – होरी रौ

अलवेलियौ मा आयौ आयौ
मारवणी मिळण मारूड़ो आयो* छै मा वालौ राज ।

---

[1]कहृ । [2]लू ख ग. । [3]मनमोहन । [4]'मे' नहीं ख 'पै' ग. । [5]साहिवा ख ग. । [6]वदन ।
[7]'में' नहीं ग. । *घर ग्रायो ग ।

रसीलाराज उन वन छबि छाके
सहित सहेलिन के[1] जुवति जन।
नैन हमारे देख केसरिय्या
भय्यो है केसरिय्या सांवरिय्या को मन ॥ २

राग – हिंडोल
ताल – दीपचंदी

भवरईय्या मोरी लो सजनी विप बोलैं
कोयलिय्या कहुक कहुक।
चलत कूप खटकट है पनरिय्या
हरे हरे खेतवा भरे भरे तुक ॥ १
मलिय्या बुलावै गोपाल भाईयें
फूली फुलवारिन में क्यों रहे रुक।
रसालो[2] राज पिय भावत तुम कों
बसत बधावन[3] देखन झुक ॥ २

राग – सोरठ
ताल – सवारी

मुजर यार भावां छां व्रजराज कोवर म्हे।
रसराज मोहत विना सूं मन मांही छै
दरसण की तरसावां छां म्हे ॥ १

राग – सोरठ
ताल – सवारी

सायबा थांरी सेजां में रंग लाग रह्यो छै।
रसराज आनंद मंगळ घर घर में
मद राधा व्रजराज भयो छ ॥ १

---

[1] में नहीं। [2] रसीला रा प। [3] बधावन बलव रा म। [4] म्हे नहीं ग।

राग — सोरठ

ताल — सवारी

सावन आवन कहै[1] गयौ हे सहेली म्हानै ।
अबलु[2] नै आय मिल्यौ रसराज सावळ
अलवेलौ[3] मिळ रही विरछन मे[4] नवेली बेली ।। १

राग — सोरठ

ताल — होरी रौ

अलवेलडी लाडली बुलावै छै
रसिया चाल रग री रात छै ।
केसरिया कर साज साहबा[5]
फूला सेज कसी छै चानणी चौक मे ।। १

रग रमौं घणी समज सुख सु
झुक्या झरोखा री छाह मे ।
गूघटडौ इक हाथ मे और
चपकवरणौ गात दूजौ गळबाह मे ।। २

मदन[6] - रस लूटौ नै मारूडा
ऊग्या नसा अमलान मे ।
सुणौ सहेल्या रा मुख सू सरसो
सोरठडो री तान में[7] गळती रात मे ।। ३

राग — सोरठ

ताल — होरी रौ

अलवेलियौ मा आयौ आयौ
मारवणी मिळण मारूड़ौ आयौ* छै मा वालौ राज ।

---

[1]कह । [2]लू ख ग । [3]मनमोहन । [4]'मे' नहीं ख 'पै' ग. । [5]साहिवा ख. ग. । [6]वदन ।
[7]'मे' नहीं ग. । *घर आयो ग ।

सुभ दिन सुभ घरीह् पल में महूरत भम
मारी[1] मन छ जनम मांरी[2] भाज ॥ १
मारूड़ो वण रयो[3] छ दुलहो उत्सा न[4] साथीडा
सग सोहणा छै चंगे साज ।
पल पल उवारा प्राण उवारण करेसा
सामघण जोबन लाज रसराज ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी री

चंपावरणी हे मारवण मारूड़ो बुलावै
थाल सुरंगी सेजां मे ।
चदावदनी संजन ननो
मारू मन वस करणी ।
वाट जोय छ रसराज सांवळड़ा
विरह वेदन हरणी ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

म्हल प्यारी लागे हु भलवेली मारू
कांमणगारी हा सेजड़ल्यां में ।
रेण प्रभारा री भजी सोहणी में[5]
सांम झूम जेवर मे ।
रसराज बूंद सुरां सूं मिळतां
इण सोरठी[6] रा घर में ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

पना मारू सोभो फी

---

[1]म्हारी । [2]म्हारी । [3]रह्यो प न । उत्सा नै ब प । [5]'में' नहीं प । [6]सोरठी न

लीजोजी आज री रात महोलो
सावणीया री तीज रो म्हांरा राज ।
पना मारू कुण छो कठैरा थे सिरदार
किण दिस थारी छै देसड़ोजी[1] म्हारा राज ।। १

पना मारू उतरया सरग सु आय
कै कोई राजकवार छो जी म्हारा राज ।। २

गोरी म्हारी सरग न[2] जाणा छा सुमेर
कहो जा मारूसा रा देस मे जी म्हारा राज ।। ३

पना मारू किण सुख ताक्यो छै विदेस
किण दुख छोडी छै गोरडीजी म्हारा राज ।। ४

गोरी म्हारी घर का आवा छै आक
पराई मीठी कैरली जी म्हारा राज ।। ५

पना मारू वहचो वहचो जावै म्हारो जीव
नैणा सु आप ही देख्यो जावै जी म्हारा राज ।। ६

गोरी म्हारी नैणा रा[3] लागा छै बाण
मन म्हारो थे भरमाय लियो जी म्हारा राज ।। ७

गोरी म्हारी मोहचा मोहचा पथीया जमी का
वहैता[4] पछी अकास जी म्हारा राज ।। ८

पना मारू याही रहो कै ल्यो सग
म्हे रहा छा चाकर रावळा जी म्हारा राज ।। ९

राग – सोरठ

ताल – जलद तितालो

मदवा मारू छो जी म्हारा राज
इतनी अरज सायबा म्हारी मानो ।

---

[1]देसडलो जी । [2]सरगढा । [3]नैंण । [4]वहता ख ग ।

तुरोमां जोण उतारो ने सायबा
या रंगभीनी छै रात ।
रसराज बांवरा सूंव रही छां
क घालो ल म्हांनै साथ ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

मारूडो मोहणी है मारवण
मोहणीया मुखड़ा री मलवेसीया[1] चस्मां सूं[2] ।
गूंघटड़ो मणा हठ सूं राखता
केसर भीनों साळूड़ो ।
रसराज हित चित सूं सग रमता
हस हस देता वारूड़ो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

याद करौ लाला सांवन भावन प्यारा कह[3] गयौ
पंथीया लेजा रे संदेसो म्हारा पिय पै कोस हूं ।
असन बसन प्यारे मोहीं लाग
नैंना नींदरी न आवै ।
रसराज जोबना निस दिन
मोहि कूं संतावै मेरो वैरो ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी री

सहेली सुघर पिया की सैज
मेहरसौ बरस रयौ सारी रात ।
घन गरजे बिजळी चमकै छै
पवन चलै परवाई ॥ १

---

[1]मलवेलिया । [2]चलमां सू । [3]कै कहू म ।

चुनरी भीजै चोक मे अ्रेरो
चौडै ऊभा गात ।
सीत न व्यापै डर नही लागै
रसोलाराज नई वात ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी रो

हो मारूड़ा मारूड़ा हो* म्हांरा राज
इचरज आवै सावळड़ा ।
जाणा तौ जाणा[1] विरछ कदम रा
विण पाणी सू खड़ा ।
रसराज जोरा जोरी निभावौ
ज्यू हीनै छुवाया सालुडा[2] ॥ १

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

पिया पिय झूलै सरस हिंडोळै गळवहिया ।
व्रन्दावन[3] सघन - वनी विच
कुहकै कोयलिया अवरइया मे
चढत हिंडोरा ऊचौ गगन कू
डरत नवेली लागै पिय छतियां सैं ॥ १
हरख रही सखि[4] हसत सहेली
रसीलाराज तू बलइय्या लै ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी रौ

उमड घन आयौ, झुक[5] वरसन लाग्यौ
वडी तौ धारन झर ल्यायौ ।

---

*'हो' नही ग । [1]जाणौं तौ जाणौं ख ग । [2]साळूडा । [3]व्रिदावन की । [4]सखी ।
[5]आदर्श प्रति क ग मे नही ।

चढ़ आयौ लसकर सांवन कौ
भगवा मनोज[1] सचायौ ॥ १
मांन कहांलुं रखिये सजनी
इस विरहै तन छायौ।
रसराज सांवरे सनेही कू या समें
चहिये[2] मदत कू बुलायौ ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी री

एरी ए प्रीतम घर आयौ
मैं तो[3] करूंगी[4] वधावना
तन मन आनंद छायौ।
अक मिळाय मिळूंगी सजनी
विरह दरद विसरायौ ॥ १
घन वरसत दामन[5] चमकत है
मोर सोर मन भायौ।
रसराज ज्होस[6] दिनन सों सखी
विछरयौ प्रांन सो पायौ ॥ २

राग – सोरठ
ताल – होरी री

खेलण चालो चंपा बाग
हो रंगभीना मारूजी।
इण नैं तीज ऊपर लसकरिया
आया आया लाडलड़ो रै चाव।
पिछम देस रा राजवी थे
कमधजीया उमराव ॥ १

---

[1]मनोज। [2]चहिये म.। [3]यह तो व म में नहीं। [4]गरू। [5]दामिनि। [6]अहोल व म। [illegible] गाँई।

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

बाभीजी[1] कमधजीयौ रमै छै सिकार।
हरया पहारा वन हरया जी
सुरख वेस सजदार ।। १
कस्या कमर वाकडली सोहै
सरस वीर सिणगार।
साझ पडया घर आसी सायबौ[2]
मो सुगणो रौ सिरदार ।। २

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

भवर[3] म्हाने चगा लागो हो[4] राज
कुण छौ कठैरा हो[5] छैला सिरदार।
सूरत रा अलवेला दीसौ
और अलवेलौ साज।
रसराज इण रित वारै नीसरया
तीज रौ महोलौ छै आज ।। १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

मनमोहना छिनक मैं
मुरली अधर लगाय कै मन ले गयौ।
जमुनातट वसी वट निकट
नटवर कौ भेष वनाय कै दुख दे गयौ ।। १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी रौ

वजाई वन[6] वसी नदकवार।

---

[1]सहेली। [2]साहिबौं। [3]हो भवर। [4]जी। [5]'हो' नही। [6]वैन।

सुण वसी की तान अचानक
चाली सकळ व्रज[1] नार।
प्रम विवस वकळ हुवे[2] चली
ज्यूं गुडीय पवन की लार॥ १
फूंकूं री[3] रेख नैंणां नथ कांन में
पायल री गळ हार।
प्रेम री ह्वै रसराज पथ यूं ही
जांणे जो ह्व छ[4] रिझवार॥ २

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी री

वरसाने गोकुल बीच में
रंग लाग्यो सुघर सहेलड़ी।
बीच बदरिया की रंग लाग्यो
तसैं बिरह बेलड़ी। १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी री

हो भवर म्हांसुं वांका बोलो मैं राज।
कांई म्हेर म्हरी छ थांरी तकसीर
हार[5] जितो हीम्ररो नहिं सकसो सरोर।
कोई दिन होय रह्या छ मिळ्यां नैं
रसराज दीसो बेपीर॥ १

राग – सोरठ मल्हार
ताल – होरी री

हो लाग्यो छे म्हांरो थासीजा भंवरजी सुं नेह
ज्यों घिम रह्यो नहीं थाम।

---

[1] व्रिज। [2] वे भ। [3] गुडीजे ब., गुडिए भ। [4] जो भ। [5] यो आदर्श प्रति में नहीं।
[6] यह पद्य आदर्श प्रति एवं 'भ' प्रति में नहीं है।

ग्राज सहैर[1] मे उछव तीजरी
यो झुक ग्रायो छै मेह ।
ज्यू त्यू चल रसराज मिळण नै
जीव उतै इत देह ।। १

राग – सोहनी
ताल – जलद तितालो

साजनीया उवा रित ग्राई रे ।
सरता री तीर चपला री छाई
जिण निस लगन लगाई रे[2] ।। १
चहु दिस सोरंभ पवन चलै छै
कोयल धुन मन भाई ।
रसराज इक दिन कठ लगाई
इक दिन सौ[3] विसराई ।। २

राग – सोहनी
ताल – जलद तितालो

साजनीया उवै दिन सालै छै ।
वदन मिळाय मिळावै छा विंदली
उवौ बिरहा जी जाळै छै ।। १
सखी साईन्या ताना दे छै
हस हस ज्यान निकाळै छै ।
रसराज प्रीत लगाय गरीबा नै
यू कोई छाड र चालै छै ।। २

राग – सोहनी
ताल – जलद तितालो

गुल सुरख नैन महैबूबा दे ।

---

[1] सहर । [2] 'रे' नहीं । [3] सो ।

रसरास[1] खसबो भतर की सी फलाते
निषा सें येखदे ॥ १

राग – सोहनी
ताल – बसव तितासी

मुल सुरस नैन आज बुरसे क्यूं ।
रसराज सांवळ बुझदा उसदो
मांखदी मासूम मस सांवरा जुदा होयूं ॥ १

राग – सोहनी
ताल – बसव तितासी

कोयलडी कौठै बोली मा
इण सघन हरी अम्बराई में ।
आपन आयौ नहीं इण रित में
अर नहिं मोहि बुलाई उव ॥ १
सारा गांव का छल सुण छ
कोई मिलावै रग राई में
एक रात रो उण रसिया में
जोबन दपूंलो[2] बधाई में ॥ २

राग – सोहनी
ताल – बसव तितासी

मैसां[3] आज्योजी म्हारै आज पनां ।
सुम रही छै चामणो चंद्र अटारी ।
चहुं दिस लपट रही छ अंबराई
एक ओर तो यहार बणी छै
एक ओर थारी राधा पियारी ।

---

[1]रसराज म । [2]दप का । [3]म्हैलां ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट - (१)

स्फुट राग संग्रह

राग – अडाणो
ताल – चौतालो
क्युं करो छो अतो मान
उवं तो बोझा नै मरै छै उवारा ही मिजाज सु ।

ताल – रूपक
तरसावो ना म्हारो जी वनरा
म्हे तो थारा छा थारा प्यारा पनु ।।

ताल – रूपक
सखिया गावत गार वधारे
दुलहै दुलही कै मिलाप मे ।

राग – आसावरी
ताल – आडो तितालो
तक तुसी नु आई झग सयालै दी हीर
तु राझा स्यहर हजारै दा साई ।।

ताल – चौतालो
जळदळ लैन की वार भई
कहत गवाळ चलो मधुवन मे ।

राग – जोगिया आसा
ताल – जलद तितालो
बोहत विदेसा मे वाद विखेरो
रग वरसै छै थारै देस ।।

राग – सोरठ
ताल – धीमो तितालो
आए नवलकिसोर
सेजरिया करो कल्यान ।

राग – हमीर कल्याण

ताल – इकौ

जगमग दीपक बाती
इत उत नवलकुंवर की जोत ।

ताल – इकौ

सुवस बसौ थांरौ देस
सुहैलो लागी नैणां सूं
रसीलाराज राख थांरौ माथ ।

राग – कामोद

ताल – इकौ

बाग बगीचे की बनी है बहार तामैं
मूलत हिंडौरे प्यारी पीउ ।।

राग – कामोद कल्याण

ताल – इकौ

करत सिंगार नाना भरण
मेरी राज दुलहरिया ।

राग – मगन कल्याण

ताल – चौताली

सच्या रचत कळी कुसुमन की
पौढ़ें राजकवार ।

राग – कानरौ

ताल – धीमी तिताली

बीहुत दिनां सु भामा छै सेजां
कांइ करां मनवार रसन मन जोबन मेट ।

राग – दरबारी कानरौ

ताल – जलद तिताली

परी जवाहर दीपावळी की झमझम जोत ।

राग – कानरो वाघेसरी
ताल – धीमो तितालो
आनन्द वढत विनोद
रति मनमथ के रूप
राधा माधव रंग रमें ।

राग – काफी
ताल – धीमो तितालो
भिछानी मगदा आयाणी राझा वेखो
उसदो कुदरत वादस्याह सहर हजारंदा ।।

ताल – धीमो तितालो
रावीदे वैलैनु असी आई वे
राझा तेरे दो नैनादे वेखणैनु ।।

ताल – धीमो तितालो
लेकु करहु तीन धीरी मध औ जलद
तीन के वहुत भेद जाने गुन में जे गरद ।

ताल – सवारी
टपैदो अनोखी वे लाला लड के
जलद घोडे की क्या खूब सवारी ।

राग – कालिंगडो
ताल – आडो तितालो
अब तो पौढणदो रंगरसिया
थोडी सी रही छै रैण म्हारा नै गळारी थानै आण ।

ताल – आडो तितालो
सिरै सोवै छै लाडोजी रै सुरग चुंनडी
पनैजी रै रंगीली पचरंग पाग ।

ताल – आडो तितालो
नैनु नीद खुमारी
नहि चाहत विरह घरी को ।

राग – केदारो
ताल – अमद तितालो

कर गहि लीनी म्रक
काम किलोळ की रचना मवेस री ।

राग – खमायची
ताल – घाडो तितालो

चतरग गावै जी गायक म्राय बधावो
म्हांरी लाडली जी रा ब्याह रो सुमै जी दुलहा राजकमार ।

ताल – घाडो तितालो

ता र दा नी धि म त न दि र मा त द र दा नी
मो दानी द न म धीम् ॥ १
सात सुरां री सप्तक बोलै अेक साथ मौर धीरे धीरे
सारी गम पध नीसा सानी धप मग रे सा
सरज म्रखम गधार मध्यम पचम धैवत निपाद ॥ २
मदली बाजै छै बौहत मुलामत
किटट किट तारो किट ध्रुम कट तक धिधीकट धिनकट धा ॥ ३

ताल – अमद तितालो

मखी माई वे रांभ्र तक तुमी मु
तु मैडा सिरदा सांई ।

ताल – स्पौरी

झुणि झुणि मनाहत झन झन सुनियत
रचना बासन को मैसी मटा प्यारे ।

ताल – दीपचदी

मान सरोबर माहि पिछुरता
धाखी नैं दिराता हुंसां री सेन ।

ताल – चौमो तितालो

सखियां सराहै
जोरी जुगलकिसोर की ।

राग – गौडी

ताल – चौतालौ

नवल छवीली साझ एक छिब भए चद्रभान
मीळन कवळ कुमद फूलन कौ आगम

राग – छायानट

ताल – जलद तितालौ

देवद्वार झनकत घटा
झालर गावत राग सुहेले ।

राग – जुजोटी

ताल – इकौ

जोगीनी हौदा राझा वायस तेरे
तु बैठी है हीर खुसीदे नाल ।

ताल – धीमौ तितालौ

ससी आई तक तुसी नु
पनु रख नैनादी पनाह मे ।

ताल – ठुमरी रौ

फूली फुलवारी मे
कलइयासी चुनरिया लेजा री ।

राग – जैजैवती

ताल – जलद तितालौ

नवल चद्रिका की वनी है वहार
एक - टक चद चकोर
ज्यु देखत पिया कौ मुख ।

ताल – फरोदस्त

तेरै नवल विखेरै की विखरी सुवास लुम्यौ है
मधुप मन चढी जा कपाल ।

राग – बंगली
ताल – बसद तितालो

रांझा रांझा करदी भर विच बैठी झुरदी
हीर निमांणी कोई मिळावै बान जानी।

ताल – ठुमरी री

नीकी वे ठुमरिया गावै
तुरकी पै चढ़ सलोने।

राग – तोडी
ताल – बसद तितालो

सम्मुख गुण गाय रहे गण गंधव
निरत करै देवकन्या अपछरा नवेली।

ताल – त्योरी

नवल बिसेरै को कर उळमेड़ा
गुनिमन कै मारै क्यु हूँ सुलझेवा।

राग – धनाश्री
ताल – इकी

हैर की नर्मा किस बजे सोहानी
इस कमाल नैं धरयगाना।

ताल – चम्पक

होय को बहार मियां मजनु
सैंमियां नु दिखसा मेरा सांवरा।

ताल – आडा

उठरन लग्यौ माम
घिरी छांह परछांह
विहुरत है चंपत गळबांही।

ताल – सुर फाकता

ताल कौं परत गुनी येक और
आरोही दूसरी बरत वेसक अवरोही मैं।

राग – नट
ताल – ड़ो तितालो

करलै रमण मेरे कुवर कन्हईया
सघन कुजन मे नियरी आई साझ सुरगी।

राग – नट नारायण
ताल – रूपक

लाज उमग भरी चली हे गजगत
नवल पियारे कै सन्मुख।

राग – परज
ताल – आडो तितालो

जामनी घटन लागी
वढन लाग्यौ सनेह
सुख की लहर उवै सै चढन लागी।

ताल – दीपचदी

मजलस माणो म्हारी बाईजी रा वीरा
चोखी नै चगी छै थारो देस री सिरकार।

ताल – आडो तितालो

मैळा रा बागा मे म्हारा मारूजी
आज्यो जी उनाळै री रैण।

राग – पूरबी
ताल – चौतालो

गु थत चौसर नौसर हार राधा
चुन चुन कळिया लावै सावरो।

ताल – जात्रा

दिन की रयन कीजे रयन को दिन कीजे
मेरे नवल पियारे छैल रगीले रे।

ताल – धीमो तितालो

सरिता ब्रिहार मोहि बहुत ही नीको लगत
चल वनरे मेरे होय खेवटिया।

राग – पूरिया
ताल – इकी

उरस पराग मधु झरत फूलन तें
पवन झकोरें गिरे कळी कुसम ।

राग – बराडी
ताल – झापा

लपटी लतान सोहै बिरछ समूह
चपक चंबेली मधु माधवी चहु दिस झुम आई ।

राग – धनाश्री
ताल – चौतालो

मुक्ताफळ हीरन के पना औ
पीरोजन के नाना भूपन सोहत सुहेले ।

राग – भैरवी
ताल – इकी

असवेसी आई सै बहार पना
घर चालो साजनी जोवै छे वाट ।

ताल – कवाली

माळी फूलों के रांझा
हीरची सु मवक हो मुष्ठबोहमु स ।

राग – भैरू
ताल – चौतालो

रसीकेराज जोगिया की मिहरसों
सुख की महर स
जोग की कळा में भाए राधा नदकु बार ।

ताल – चौतालो

राग सागर जहां ताल तरंगे चोज नामरिया
रसीकेराज तामें बैठ सेयक
जोगिया रामट तरो है सुजान ।

ताल – चौतालो

पट राग पट ताल पट हू लै मेला
अ्रे जोगिया को मिहर राज रसीले ।

राग – मल्हार

ताल – जात्रा

बोल घटा प्यारे तककु झककु झँग झँग
धिरान् धिरान् ध्रिध्रितनम् ध्रिध्रितनम् ।

राग – गौड मल्हार

ताल – जलद तितालो

झाखै छै जी ऊचा नै झराखा ऊभा
रग-महल मे सावणीया री वणी छै वहार ।

मिटवा दो पावस री खेद पीछा नै पधारो
पना चाकरी लैरा ले दासी रावळी ।

राग – जैजैवती मल्हार

देख्या छै मुकता देस थारी नै सगत मारू
देस विदेस मे नही नै देखी छै
इसी जोड मारू नै मारवी उणिहार की ।

राग – नट मल्हार

मेहडलो वरसै छै बडो बुद
उमड आई छै घटा सावळी ।

राग – मीया री मल्हार

ताल – चौतालो

सरस नवेली नार
नवल पियारै की
उवै सी नायकी ।

राग – मेघ मल्हार

रसोभाराज र संग रहेस्यां
म्हें भरणां रावळै
सुघर वसो थांरो देस माघ करी छै
चोखी नें बोली मारू वेस री।

राग – बाजा

सघन घटा चढ़ श्राई
घररत घन घोर
झररर परत जळधार
गगन झगामग दामनो
ऊंचो घटारिन पर
बरसत प्यारी पीउ वहार।

राग – रूपक

उमड़ श्राई सास घटा
झीमी बूंदन बरसत चलो नवेसे कण भवन।

राग – रामदास री मल्हार

मायवा जी थांरे कर सास कबांण
तीरा नें भल्का सार रा
साहीजी री बांकी मुड़ मूंछी म'
चितवन बांकी मार रो।

राग – सावंर मल्हार री
राग – मीयां री मल्हार
राग – चौतासी
सोब पना मरम कसुंबी लहरघो थांरै सीस
साहीजा रै सोरे छै सावळी पुनड़ी।

राग – सूर मल्हार
मूरा न राग्या छै मझल मे ठौर
पायस निया छे पांने म्हांरी सासमी।

राग – सोरठ मल्हार

सूधा नैं लागो छो पना सैण साजना
वाका नैं लागो छो दोखी दुसमणा ।

राग – मारू
ताल – जलद तितालो

सीतळ मुकताहार हौन लगे
हौन लगी मद चद्र जोत ।

राग – मालकोश
ताल – चौतालो

वारुणी पियत छके अगी पानन तैं ।
खेलत करत विहार ।

ताल – सूरफागता

कर दरियाव की सहल सुहेले
अछी नीकी नई या पैं वैठ नवेले।

ताल – सूरफागता

पौढण दो मेरै छैल छबीलै
आरहो पिछली रैण सुहेली ।

राग – ललित
ताल – आडो तितालो

सीतळ करत नैन सरिता लहर
फूले फूले कँवळ वरन वरन के ।

ताल – आडो वितालो

तारे दानी धीम तना दिर ना तनन धीम तनन
धीमन तरत दरदानी पहार बरफानी ।

राग – विभास
ताल – रूपक

चहु दिस फूलै कुज कुज
गु जन लागे मधुप श्रवन सुहाग्रे ।

ताल – रूपक

सरगम गाय सुनाओ गुटिका गटि प्यारे
बिचरो गगन में
सरि मम पध नीसा सानी धप मग रेसा
सप्त भेद सप्त सुर त्याओ ।

राग – बिलावल
ताल – धमार

मना मन-की मान्ने नम्रे रूप गुन के
ललित नम्रे बन विहरते मदन मानूं ।

ताल – झू मरो

रखीसेराज मैसे मन के महल माफ राग को बिलावल पै
नाम के बिराजिये कुं बांध्यो गुन को बिलाम ।

राग – अलईया बिलावल
ताल – जलद तिताली

कासीनी मुलफा जरी दी टोपी
थासानी मुलका धलेस बगासा ।

राग – तैलंग बिलावल
ताल – चपक

टपा बरसदा टप टप इस्क दी बूँदें
जो कोई हो सिर झेलणे बाला ।

राग – बिहाग
ताल – झूमरो

मठर फुमेम सींचे
कुमकुमी की जमकी सुवास ।

ताल – झूमरो

फूलां मैं बिछाबां थारी सेज
थांपां मैं चरण थारा धोम दासी चरणां री ।

ताल – दादरा

गाय छबीले होय
पयादे चल जमी पें।

राग – श्री

ताल – आडो चौतालो

सारी रैंण जागे पिया नैंनु नींद खुमारी गहमहे
बोल मुख के सुहेले।

ताल – जात्रा

साझ के आगम विहर वन
भँवर जात कवळन कु।

ताल – ब्रह्म

प्रवध रचि लै सुर विमान पैं
स्वर्ग नदी को कर सनान।
नदन वन मे विहर प्यारे॥

राग – पट

ताल – इको

आसमान जरद हौंन लग्यो
पलट आई समैं उवाही सुहेल री।

राग – सरपरदी

ताल – धीमो तितालो

नाथ बाल गुन्हाई दी मिहर हुई रसीलेराज
राझा ले चला हीर निमाणी नु भला।

राग – सागर

राग – भैरू

ताल – इको

प्रथम राग को कीजियै उच्चार भैरू जाको नाम साधो मूल अेक ताल।
दुतिय गाइयै मालकोस मेरे लाल वरत नीकी विध दुतालै।

तीसरी हिंडोर जाकु कहत गुनी जैसे वेद माथे जाके तीन ग म ।

चौथौ राग भने गण गन्धप सिरीराग जाको नाम च्यार ताल में गावौ

पंचम प्रसोप रहौ बदले नटनारायण गावौ प्यारे मेरे वरत पंच ताल

छटौ मेघ सुनाइयें नीकी मोतन जाकौं मेघ बताय माल
पट ताल पट राग पट सिद्धम काज समरपन कीमे हैं
माम नैक मिहर निजर सौ रसीलेराज कीजे ख्याल ।

राग – सावर

राग – भैरू

ताल – चौतालो

प्रात भयौ जागौ बना चिरियाँ चहचांनी
फूले कली भंवर फैली अरुनाई ।

राग – सावर में धुरपद

राग – मैरू

ताल – चौतालो

धुरपद गायौ चढ़ी तौ गजेंद्र पीठ बैठ प्यारे
ऊंची सवारी की हुरस मान ।

राग – सावर

राग – खमायची कांगरी

ताल – इकी

रंगत राग रागनी की देखी नवल प्यारे
पाई है पूरनभाग गुरु की संगत ।

राग – सावर

राग – बिलावल

ताल – झू मरी

रंगत मइनह में अपने मन की रम
सुघर प्यारे नामा बिश्राम ।

राग – सागर

राग – नरगढ़ी

ताल – धीमो तितालो

हीर हीर पुकार दा आयाणो रांझेटा
ऐ कोर आदम को गैर दा पुतला।
जुटीनी मांवा नैन पियाले आशिका नु
पिलाता इश्क दा प्याला।

राग – सागर

राग – सोहनी

ताल – धीमो तितालो

रैण रा उनींदा म्हारी सेजा
सायबाजी आया छो राजकवार।

राग – सागर सारग रो

राग – सारग ब्रन्दावनी

ताल – रूपक

सोवै वै चतर सहेली
म्हारा मारूजी री काई सज अलबेली
परिया भी चाह करै छै नवेली।

राग – सागर

राग – हमीर कल्यांन

ताल – इकौ

अजी म्हारौ प्यारी आयी छै छबीली
साझ दिवलै लगाता वाती सामै चाल वधावा।

राग – सारग

ताल – आडो तितालो

सुर मिळाय सुर बुलाय वाजन कौ एक कर
सुर सौं ऐसौ उर जैसौ अहे ईश्वर कौ डर।

राग – जमन तिताळी

स्याम की स्याल कर नर विमान पै
राम भ्रम पर बैठ नवेसे ।

राग – गौड सारंग

प्यारा लागौ छौ सेजां में राज
पमु म्हांरा प्रांण पियारा सायबाजी राज ।

राग – मधुमाधव सारंग

सीतळ पण झोपनै वो सायबा
थाको तो सेजाज्यो म्हांने सार ।

राग – रूपक

धूप परत जहां
सघन मवरइयां की छांह
जमना तट बिहरै नंदकंवार ।

राग – मीयां री सारंग

कुणी नै भळावौ छौ म्हांरा सायबाजी
कुण छै म्हांरौ विसरांम ।

राग – शुद्ध सारंग

थांरी बांकड़ली सरे म्हांरा मारूजी
म्हांरौ मन रास्यौ छै भुमाय ।

राग – बड़हंस सारंग

धूप पड़ै छै म्हांरा सायबाजी
मा किसी चढण री वार ।
पपिया करै छै पीऊ पीऊ
किण भळाई छै थांने चाकरी ।

राग – बड़हंस सारंग
ताल – धीमी तिताळी

सीतळ जळ बिहर रहे
मुटक फूहारे मारे ।

राग – व्रन्दावन सारग

रसीलाराज मारू वाका अलवेला
म्हासु तो रखाज्यो सुधी मिजाज
मिहर सु पाई छै थारी सिरदारी दुहेली ।

राग – सारग व्रन्दावनी
ताल – जात्रा

हिंडोरा सोहत नवल सरूप
कचन रचित पटरी रतनमय
मखतूल डोरन अंबाडार ।

राग – सावन सारग
ताल – आडो तितालो

झूलत नवलकिसोर
झुलावै झोटा दे वृषभान लाडली
हरख रही चहु ओर सहेली ।

ताल – ....

हसती थे लाज्यो सायवा
कजळी देस रा चगा नै लाज्यो अैराकी मारू देस ।

राग – सिंघडी
ताल – जलद तितालो

दो नैना दी लाग बुरी मेरा राझा
जटी दे नाल मत रख आसनाई ।

राग – सोरठ
ताल – इको

देस छोड पल अेक न जाज्यो
म्हारी लाडीजी रा भवर सुजाण ।

वातायन अगन अटारन पै
हरम विहार गळवाही ।

ताल – इकताली

रग रगीला सायबाजी दारू ना पिलाजो
इण दारूड़ा री निपट नसौ छै म्हांरा राज।

ताल – समद तिताली

मेरे मही‌ड़े मु मत मुख फेमी हीर निमांणी
इस घड़ी का दीदार दे मेंडे नाल करें जो मिहरवांनी।

ताल – झूमरी

देस री सुरत दिखावा बैठधा सुखपाळ म्हांरी
साबोजी प्यारा आया छ जी मांझली रात।

राग – सोरठ मल्हार

ताल – झूमरी

हिंडोरे झूलै जी राजकवार
झूला देवै छै म्हांरी छोटी सी साजनी।

राग – सोहनी

ताल – समद तितालो

पहलो पहर पहुचौ छै दूसरौ
भाई छै मांझली रात कायम करै छै थांरी दारूड़ी।

ताल – धीमी तिताली

प्रेम और इसक की पंगी ने दोय पीजा में
रसीलेराज देस और टपा छै जी सिरदार।

ताल – धीमो तितालो

कसदानी आदम और जमवरौं दी
आंखें उस दी सुरत मोहिसी जान असीदियां।

ताल – धीमी तिताली

महमहे बोल
होन लगे प्यारी पिया के।

राग – हिंडोल

ताल – चौतालो

बदस चीज कै अग की ग्रैसी बाध विना ही उपज तान
ग्राभूषन विना जैसैं पुरुष सरुपवान ।

ताल – चौतालो

सरस कसुबी गुलसुरख केसरिया
नए नए रगन के पहरै नवल चीर।

ताल – जात्रा

क्यौ कर जाऊ लाल हरियाले वना
देखै सास ननदिया जेठानी दुलहरिया ।

राग – सागर

ताल – जलद तितालो

राग – तोडी जौंनपुरी

सरिगम गाय

राग – बराडी तोडी

सुनावौ

राग – गधारी तोडी

सप्तभेद

राग – नायकी तोडी

जुत

राग – भीमपलासी तोडी

सा री ग म प घ नी सा

सा नी ध प म ग रे सा

राग – जौंनपुरी तोडी

षरज ऋषभ गाधार

मध्यम पचम धैवत निपाद

राग – ग्रासा

परज ऋषभ गान्धार

राग – सिंधु भासा
मध्यम पञ्चम

राग – जोगिया भास।
धवत निषाद

राग – तोड़ी
परज ऋषभ ऋषभपरज
गांधारमध्यम मध्यमगांधार
पंचमधैवत धैवतपञ्चम
निषाद सप्तम सप्तम निषाद

राग – जौनपुरी तोड़ी
रसीलेराज भैसी रचना सुरा घट की रचत
तोडी यामे जोगिया करत पूरन भासा।

राग – खामर
राग – कल्याण
राग – चौताबी
करत कल्याण राधा माधव रंग रमैं।

राग – यमन कल्याण
भै मन तैंहु कर ग्रानंद

राग – भोपाली कल्याण
भोपाली मत हो सुभाव कर

राग – हमीर कल्याण
महीं हमीर सो हठ लायक तिहारै।

राग – केदारी कल्याण
केदारै की ग्रानन सों कमु मन लाव

राग – स्याम कल्याण
भैसौ तेरौ स्याम सुजान है

राग – हेम कल्याण
हेम रतनन कहा है लोभ मुभरन कौं

राग – खेम कल्याण

खेम प्यारे रसिक राय कै
रहवै मन कै अधीन।

राग – कामोद कल्याण

जाकी सरस सुवास
आगै कामोद काम करै

राग – पूरिया कल्याण

रसीलेराज असौ मन राख
तातै आगै हू पूरी आस

राग – जैत कल्याण

अब हू होयगी जोगिया मिहरसौं जैत

राग – शुद्ध कल्याण

तातै निसदिन करि हौं कल्यान

राग – सागर विलावल री
ताल – जलद तितालो

राग – देवगिरी विलावल

ता रे दा नी धि म त न न न न त र दा नी
तनन तन न तौम

राग – ककुब विलावल

धि म त ना दि र दानी

राग – मीया री विलावल

ओ दा नी त दा नी त न दि र न दि र न धि म
धिम धिम धिम ता रे दानी ता रे दानी ओ दानी।

राग – यमनी विलावल

धि म धि म त ना दि र दा नी धि म

राग – सरपदा विलावल

धि त्तु म धि त्तुं म त न दि र धि त्तु म

राग – धसईया बिलावल

हरि संग लानी मो लानी लामो ल सि सम धि तु म

राग – गुढ बिलावल

राम सामर बेलावल के
भेव पुठ बोमठ ठराम ।

राग – देवगिरी बिलावल

रसीलेराज रीझ्ढ जोगिया जान जानी ।

ताल – इकी

रग वखेरै सुर ताम सपट
सै वंद स बोम रसीलेराज रचत ।

रमझा दे नाल मोही वे
जग सियाले दी हो परी हीर निर्मोही
रसराज क्या क्या कीता विच म मझो ।

दैसई एता की गरूर वे
मैण निमारे हो नही मिसदे ।
रसराज आंमेदी मैं नाल किसु दी
भुमफ नाल विच गये पकड़े ।

मिल माईयो वे मह्हीवाले मियां ।
ठेरी सगन विस नूं नही भूसे
पीठे मी इस्क पीयाले मियां ।

———

प्रो० रामप्रसाद दाधीच 'प्रसाद'

महाराजा मानसिंह : कृतित्व और जीवन-दर्शन

महाराजा मानसिंह इतिहास और साहित्य—दोनो के लिये एक जटिल व्यक्तित्व बने हुए हैं। इतिहास ग्रंथो मे उनके जीवन और व्यक्तित्व को लेकर जो तथ्य प्रकाशित हैं वे सब भ्रान्ति-रहित नही हैं। इतिहासकारों का मतवैविध्य भी राजस्थान के इस महत्वपूर्ण भक्त, शासक और साहित्यकार को उसके वास्तविक स्वरूप मे समझने में बाधक रहा है। दया और निर्दयता, प्रेम और घृणा, मनुजता और दनुजता, दाक्षिण्य और कोप के अनुकूल-प्रतिकूल तत्वो के एक अद्भुत सम्मिश्रण के रूप मे निर्मित मानसिंह के व्यक्तित्व को समझने के लिए एक मनोविज्ञानवेत्ता की भी गहरी अन्तर्दृष्टि अपेक्षित है। साहित्यकार के रूप में, राजस्थान के अनेक साहित्यकारो की भाँति मानसिंह भी उपेक्षित ही रहे हैं। विशदता और गहराई से अभी तक इनका मूल्याकन न तो इतिहास-पुरुष के रूप मे हुआ है और न भौतिकता और अध्यात्म के एक साथ साधक साहित्यकार के रूप मे ही। इस निबन्ध मे मेरा अभिप्रेत केवल उनके साहित्यिक कृतित्व और दर्शन पर कुछ प्रकाश डालना मात्र है। अन उनके व्यक्तित्व की चर्चा यहाँ अप्रासगिक रहेगी।

मानसिंह की साहित्य सर्जना और तत्सम्बन्धी उनकी रचनाओ के विषय मे सर्व प्रथम शोधपूर्ण सूचनायें मुशी देवीप्रसाद ने अपनी एक खोज रिपोर्ट 'राजपूताना मे हिन्दी पुस्तको की खोज'[1] मे दी थी। इससे पूर्व, यो टॉड महोदय ने भी मानसिंह की तेजस्विता और काव्य-प्रतिभा का अपने इतिहास मे उल्लेख अवश्य किया था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की खोज रिपोर्टों मे इन मानसिंह की जिन कृतियो का उल्लेख है वह मुशीजी की उक्त रिपोर्ट के आधार पर ही है। मुशीजी ने ही उक्त रिपोर्ट की एक हस्तलिखित प्रति सम्मेलन को प्रकाशनार्थ भेजी थी।[2] प० रामकरण आसोपा ने भी मानसिंह के साहित्यिक ग्रथो की खोज और सग्रह का कार्य किया था। अपने द्वारा सम्पादित और प्रकाशित हिन्दी मासिक

---

१ राजपूताना मे हिन्दी पुस्तको की खोज—मुशी देवीप्रसाद।

२ राजपूताना मे हिन्दी पुस्तको की खोज—मुशी देवीप्रसाद—भूमिका।

'भारत मार्तण्ड'[१] में आसोपाजी ने 'मानधामर' शीर्षक से एक स्थायी स्तम्भ प्रारम्भ कि
या और वे प्रति मास इसके अन्तर्गत मानसिंह की काव्य रचनाओं के अंश प्रकाशित करते
भारत मार्तण्ड के कुछ अंक उपलब्ध हैं और उनमें मानसिंह के कुछ लघु ग्रंथ और स्फुट का
प्रकाशित हैं। मानसिंह के सम्पूर्ण साहित्य को प्रकाशित करने की उनकी योजना अव
थी। भारत मार्तण्ड की सम्पूर्ण प्रतियाँ क्योंकि उपलब्ध नहीं हैं अतः यह नहीं कहा
सकता कि आसोपाजी ने मानसिंह की कौन-कौन सी कृतियाँ प्रकाशित की थी। मानसिंह
सम्पूर्ण साहित्य की खोज कर आसोपाजी ने कोई शोध निबन्ध प्रकाशित किया हो ऐ
जानकारी भी कहीं प्राप्त नहीं होती।

पं विश्वेश्वरनाथ रेउ ने मानसिंह के साहित्य की खोज कर एक-दो निबन्ध[२] प्रकाशि
करवाये थे। पं अक्षयचन्द्र शर्मा डॉ राजकुमारी कौल श्री मदनराज मेहता ने
मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में लेख लिखे हैं। इन विद्वान् लेखकों के अतिरिक्त अन
किसी विद्वान् ने मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में शोधपूर्ण निबन्ध लिखे हों—यह मे
जानकारी में नहीं है। सम्प्रति जिन विद्वानों ने मानसिंह की साहित्यिक कृतियों के सम्ब
में जो सूचनायें दी हैं उनमें मुंशी देवीप्रसाद पं रामकरण आसोपा पं विश्वेश्वरना
रेउ मिश्र बन्धु, डॉ मोतीलाल मेनारिया पं अक्षयचन्द्र शर्मा आदि प्रमुख हैं और इ
सब की मान्यता है कि मानसिंह ने अनुमानतः डाई दर्जन ग्रंथों की रचना की थी। इ
विद्वानों द्वारा मानसिंह के ग्रंथों की जो सूचियाँ दी गई हैं उनमें संख्या-भेद और ग्रंथ नाम भे
है। मानसिंह के नाम से कुछ ऐसे ग्रंथ भी इन सूचियों में विद्यमान हैं जिनके सम्बन्ध में सभ
विद्वान् एकमत नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इनके संबंध में लेखकों की सूचनाओं के आधा
अधिक प्रामाणिक नहीं हैं। या तो उन्होंने जनश्रुति को आधार माना है या अन्य विद्वानों
द्वारा दी गई भ्रामक सूचनाओं का ज्यों का त्यों उल्लेख कर दिया है। मानसिंहजी की
सम्पूर्ण कृतियों को देखने और अवगाहन करने का सौभाग्य इनमें से किस लेखक को प्राप्त
हुआ था निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता। मुंशी देवीप्रसाद और पं रामकरण
आसोपा स्वर्गीय हैं। उपयुक्त शेष विद्वानों से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ है और उनके उत्तरों
से मुझे निराशा ही हुई है।

उपर्युक्त विद्वान् लेखकों ने कतिपय मतभेदों के बावजूद मानसिंह की निम्नांकित कृतियाँ
मानी हैं—१ कृष्ण विलास २ भागवत् पर मारवाड़ी भाषा की टीका (केवल तीसरा और
पांचवां स्कन्ध) ३ जलन्धर चन्द्रोदय ४ जलन्धर चरित्र ५ तेज मंजरी ६ नाथ कीर्तन
७ नाथ प्रशंसा ८ नाथ महिमा ९ सिद्ध कथा १ सिद्ध मुक्तावली ११ नाथजी के पद
१२ नाथ पंडित संवाद १३ प्रश्नोत्तरी १४ नाथ चरित्र १५ सिद्ध सम्प्रदाय १६ बिहारी
सतसई की टीका १७ शृंगार के पद १८ संयोग और वियोग के दोहे, १९ चौरासी पदार्थ

---

[१] भारत मार्तण्ड—सम्पादक–रामकरण आसोपा प्रकाशक—रामश्याम प्रेस जोधपुर।

[२] राजस्थान—वर्ष-१ अंक ३ (मार्गशीर्ष)।

नामावली, २० परमार्थ विषय की कविता, २१ रामविलास, २२ नाथ चन्द्रिका, २३ महाराजा मानसिंह की वशावली, २४ उद्यान वर्णन, २५ आराम रोशनी, २६ प्रश्नोत्तर, २७ विद्वज्जन् मनोरजनी [सस्कृत], २८ नाथ चरित [सस्कृत] ।

उपर्युक्त कुछ कृतियो के सम्वन्ध मे सभी विद्वान् एकमत नही है। उदाहरण के लिए 'नाथ चन्द्रिका'[1] को मानसिंह की कृति माना गया है, किन्तु वास्तव मे यह कृति मानसिंह के आश्रित कवि उत्तमचन्द भडारी की है। मैंने इस ग्रथ की एकाधिक प्रतियाँ देखी है और इनकी पुष्पिकाओ मे रचयिता उत्तमचद भडारी का स्पष्ट उल्लेख है । 'बिहारी सतसई' की एक 'टीका' भी मानसिंह की मानी गई है किन्तु आज तक यह कृति देखने मे नही आई । जिन विद्वानों ने इसका उल्लेख किया है उनसे मैंने यह जानकारी माँगी थी कि मानसिंह की यह कृति उन्होने कहाँ देखी और कब देखी ? उनसे प्राप्त उत्तरो से यह स्पष्ट है कि उन्होने स्वय ने यह कृति नही देखी। किसी दूसरे विद्वान् के उल्लेख को ही उन्होने आधार वनाया था। इस प्रकार और भी कुछ ग्रथ है जिनके सम्वन्ध मे आज भी प्रामाणिकता का अभाव है ।

शोध प्रसग मे मानसिंह की जो रचनायें मैंने विविध सग्रहालयो मे देखी और पढी है, वे निम्नानुसार है—

१ श्री जालधरनाथजी रो चरित ग्रथ
२ जलधर चन्द्रोदय
३ प्रस्ताविक कवित्त इगतीसा
४ रामविलास
५ सिद्ध सम्प्रदाय
६ सिद्ध मुक्ताफल ग्रथ
७ तेज मजरी
८ प्रश्नोत्तर
९ पचावली
१० सिद्ध गगा
११ उद्यान व[illegible]
१२ दूहा
१३. आराम
१४ [illegible] । ५ वार्तामय
१५ [illegible] विस [illegible]
१६

'भारत मार्तण्ड'[1] में मालोपाजी ने 'मानसागर' शीर्षक से एक स्थायी स्तम्भ प्रा
था और वे प्रति मास इसके अन्तर्गत मानसिंह की काव्य रचनाओं के अंश प्रकाशि
भारत मार्तण्ड के कुछ अंक उपलब्ध हैं और उनमें मानसिंह के कुछ लघु ग्रंथ और
प्रकाशित हैं। मानसिंह के सम्पूर्ण साहित्य को प्रकाशित करने की उनकी योज
थी। भारत मार्तण्ड की सम्पूर्ण प्रतियाँ क्योंकि उपलब्ध नहीं हैं अतः यह ना
सकता कि मालोपाजी ने मानसिंह की कौन-कौन सी कृतियाँ प्रकाशित की थी।
सम्पूर्ण साहित्य की खोज कर मालोपाजी ने कोई शोध निबन्ध प्रकाशित किया
जानकारी भी कहीं प्राप्त नहीं होती।

पं विश्वेश्वरनाथ रेउ ने मानसिंह के साहित्य की खोज कर एक-दो निबन्ध[2]
करवाये थे। पं अक्षयचन्द्र शर्मा डॉ राजकुमारी कौल श्री मदनराज मेहत
मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में लेख लिखे हैं। इन विद्वान् लेखकों के अति
किसी विद्वान् ने मानसिंह के साहित्य के सम्बन्ध में शोधपूर्ण निबन्ध लिखे हों-
जानकारी में नहीं है। सम्प्रति जिन विद्वानों ने मानसिंह की साहित्यिक कृतियों
में जो सूचनायें दी हैं उनमें मुंशी देवीप्रसाद प. रामकरण मालोपा पं विश
रेउ मिश्र बन्धु, डॉ मोतीलाल मेनारिया पं अक्षयचन्द्र शर्मा आदि प्रमुख हैं
सब की मान्यता है कि मानसिंह ने अनुमानतः बाईं दर्जन ग्रन्थों की रचना की
विद्वानों द्वारा मानसिंह के ग्रन्थों की जो सूचियाँ दी गई हैं उनमें सख्या-भेद और ग्रन
है। मानसिंह के नाम से कुछ ऐसे ग्रंथ भी इन सूचियों में विद्यमान हैं जिनके सम्बन
विद्वान् एकमत नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इनके सबध में लेखकों की सूचनाओं
अधिक प्रामाणिक नहीं हैं। या तो उन्होंने जनश्रुति को आधार माना है या अन
द्वारा दी गई भ्रामक सूचनाओं का ज्यों का त्यों उल्लेख कर दिया है। मान
सम्पूर्ण कृतियों को देखने और अवगाहन करने का सौभाग्य इनमें से किस लेखक
हुआ था निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता। मुंशी देवीप्रसाद और पं॰
मालोपा स्वर्गीय हैं। उपर्युक्त शेष विद्वानों से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ है और उन
से मुझे निराशा ही हुई है।

उपर्युक्त विद्वान् लेखकों ने कतिपय मतभेदों के बावजूद मानसिंह की निम्नांकि
मानी हैं—१ कृष्ण विलास २ भावबत् पर मारवाड़ी भाषा की टीका (केवल टी
पाँचवाँ स्कन्ध) ३ अलम्बर चन्द्रोदय ४ जलन्धर चरित्र ५ तेज मंजरी ६ ना
७ नाथ प्रशंसा ८ नाथ महिमा ९ सिद्ध कथा १ सिद्ध मुक्तावली ११ नाथर्च
१२ नाथ पवित्र सम्प्रदाय १३ प्रश्नोत्तरी १४ नाथ चरित्र १५ सिद्ध सम्प्रदाय १
सतसई की टीका १७ शृंगार के पद १८ सयोग और वियोग के दोहे, १९ चौरास

---

[1] भारत मार्तण्ड—सम्पादक-रामकरण मालोपा प्रकाशक-रायस्याम प्रेस जोधपु

[2] राजस्थान—वर्ष-१ अंक १ (मार्गशीर्ष)।

काल के सम्बन्ध मे कोई उल्लेख नही मिलता। अन्तर्साक्ष्य के रूप मे भी कोई ऐसा सुदृढ सकेत नही प्राप्त होता जिसके आधार पर रचनाकाल निर्धारित किया जाय। अत उनके कुछ हस्तलिखित ग्रथो की प्रतिलिपियो के काल के आधार पर किंचित अनुमान ही लगाये जा सकते हैं। फलस्वरूप रचनाकाल के क्रम मे इनकी कृतियो को रखना कठिन है। मैं उन्हे विषयानुसार ले रहा हूँ।

नाथ भक्ति की रचनायें

१ श्री जालधरनाथजी रो चरित ग्रथ[1]—यह जालधरनाथजी का चरित्र काव्य है। इसमे छोटे आकार के कुल ६६ पत्र है। यह अभी तक अप्रकाशित है। आर्या छन्द मे कवि ने मगलाचरण से इस प्रति का प्रारम्भ किया है। मगलाचरण मे जालधरनाथजी की ही स्तुति की गई है। इस छन्द की भाषा सस्कृतनिष्ठ है। पूरी कृति मे जालन्धरनाथ की महिमा का अनन्य श्रद्धा और भक्ति के साथ गान हुआ है। 'जालधरनाथ भक्तो की भय भीति को हरने वाले हैं--जिन भवदु ख-ग्रस्त व्यक्तियो ने इनकी आराधना की वे दुखो से मुक्त हो गये।'

इस कृति मे मानसिंह के जीवन की कतिपय घटनाओ का नाथभक्ति के प्रसग मे ही चित्रण हुआ है। जालोर के किले मे निवास, गुरु देवनाथ की कृपा, जोधपुर लौटना आदि प्रसगो का उल्लेख इसमे अन्तर्साक्ष्य के रूप मे मिलता है।

यह वर्णन-प्रधान काव्य है। काव्य कला की दृष्टि से यह एक सामान्य रचना है। सस्कृत, हिन्दी और डिंगल के छन्दो का कवि ने इस कृति मे प्रयोग किया है। भाषा की दृष्टि से भी वैविध्य के दर्शन होते हैं—सस्कृत, राजस्थानी और ब्रज भाषा का उन्मुक्त प्रयोग इस कृति मे हुआ है।

२. जलधर चन्द्रोदय[2]--यह एक काव्य-कृति है और इसकी वस्तु ४२ अध्यायो मे वर्णित है। इस कृति का विषय भी जलधरनाथ का चरित्र-चित्रण और उनकी महिमा का गुणानुवाद करना ही है। नाथजी के अनेक भक्तो के सक्षिप्त जीवनवृत्त और भक्ति प्रसगो का सुललित वर्णन इस कृति मे हुआ है। जलधरनाथ के अनादि अनन्त स्वरूप, नाथ भक्ति की महत्ता, योग साधना आदि विषयो का समावेश भी इस कृति मे है।

इस कृति का वस्तु-फलक व्यापक है, फिर भी इसे प्रबन्ध काव्य नही कहा जा सकता। एक कथासूत्रता के अतिरिक्त प्रबन्ध काव्य के अन्य अनिवार्य लक्षणो का भी इसमे अभाव है। निस्सदेह नाथ भक्ति की अविरल धारा इस कृति मे प्रवाहित है। लेखक के जीवन पर प्रकाश डालने वाली कुछ घटनाओ का उल्लेख भी इस कृति मे हुआ है। काव्य के साथ स्थान-स्थान पर गद्य का प्रयोग भी है। अपनी काव्य प्रवृत्ति के अनुसरण मे मानसिंह ने इस कृति मे भी अपना छन्द-कौशल दिखाया है। यह कृति भी अभी अप्रकाशित ही है।

---

१ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। [illegible]ति० गुटका १।

२ [illegible] प्रकाश—जो[illegible] गु० ४।

१७ कवित्त शृंगार इकवीसो
१८. शृंगार बरवै
१९ श्री सरूपां रा दूहा
२० कवित्त श्री सरूपां रा
२१ दूहा परमारथ
२२ दूहा ब्रजभाषा में
२३ दूहा संजोग शृंगार-देस भाषा में
२४ दूहा भाषा हिन्दुस्तानी पंजाबी में
२५ पद ऋतुवर्णन
२६ नाथ चरित
२७ शृंगार के पद
२८. वियोग शृंगार रा दूहा—देस भाषा में
२९ चौरासी पदार्थ नामावली
३० नाथपण्डित संवाद
३१ नाथकथा कथन
३२ अनुभव मंजरी
३३ नाथ वर्णन
३४ नाथ कीर्तन (नाथ पद संग्रह)
३५. सेवा सार
३६ नाथजी री आरती
३७. नाथ स्तोत्र
३८. नाथजी रा दूहा
३९. राग रत्नाकर
४० श्री मानसिंह के ख्याल टप्पे
४१ राग चन्द्रिका
४२ जलन्धरनाथजी री निसाणी
४३ जलंधरनाथजी रो अष्टक
४४ राजा हमीर री वारता
४५ भक्ति और अध्यात्म के पद
४६ नाथ चरित्र प्रबन्ध छन्द संग्रह]
४७. मण्डूकोपनिषद् की विद्वद् मनोरंजनी टीका
४८. एकार्थी नाममा
४९ होरी हिलार
५० वाटिका विहार

इस शोध में मैं उपर्युक्त कृतियों की प्रामाणिकता विषय सामग्री और उनके रचयिता रचनाकाल के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करना चाहूँगा। मानसिंह की किसी भी कृति में रचना-

१२ नाथ चरित्र[1]— श्री नाथजी ने [illegible] है। [illegible] है। [illegible] निरूपित किया गया है।

नाथजी का माहात्म्य [illegible] है। [illegible] इसमें [illegible] है। [illegible] की वन्दना, [illegible] की स्तुति, [illegible] नाथ दर्शन की व्याख्या, [illegible] आदि का [illegible] हुआ है। इस [illegible] स्थान-स्थान पर कवि का [illegible] भी दृष्टव्य है।

[illegible] वर्णन [illegible] है। [illegible] हुआ है। [illegible] और [illegible] में भी वर्णित हुए हैं।

सगठित कथा-क्रम और प्रबन्ध काव्य के अन्य लक्षणों का इस कृति में अभाव है। अन्तु, चरित-काव्य होते हुए भी यह प्रबन्ध काव्य नहीं है।

१३ मान पडित सवाद[2]— यह कृति अपूर्ण ही प्राप्त हुई है। इसमें छोटे आकार के कुल ११८ पत्र हैं। प्रारम्भ के २८ पत्र उपलब्ध नहीं हैं। इसका वर्ण्य विषय भी नाथ-दर्शन का विवेचन है। नाथ को ही सर्वोत्कृष्ट रूप माना गया है। इस ससार सागर में जालधरनाथ का अवलम्ब ही विश्वसनीय है। वैष्णवधर्म और अन्य उपासना-पद्धतियों का खण्डन किया गया है।

विविध छन्द, पद और गद्य का प्रयोग इस कृति में हुआ है। काव्य शैली यहाँ वर्णनात्मक है।

१४ मानदशा कथन[3]— यह कृति अपूर्ण है। मान पडित सवाद के गुटके में ही यह सग्रहित है। नाथ-भक्ति ही इसका वर्ण्य विषय है। सभवत. इसकी रचना मानसिंह के जालोर निवास के समय हुई थी। नाथ कृपा के अभाव में मान का जीवन अत्यन्त क्लेश-मय और नैराश्य ग्रस्त था। श्रीनाथ के वियोग में मानसिंह की आत्मदशा का अत्यन्त कारुणिक वर्णन इस कृति में हुआ है। इसमें दवावैत शैली के राजस्थानी गद्य का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर हुआ है।

१५ अनुभव मजरी[4]— यह कृति कुल ५ पत्रों में है और इसमें केवल ६२ दोहे हैं। कुछ प्रतियों में इस कृति का नाम 'नाथजी रा दोहा' भी मिलता है। नाथानुभूति का अत्यन्त

---

[1] पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। नाना गुटका सख्या ५।

[2] पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। गुटका स० १४।

[3] ,, ,, ,,

[4] ,, ,, ,,

३ सिद्ध सम्प्रदाय ग्रन्थ[1]— इस कृति में केवल सात दोहे हैं। आदिकाल और मध्य काल में छोटी बड़ी कृति को ग्रन्थ कहने की परम्परा थी। नाथजी की स्तुति और नाथ दर्शन का संक्षिप्त विवेचन इस कृति के विषय है।

४ सिद्ध मुक्ताफल ग्रंथ[2]— यह कृति भी अत्यन्त लघु है। इसमें केवल ११ दोहे हैं। इस कृति में भी नाथ दर्शन का मुख्य रूप से संक्षिप्त विवेचन हुआ है।

५. तेज मंजरी[3]— इस कृति में २२ दोहे और सोरठे हैं। नाथजी के तेजोमय स्वरूप का इस कृति में चित्रण हुआ है।

६ प्रश्नोत्तर ग्रन्थ— इस कृति में कुल ४ दोहे और सोरठे हैं। प्रश्नोत्तर शैली का इसमें आश्रय लिया गया है। इसमें गणेश ने गोरखनाथ से नाथ-दर्शन के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न किये हैं और गोरखनाथ ने उनके उत्तर देकर नाथ-सम्प्रदाय के दर्शन को स्पष्ट किया है। सुरति-निरति योग की चर्चा भी इस कृति में हुई है।

७. पंचावली— यह कृति भी अति लघु है। इसमे केवल ११ छन्द हैं—जिनमें दोहा और सोरठा। नाथोत्पत्ति विषय का इसमें संक्षिप्त विवेचन हुआ है।

८ सिद्ध सभा[6]— इस कृति में केवल २७ छन्द हैं—दोहा सोरठा और कवित्त। इसमें नाथ सम्प्रदाय के साधना-मार्ग का संक्षेप में विवेचन किया गया है। जोगी सेवड़ा और तांत्रिक की साधना-पद्धतियों की आलोचना की गई है।

९ सवैया रा दूहा — यह कृति अपूर्ण है। इस प्रति में केवल चार सोरठे ही हैं। अपने गुरु देवनाथ की जिन्होंने नाथ भक्ति के लिए मानसिंहजी को प्रेरित किया था इसमें महिमा गाई गई है।

१० कवित्त श्री नाथजी रा[8]— यह कृति भी अपूर्ण है। यह प्रति खण्डित है। इसमें केवल एक ही कवित्त है। इसका विषय भी नाथ सम्प्रदाय के अपने गुरु देवनाथ का स्तुति गान ही है।

११ दूहा परमारथ[9]— इस कृति में केवल २५ दोहे हैं। इन दोहों की विषय वस्तु भी नाथ-भक्ति ही है। योग और उपासना पद्धति का विवेचन भी हुआ है।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। जोध गु. सं. ११।
पुस्तक प्रकाश जोधपुर। जोध गुटका सं. ११।
[3] ” ”
”
[5] ” ”
[6] ” ”
[7] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। नाथ गुटका सं. ५।
[8] ” ” ”
[9] ” ”

१२. नाथ चरित[1]— श्री नाथजी के चरित्र पर रचित मानसिंह की यह एक महत्त्वपूर्ण काव्य कृति है। इसमें बड़े आकार के कुल ८३ पत्र हैं। यह ग्रंथ पूर्ण रूप में प्राप्त है। इस काव्य का वर्ण्य विषय तीन प्रबन्धों में विभाजित है। प्रबन्धों को पुनः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

नाथजी का माहात्म्य वर्णन इस कृति का मूल विषय है। अनेक प्रकारान्तर नाथभक्ति की कथाओं का भी इसमें समावेश है। देवनाथ गुरु की वन्दना, जोगेश्वरों की स्तुति, योग शिक्षा, नाथ दर्शन की व्याख्या, गोपीचन्द मैनावती की कथा, कन्नोज के राजा की नाथ भक्ति की कथा आदि का वर्णन इस कृति मे विस्तार से हुआ है। इसमे वर्णन की प्रधानता है किन्तु स्थान स्थान पर कवि का काव्य-कौशल भी दृष्टव्य है।

ऋतु वर्णन अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। डिंगल छन्दों के साथ संस्कृत वृत्तों का प्रयोग भी इस ग्रंथ मे हुआ है। कथाओं और नाथ दर्शन के कुछ प्रसंग पद्य के साथ-साथ व्रज और राजस्थानी के गद्य मे भी वर्णित हुये है।

संगठित कथा-क्रम और प्रबन्ध काव्य के अन्य लक्षणों का इस कृति मे अभाव है। अस्तु, चरित-काव्य होते हुए भी यह प्रबन्ध काव्य नही है।

१३ मान पंडित संवाद[2]— यह कृति अपूर्ण ही प्राप्त हुई है। इसमे छोटे आकार के कुल ११८ पत्र है। प्रारम्भ के २८ पत्र उपलब्ध नही है। इसका वर्ण्य विषय भी नाथ-दर्शन का विवेचन है। नाथ को ही सर्वोत्कृष्ट देव माना गया है। इस संसार-सागर में जालंधरनाथ का अवलम्ब ही विश्वसनीय है। वैष्णवधर्म और अन्य उपासना-पद्धतियों का खण्डन किया गया है।

विविध छन्द, पद और गद्य का प्रयोग इस कृति मे हुआ है। काव्य शैली वही वर्णनात्मक है।

१४ मानदशा कथन[3]— यह कृति अपूर्ण है। मान पंडित संवाद के गुटके मे ही यह संग्रहित है। नाथ-भक्ति ही इसका वर्ण्य विषय है। संभवत इसकी रचना मानसिंह के जालोर निवास के समय हुई थी। नाथ कृपा के अभाव मे मान का जीवन अत्यन्त क्लेश-मय और नैराश्य ग्रस्त था। श्रीनाथ के वियोग मे मानसिंह की आत्मदशा का अत्यन्त कारुणिक वर्णन इस कृति मे हुआ है। इसमे दवावैत शैली के राजस्थानी गद्य का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर हुआ है।

१५ अनुभव मंजरी[4]— यह कृति कुल ५ पत्रों मे है और इसमे केवल ६२ दोहे हैं। कुछ प्रतियो मे इस कृति का नाम 'नाथजी रा दोहा' भी मिलता है। नाथानुभूति का अत्यन्त

---

१ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। नान गुटका संख्या ५।

२ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। गुटका स० १४।

३ ,, ,, ,,

४ ,, ,, ,,

सहज रूप में इस कृति में वर्णन हुआ है। तीर्थ व्रत वेद ग्रन्थ कर्म काण्ड आदि का खण्डन किया गया है।

१६ नाथ वर्णन ग्रंथ[1]— इस ग्रंथ में नाथजी की भक्ति के पद हैं। पत्रांक १११ ही उपलब्ध हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रति अपूर्ण है। अन्य विविध छन्दों का प्रयोग भी इसमें हुआ है। कुछ स्थलों पर गद्य का उपयोग भी किया गया है। पद शास्त्रीय और लोक संगीत की राग रागनियों पर आधारित हैं। प्रियतम नाथजी के वियोग में प्रियतमा आत्मा अन्तर्वेदना की ज्वाला से पीड़ित है। इस कृति में मधुराभक्ति का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

१७ नाथ कीर्तन[2]— इस कृति में कुल आकार के बड़े २८ पत्र हैं। इसमें नाथजी के कीर्तन के पद हैं। पदों की भाषा ब्रज और राजस्थानी है। पद शास्त्रीय और राजस्थानी लोक संगीत की राग रागनियों पर आधारित हैं। नाथ कीर्तन के साथ नाथ सम्प्रदाय के दर्शन का विवेचन भी पदों में हुआ है। कुछ कूट पद और उलटवासियाँ भी इस कृति में हैं। प्रेमाभक्ति की तीव्र अभिव्यंजना इन पदों में परिलक्षित होती है। गीत-काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से यह ग्रंथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

१८ सेवासार[3]— यह कृति केवल चार पत्रों में है। पत्र बड़े आकार के हैं। दोहा और सोरठा का प्रयोग इसमें हुआ है। यत्र तत्र गद्य का प्रयोग भी है। वर्ण्य विषय नाथ-सेवा है। नाथजी की सेवा किस विधि से की जाय? अष्टपुटी सेवा की विधि नित्य सेवा की विधि आदि का इसमें विवेचन हुआ है।

१९. नाथजी की आरतियाँ[4]— इस कृति में केवल १ आरतियाँ संग्रहित हैं। प्रति अपूर्ण प्रतीत होती है। आरतियों का विषय नाथजी की स्तुति है। यह आरतियाँ शास्त्रीय राग रागनियों पर आधृत हैं।

२ नाथ स्तोत्र[5]— यह तीन पत्रों की एक छोटी सी कृति है। इसमें कुल १९ कवित्त हैं। इन कवित्तों में नाथजी की स्तुति की गई है।

२१ जलंधरनाथजी री निशाणी[6]— यह कृति बड़े आकार के तीन पत्रों में है। इसमें छप्पय छन्द का प्रयोग हुआ है। विषय जालंधरनाथजी की स्तुति ही है। मानसिंहजी के जीवन की कुछ घटनाओं का भक्ति के प्रसंग में उल्लेख भी है। इस कृति में छप्पय छन्द के कतिपय भेद दृष्टव्य हैं।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। गुटका संख्या १४।
[2] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। गुटका संख्या १७।
[3] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। ग्रन्थ संख्या ४।
[4] " " । ग्रन्थ संख्या ४।
[5] प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर। ग्रन्थ संख्या १८६२१।
[6] " " "

कृष्ण भक्ति की रचनायें

१ कृष्ण विलास[1]— यह मानसिहजी की प्रकाशित कृति है। इसमे भागवत् के दसम् स्कन्ध के प्रारम्भ के ३२ अध्यायो की कथा वर्णित हुई है। कृष्ण जन्म से लेकर गोपी-सात्वना प्रसग तक की घटनायें इस काव्य मे चित्रित हुई है। प्रकाशित कृष्ण विलास के सम्पादक प० विश्वेश्वरनाथ रेउ ने इसे भागवत् के दसमस्कन्ध का भाषानुवाद कहा है किन्तु यह अनुवाद मात्र नही है। इसमे सदेह नही कि कथावस्तु दसम्स्कन्ध के ३२ अध्यायो की ही है किन्तु कवि की मौलिक दृष्टि के भी उदाहरण इस कृति मे विद्यमान है। इस कृति का काव्य-सौन्दर्य भी उत्कृष्ट है। कवित्त, सवैया, कुण्डलिया, छप्पय के साथ सस्कृत के वृतों का प्रयोग भी कवि ने किया है। सवादो का इस कृति मे आधिक्य है और चित्रात्मकता और नाटकीयता का सफल निर्वाह इस कृति मे हुआ है।

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे कृष्ण विलास की एक हस्तलिखित प्रति विद्यमान है। इस प्रति पर 'भागवत् भाषा दशम्स्कन्ध' नाम मिलता है। सभव है सम्पादक प० रेउ ने इसका नामकरण कृष्ण विलास कर दिया हो। पुस्तक प्रकाश की प्रति पर भी कृष्ण विलास नाम नही मिलता। यह लेखक का प्रबन्ध काव्य कहा जा सकता है।

२ रास चन्द्रिका[2]— यह मानसिह की एक लघु काव्य कृति है। इसमे कृष्ण और गोपिकाओ की रास-क्रीडा का वर्णन है। यह सयोग शृगार काव्य है। प्रारम्भ मे कृष्ण भक्ति के दोहे दिये गये है। कवित्त, छप्पय और सवैया छन्दो का इस कृति मे प्रयोग हुआ है। प्रकृति चित्रण भी सजीव और उद्दीपक बन पडा है।

रामभक्ति काव्य

१ राम विलास[3]— भगवान् राम के जीवन वृत्त पर आधारित लेखक की यह एक लघु काव्य कृति है। इसकी केवल एक प्रति पुस्तक प्रकाश मे प्राप्त हुई है—वह भी अपूर्ण और जीर्ण-शीर्ण। प्रारम्भ मे गणेश, शिव और सरस्वती की वदना की गई है। भगवान् मनु और सतरूपा की कथा, स्वयभू और मनु के वरदान का वृत, भारद्वाज, विश्वेश्रवा आदि के आख्यानो का इस कृति मे समावेश हुआ है। कथावस्तु मे तारतम्य और सगठन का अभाव है। भाषा राजस्थानी और ब्रज मिश्रित है। नाराच, वेताला, त्राटक, गीतिका आदि छन्दो का विशेष प्रयोग हुआ है। कुछ स्थलो पर प्रकृति चित्रण सफल बन पडा है।

२ रामावतार[4]— रामजन्म के कथानक पर रचित यह मानसिह की सस्कृत काव्य कृति है किन्तु इसका केवल एक ही पत्र प्राप्त है। प्रारम्भ और अन्त मे कोई पुष्पिका भी नही है।

---

[1] मारवाड स्टेट प्रेस मे मुद्रित। सम्पादक–प० विश्वेश्वरनाथ रेउ।
[2] पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। काव्य गुटका सख्या ३।
[3] ,, ,, ,,
[4] ,, ,, संस्कृत ह० लि० ग्रं० ३०६।

शृंगार काव्य (संयोग व विप्रलम्भ)

१ कवित्त शृंगार इकतीसो[1] — इस कृति में कुल ३१ कवित्त हैं—विषय है संयोग शृंगार। प्रकृति चित्रण भी समोहक बन पड़ा है। भाषा व्रज और राजस्थानी मिश्रित है।

२ शृंगार बरवै[2] — यह कवि की बहुत लघु काव्य-कृति है। बरवै छन्द में नायिका के नखशिख मान और अन्य हाव भाव का अत्यन्त मार्मिक वर्णन हुआ है। यह कृति भी अपूर्ण ही प्रतीत होती है। इसमें केवल १२ छन्द हैं। अन्त में कोई पुष्पिका भी नहीं है।

३ दूहा व्रज भाषा में[3] — यह एक छोटी सी काव्य-कृति है। इसमें नायिका के नखशिख और हाव भाव का वर्णन है। यद्यपि कृति के नामकरण के अनुसार भाषा व्रज ही है किन्तु राजस्थानी और पंजाबी के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है। इसमें केवल २ दोहे हैं।

४ दूहा संजोग शृंगार—देस भाषा में — इस कृति में कुल ८५ दोहे हैं—भाषा राजस्थानी है। विषय संयोग शृंगार है। नायिका का नखशिख वर्णन और सापेक्ष प्रकृति चित्रण भी इस कृति में हुआ है। वयण सगाई अलंकार का प्रत्येक दोहे में निर्वाह हुआ है। इस कृति के एक-एक दोहे में मानसिंह की काव्य-गरिमा के दर्शन होते हैं।

५ संजोग शृंगार रा दूहा[4] — इस कृति में केवल १२ दोहे हैं। कृति का नामकरण 'संजोग शृंगार' है किन्तु इस कृति के प्रत्येक दोहे में 'विप्रलम्भ' का अत्यन्त हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है।

६ दूहा भाषा हिन्दुस्तानी पंजाबी में[5] — यह एक छोटी सी काव्य कृति है—केवल २ दोहे की। इसका विषय भी संयोग-वियोग शृंगार ही है। कवि ने इस कृति की भाषा को 'हिन्दुस्तानी पंजाबी' कहा है। इस भाषा से उनका अर्थ संभव है व्रज उर्दू फारसी पंजाबी और राजस्थानी के मिश्रित-स्वरूप से ही रहा हो। इन दोहों में उपर्युक्त सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है किन्तु काव्य की सहजता सुरक्षित रह गई है। मानसिंह बहु भाषाविद् थे यह कृति इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

प्रकृति काव्य

१ उद्यान वर्णन — यह कवि का प्रकृति-काव्य है। पुस्तक प्रकाश में इसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति में ६ पत्र हैं और दूसरी में केवल चार। कृति अपूर्ण है।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[2] „ „ । काव्य गुटका संख्या १४।
[3] „ „ „
„ „ „
[4] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[5] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
पुस्तक प्रकाश जोधपुर। काव्य ग्रन्थ १।

उद्यान की शोभा—लता द्रुम, पादप-पुष्प और वसन्तागमन का अतिशय सुन्दर चित्रण इस काव्य कृति में हुआ है। इसमें पद्धरि छन्द का विशेष प्रयोग किया गया है।

२ षड्‌ऋतु वर्णन[१]— यह ऋतु काव्य की एक छोटी सी कृति है। ६×४ के आकार के इसमें कुल ३५ पत्र हैं। छहों ऋतुओं का काव्य सौन्दर्य में युक्त मार्मिक चित्रण इस कृति में हुआ है। ऋतु वर्णन के साथ नायिका के अंग प्रत्यंग व षोडश शृंगार का वर्णन भी इस कृति में है।

गीति काव्य

१ राग रत्नाकर[२]— कुछ शोध विद्वानों ने इसे राग सागर भी कहा है। पुस्तक प्रकाश में मुझे जो प्रति मिली है उस पर 'राग रत्नाकर' नाम का उल्लेख है। यह कृति बडे आकार के १८ पत्रों में है। शास्त्रीय और राजस्थानी लोक सगीत की राग-रागनियों पर आधारित कवि की यह सयोग और वियोग शृ गार की गीत काव्य की कृति है। इसमें कुछ पद कृष्ण भक्ति के भी हैं। दोहे भी हैं। कुछ पदों का सरगम भी दिया गया है। मानसिंह रसीलाराज के नाम से भी गीति रचना किया करते थे। इस ग्रथ के पदो मे रसीलाराज, नृपमान, रसराज आदि का प्रयोग हुआ है। रेउनी व आसोपाजी इन्हें मानसिंह के ही उपनाम मानते है। गीत अत्यन्त सरस और मधुर है।

२ मानसिंहजी साहबां री वणावट रा ख्याल-टप्पा[३]—यह मानसिंह द्वारा रचित गीति काव्य की एक बडी कृति है। यह ११६ पत्रों मे है और अनुमान से इसमें ५५० पद हैं। विषय सयोग-वियोग शृ गार है। कृति का नामकरण भ्रामक है। इसमें भी शास्त्रीय और लोक सगीत की राग-रागनियो पर आधृत पद है। कल्पना की उडान, अलकारो की छटा, सहज अभिव्यजना, गेयत्व, हृदयस्पर्शिता आदि गीत काव्य के तत्व सभी पदो मे विद्यमान है।

३ शृ गार पद[४]— इस कृति के सम्पूर्ण पद शृ गार (सयोग-वियोग) के है। इसमे बडे आकार के ७४ पत्र हैं। यह पद भी शास्त्रीय और राजस्थानी लोक सगीत की राग-रागनियो पर आधृत हैं। प्रकृति चित्रण (सापेक्ष और निरपेक्ष) भी इन पदो मे हुआ है। इस कृति के कुछ पदो का सग्रह 'रसीलैराज रा गीत' नाम से परम्परा के विशेषांक (प्रस्तुत अक) के रूप मे राजस्थानी शोध सस्थान ने प्रकाशित किया है।

४ होरी हिलोर[५]—यह प्रकाशित है। इसमे मानसिंह द्वारा रचित होरियाँ सग्रहित हैं।

---

१ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। नाथ गुटका ५।
२ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। ग्रन्थ सख्या ६।
३ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। सगीत गुटका ३३।
४ पुस्तक प्रकाश, जोधपुर। ग्रन्थ सख्या ३।
५ मुद्रक सरदारमल थानवी, श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस, जोधपुर, १६२७।

शृंगार काव्य (संयोग व विप्रलम्भ)

१ कवित्त शृंगार इकतीसी[1] — इस कृति में कुल ३१ कवित्त हैं—विषय है संयोग शृंगार। प्रकृति चित्रण भी समोहक बन पड़ा है। भाषा ब्रज और राजस्थानी मिश्रित है।

२ शृंगार बरवै[2] — यह कवि की बहुत लघु काव्य-कृति है। बरवै छन्द में नायिका के नखशिख मान और अन्य हाव भाव का अत्यन्त मार्मिक वर्णन हुआ है। यह कृति भी अपूर्ण ही प्रतीत होती है। इसमें केवल १२ छन्द है। अन्त में कोई पुष्पिका भी नहीं है।

३ दूहा ब्रज भाषा में — यह एक छोटी सी काव्य-कृति है। इसमें नायिका के नखशिख और हाव भाव का वर्णन है। यद्यपि कृति के नामकरण के अनुसार भाषा ब्रज ही है किन्तु राजस्थानी और पंजाबी के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग हुआ है। इसमें केवल २ दोहे हैं।

४ दूहा संयोग शृंगार—देश भाषा में — इस कृति में कुल ८६ दोहे हैं—भाषा राजस्थानी है। विषय संयोग शृंगार है। नायिका का नखशिख वर्णन और सापेक्ष प्रकृति चित्रण भी इस कृति में हुआ है। वैण सगाई अलंकार का प्रत्येक दोहे में निर्वाह हुआ है। इस कृति के एक-एक दोहे में मानसिंह की काव्य-प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

५. संयोग शृंगार रा दूहा[4] — इस कृति में केवल १२ दोहे हैं। कृति का नामकरण 'संयोग शृंगार' है किन्तु इस कृति के प्रत्येक दोहे में 'विप्रलम्भ' का अत्यन्त हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है।

६ दूहा भाषा हिन्दुस्तानी पंजाबी में[5] — यह एक छोटी सी काव्य कृति है—केवल २ दोहे की। इसका विषय भी संयोग-वियोग शृंगार ही है। कवि ने इस कृति की भाषा को 'हिन्दुस्तानी पंजाबी' कहा है। इस भाषा से उनका अर्थ संभव है ब्रज उर्दू फारसी पंजाबी और राजस्थानी के मिश्रित-स्वरूप से ही रहा हो। इन दोहों में उपर्युक्त सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है किन्तु काव्य की सहजता सुरक्षित रह गई है। मानसिंह बहु भाषाविद् थे यह कृति इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

प्रकृति काव्य

१ उद्यान वर्णन — यह कवि का प्रकृति-काव्य है। पुस्तक प्रकाश में इसकी दो प्रतियाँ उपलब्ध है। एक प्रति में ६ पद्य हैं और दूसरी में केवल चार। कृति अपूर्ण है।

---

[1] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[2] " " । काव्य गुटका संख्या १४।
[3] " " " "
" " "
[4] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
[5] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। योग गुटका संख्या ११।
पुस्तक प्रकाश जोधपुर। काव्य ग्रन्थ १।

५. बहार वाटिका[1]— यह कृति भी प्रकाशित है। इसमें बसन्त वैभव के सरस प
का संग्रह है। शृंगार का समावेश भी है।

६ भक्ति और अध्यात्म के पद[1]— मानसिंह ने भक्ति और अध्यात्म विषय के अनेक
पद लिखे थे। पुस्तक प्रकाश में विभिन्न गुटकों और ग्रन्थों में यह संग्रहित हैं। राजस्थान
वयोवृद्ध साहित्यकार और चिन्तक स्व. रामगोपालजी मोहता ने मानसिंह के इन पदों
सम्पादित कर तीन संग्रह (मान पद संग्रह) प्रकाशित कराये थे। जिस प्रकार मानसिंह
शृंगार-पद लोक-कण्ठ पर आज भी विद्यमान हैं उसी प्रकार उनके भक्ति और अध्यात्म
पद भी खूब लोक-प्रचलित हैं। कीर्तनों में यह खूब गाये जाते हैं। मोहताजी द्वारा
सम्पादित और प्रकाशित इन संग्रहों में मानसिंहजी के भक्ति नीति और अध्यात्म विषय
स्फुट छन्द (दोहा सोरठा सवैया कवित्त) भी हैं। यदि मानसिंह के भक्ति विषयक सम्पूर्ण
पद साहित्य को प्रकाशित किया जाय तो ऐसे अनेक संग्रह और तैयार हो सकते हैं। मानसि
की नाथ वाणियाँ और जोगीड़े तो राजस्थान में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

कोश काव्य

१ चौरासी पदार्थ नामावली ग्रंथ[2]— पुस्तक प्रकाश में यह कृति पदार्थ संख्या ग्रंथ
के नाम से विद्यमान है। यह सम्पूर्ण कृति दोहा छन्द में लिखी गई है। इसमें दर्शन धर्म
ज्योतिष भूगोल राजनीति पुराण खगोल इतिहास साहित्य आदि विषयों से सम्बन्धित
अनेक सूचनायें दी गई हैं। एक अर्थ में यह संक्षिप्त विश्व ज्ञान कोश है। काव्य-सौन्दर्य के
स्थान पर इस कृति में कवि की बहुज्ञता दर्शनीय है। संस्कृत में ऐसे कोशों की परम्परा रही
है। राजस्थानी साहित्य में भी ऐसे कोश मिलते हैं। राजस्थानी पदार्थ कोशों की परम्परा
म मानसिंह की इस कृति का भी पर्याप्त महत्व है। यदि यह प्रकाशित हो तो विद्यार्थियों
के लिए इस कृति की उपयोगिता असंदिग्ध होगी।

२ एकाक्षरी नाम माला[3]— यह कृति बहुत छोटी है। इसमें केवल १४ दोहे हैं।
एक ही अक्षर के विविध अर्थमय नामों को प्रकट करने वाला यह कोश है। इसके रचयिता
के सम्बन्ध में विवाद है। कुछ विद्वान् इसे वीरभाण रतनू की कृति मानते हैं। मैंने इस
कोश की एक प्रति एस. बी. एम. दरबार(?)पुर जोधपुर में देखी है और उसके अन्त में दी
गई पुष्पिका और रचनाकाल से स्पष्ट सिद्ध होता है कि यह कृति मानसिंह की है। मान
सिंह ने कोश ग्रंथ लिखे भी हैं। वे बहुत पंडित थे—केवल कवि ही नहीं थे। इस कोश में
प्रयुक्त भाषा-शैली भी मानसिंह की शैली से साम्य रखती है। मेरी अपनी मान्यता तो
यही है कि यह कृति मानसिंह की ही है।

मुद्रक हरदासमल बागची श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस जोधपुर, सन् १६१४।
[1] मान पद संग्रह (भाग १ २ ३) संग्रहकर्ता—रामगोपाल मोहता।
[2] पुस्तक प्रकाश जोधपुर। काव्य गुटका संख्या ८।
[3] एस. बी. एम. दरबार(?)पुर जोधपुर। ६ पं।

लगभग १००० श्लोक है। [illegible] अब तक प्राप्त नहीं हो सकी है। इन्हीं के [illegible] उल्लेख कहीं नहीं किया है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में [illegible] मानसिंह [illegible] है। इस विपुल साहित्य-भण्डार के [illegible] और विषय, [illegible] करते हैं कि मानसिंह एक महान् प्रतिभा-पुरुष और [illegible] विकट संघर्ष करना पड़ा—शारीरिक और मानसिक [illegible] शान्ति नहीं मिल सकी। [illegible] पीड़ा, पारिवारिक कलह, राजनीतिक [illegible] किन्तु विधना ने [illegible] सहिष्णुता, धैर्य और [illegible] कि न तो इनका समर ही रुका और न लेखन ही रुका। अनुमानतः १८-१९ वर्ष की आयु में इन्होंने साहित्य-साधना आरम्भ की और जीवन [illegible] रहे। मित्रों के विश्वासघात, परिजनों की [illegible] और [illegible] ने चाहे कभी उन्हें भव-जीवन से उदास कर दिया हो किन्तु उनकी साहित्य-सृजन की [illegible] का प्रवाह कभी कुण्ठित नहीं हुआ। इस सत्य का प्रमाण [illegible] अन्तःसाक्ष्य और बहिर्साक्ष्य के रूप में अनेक तथ्य उपलब्ध होते हैं।[1]

उनकी मूल रचना अथवा उसकी प्रतिलिपि (अथवा मूल) पर प्रतिलिपिकार [illegible] रचना काल, प्रतिलिपि काल, रचना स्थान, प्रतिलिपि स्थान आदि का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता। हाँ, मानसिंहजी के हस्तलेख में लिखित कुछ ऐसे कागज अवश्य मिलते हैं जिन पर उनकी रचनाओं के कच्चे लेख (Rough Writings) हैं, इनमें से कुछ पन्नों पर रचना काल अवश्य अंकित है। इनसे पूरी रचना का निश्चित रचना काल निकालना कठिन है, मात्र अनुमान लगाया जा सकता है।

मानसिंहजी अधिकांशत जालोर और जोधपुर में ही रहे। युद्धों के सिलसिले में अन्य स्थानों पर भी समय-समय पर उन्हें जाना पड़ा। अस्तु, रचना स्थान जालोर और जोधपुर ही समझे जाने चाहिए। कुछ सृजन प्रवास काल में भी किया होगा। यह संभावना मात्र है। यों घोर मानसिक अशान्ति और युद्ध की परिस्थितियों के क्षणों में सृजन की मन स्थिति जुटाना अत्यन्त कठिन होता है।

यह एक मान्यता है कि राजा महाराजा स्वयं अपने हाथ से कुछ भी नहीं लिखते थे। वेतन-भोगी लिपिक और प्रतिलिपिकार उनके यहाँ रहा करते थे। मानसिंहजी एक अर्थ में अपवाद हैं क्योंकि उनके हस्तलेख की रचनाओं के अंश प्राप्त हैं किन्तु उनके यहाँ भी वेतन-

---

१ जालन्धर चरित, नाथ चरित और जालन्धर चन्द्रोदय।

राजस्थानी की मधु प्र म कथायें पत्र डायरी रोजनामचा आदि विविध गद्य विधाओं में मानसिंहजी लिखा करते थे। इनके द्वारा लिखे गये राजनैतिक पत्र (अंग्रेजों और अन्य राजाओं के साथ पत्र-व्यवहार) राजस्थानी गद्य साहित्य की अच्छी सम्पत्ति है। इनकी काव्य-कृतियों में भी गद्य साहित्य स्थान-स्थान पर विद्यमान है। कहीं पर यह साधारण कोटि का है तो कहीं पर अत्यन्त अलंकृत और ललित। मानसिंह उच्च कोटि के इतिहास लेखक भी थे। अंग्रेजी के प्रसिद्ध इतिहासकार जेम्स टॉड को हजारों पृष्ठों की ऐतिहासिक सामग्री इन्होंने दी थी। स्वयं टॉड ने[1] इसे स्वीकार किया है।

स्फुट काव्य— मानसिंह का स्फुट काव्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। उनके द्वारा रचित दोहे सोरठ सवैया कवित्त और डिंगल गीत सैकड़ों की संख्या में है जो किसी विशेष प्रसंग और अवसर को लेकर लिखे गये हैं। इन मुक्तकों का विषय मूल रूप से नीति भक्ति और शृंगार है। कविराजा बाँकीदासजी इनके काव्य गुरु थे। बहुत से मुक्तक मानसिंहजी और बाँकीदासजी के पारस्परिक संवादों के रूप में भी मिलते हैं। ऐतिहासिक प्रसंगों के डिंगल गीत भी मानसिंह ने खूब लिखे हैं।

संस्कृत रचनायें— मानसिंहजी बहु भाषाविज्ञ और अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। संस्कृत भाषा पर उनका अच्छा अधिकार था। अपनी डिंगल और ब्रजभाषा की प्रबन्ध रचनाओं में भी इनकी संस्कृत काव्य-रचना का प्रमाण मिलता है। अपनी अधिकांश काव्य-कृतियों का मंगलाचरण इन्होंने संस्कृत में ही लिखा है। इनकी डिंगल और ब्रज भाषा पर भी संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। यथावधि इनके द्वारा संस्कृत में प्रणीत जो काव्य रचनायें प्राप्त हुई है वे निम्नांकित हैं—

१ माण्डूक्योपनिषद् की विद्वन्मनोरञ्जनी टीका — मण्डूकोपनिषद् के केवल प्रथम खण्ड के श्लोकों पर ही यह टीका है। संभव है पूरे उपनिषद् पर टीका लिखी हो किन्तु वह प्राप्त नहीं है न किसी विद्वान् ने इसकी उपलब्धता के सम्बन्ध में कोई सूचना दी है। प्रारंभ में संस्कृत में ही मंगलाचरण है। फिर उपनिषद् के मंत्र है और उन पर टीका है। टीका का कुछ अंश ब्रज भाषा गद्य में भी है। यह कृति छोटे आकार के केवल १२ पत्रों में है।

२ नाथ चरित्र प्रबन्ध काव्य — इस कृति में नाथजी का चरित—उनके अनादि वैभव का कीर्तन है। सम्पूर्ण कृति संस्कृत में है किन्तु कुछ स्थलों पर ब्रजभाषा पद्य का प्रयोग भी हुआ है। कुल पद्यांक ८२ है। इसमें संस्कृत वृत्त अनुष्टुप् आदि का प्रयोग हुआ है।

३ नाथ श्लोकम्— इस कृति के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि मानसिंह ने कोई ऐसा संस्कृत-ग्रंथ लिखा था। यह कृति अभी तक कहीं पर भी उपलब्ध नहीं हुई है। रेउजी का अनुमान है कि मानसिंह ने यह कृति लिखी थी और इसमें अनु

---

[1] राजस्थान कर्नल टॉड जि १।
पुस्तक प्रकाश जोधपुर। संस्कृत ह लि ग्रं संख्या १ १।
[2] „ संस्कृत ह लि ग्र संख्या ४७ ४०१।

अस पर अस पर सीस प्रघतस पर
या गुपान तस कर दूर जाग सारै कौ
भारी भुज दड पर लान की अर्जंड लर
मोहन प्रचड वर सोभा रिझवारै की
[कृष्ण विलास]

आज रसीलो उमग री रस वरसै है गात
पाम पडी छै पीव रै गोरी कचन गात
गुल क्यारी सी गदगदी वेल लह तही वाग
गाळी गावै गुण भरो रहिया भरी सुहाग
मुप सु मुख अधरा अधर उरमू उर द्रग दोय
एकमेक यू ह्वै रह्या जळमिसरी ज्यू होय
[दुहा सजोग शृ गार]

वियोग शृ गार—

रे रे वन मोर मेरे स्याम के लहन हार
देखे वल वीरजू के चिन्ह किहु थान हैं
पद्म से पाय धीरै धारियतु धरनि माझ
रामानुजस्याम सोतो मेरे प्रिय प्रान हैं
कुडल की झलक अलक छुटि नागिन सी
तट की वनमाल तैसी विस्व की लुभान है
ऐसे ब्रजनाथ मोहि दीजिये वताय नातो
प्रानेस्वर वृन्दावन चदजू की आन है
[कृष्ण विलास]

साजनिया थासू लगी, या चटकीली आख
निस दिन पथ निहारती, रही झरोखा झांख
गोरै मुखडै सावळो, जुलफ रही उळझाय
आव विदेसी वेग घर, साजनिया सुळझाय
काजळ ह्वै रह्यो काळमा, पानत बोल प्रहार
वेणी ह्वै रहि विषधरी, भूषण ह्वै रह्या भार
[दुहा सजोग शृ गार]

सन्यास को धार लहे तब तीनो ही लोक करे जो गुलामी
ह रहे परवाह नही वह तीनो ही लोक को है जो स्वामी
ही सन्यासी वन्यो जिन पाय लियो उर मे धन नामी
रग है उनको जिन जान लियो उर अन्तर्यामी
[स्फुट काव्य]

लोकी लिपिक और प्रतिलिपिकार थे। कुछ नाम प्रतिलिपियों और पुस्तक प्रकाश संग्रहालय की बहियों में मिलते हैं।

संक्षेप में यह कहना चाहिए कि मानसिंह की कृतियों का रचना काल रचना स्थान और प्रतिलिपिकार के सम्बन्ध में निश्चित ज्ञातव्य आज भी प्राप्त नहीं है।

कला—

मानसिंह रीतिकाल के अन्तिम चरण के कवियों में से है। राजस्थानी और हिन्दी साहित्य दोनों के रीतिकाल का अन्त संवत् १६ माना जाता है। इसी वर्ष मानसिंह का अवसान हुआ। अस्तु मानसिंह के साहित्य पर रीतिकाल की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों का प्रभाव अवश्यंभावी रूप से है। रीतिकाल में मुक्तक-काव्य रचना की प्रवृत्ति मुख्य थी। मानसिंह ने भी मुक्तक-काव्य ही अधिक लिखा है। उनके नाथ और जलन्धर पर रचित चरित काव्यों में प्रबन्धाभास मात्र है—वे भी मुक्तक की प्रवृत्ति के अधिक निकट हैं। मुख्य ऋतु वर्णन छन्द और अलंकार बहिष्य शृ गार (संयोग वियोग) चित्रण और अन्य रीति कालीन प्रवृत्तियों का स्पष्ट-दर्शन मानसिंहजी के काव्य में होता है। हाँ चमत्कार प्रदर्शन और आचार्यत्व का विमोह इनमें दिखाई नहीं देता।

रीतिकाल के कवि होते हुये भी मानसिंह ने नाथ-भक्ति का विपुल काव्य निर्मित किया यह उनकी एकान्त विशेषता मानी जानी चाहिये। यद्यपि रीतिकाल में भक्ति काव्य की क्षीण मन्द-सलिला रीति और शृ गार से आच्छन्न होकर प्रवाहित रही है किन्तु मानसिंह की भक्ति सम्बन्धी काव्य-कृतियाँ विशुद्ध रूप से भक्ति की ही रचनायें हैं। प्रेम और शृ गार का किंचित आभास भी इनमें नहीं मिलता। उनके नाथ भक्ति काव्य में सर्वत्र एक भक्त का दैन्य आराध्य के लिये उनका समर्पण भाव और एक तत्त्वदर्शी की उपराम भावना परिलक्षित होती है। मानसिंह की कला के प्रसंग में उनके काव्य के वर्ण्य विषय की इसलिये चर्चा करदी क्योंकि काव्य का विषय कला के परिवेश में ही सिमिटा हुआ है—उसकी पृथक सत्ता नहीं है। इससे कवि की कला को समझने में सुविधा भी रहती है।

अब हम मानसिंह के कवि रूप का विवेचन निम्नांकित क्रम में करेंगे—

रस-व्यंजना—मानसिंह के सम्पूर्ण काव्य में मुख्य रूप से केवल दो ही रस व्यंजित हुये हैं—शृ गार और शान्त। करुण रस की अभिव्यक्ति भक्ति की पृष्ठभूमि पर हुई है। वीर रस के कुछ मुक्तक और विजय गीत भी मानसिंह ने लिखे हैं किन्तु उनकी संख्या अल्प ही है। भक्ति के प्रसंग में नाथजी के तेज और पराक्रम का वर्णन करते समय वीर और रौद्र दोनों रसों का आश्रय लिया गया है।

संयोग शृ गार के उदाहरण देखिये—

> बैठी व्रजबाल लाल सांवरे गोपाल संग
> वृन्दावन कुंज और मान प्रभु प्यारे की
> सेजनू गुलाब पखुरीन तें बनाई चारु
> छूटत फुहारे वारे सोभा बनि वारे की

ग्रस पर मन पर सीस प्रवनम धर
या कृपान तन कर दूर जाग सारै को
भारी भुज दड पर चाव को मारै लर
मोहा पचाड धर लागा रिझारै को
[कृष्ण विलास]

आज रसीली उमग री रग भरनै छै गात
पाम पटी छै पीव रै गोरी कचन गात
गुल त्यागी गो गदगदो येन लह लही वाग
गाळी गावै गुण भरी तहिया भरी सुहाग
मुप सु मुख ग्रधरा ग्रधर उरलू उर द्रग दोय
एकमेक यू ह्वै रह्या जळमिसरी ज्यू होय
[दुहा सजोग शृ गार]

वियोग शृ गार—

रे रे वन मोर मेरे स्याम के लहन हार
देखे वल बीरत्यु के चिन्ह किहु थान है
पद्म से पाय धीरै धारियतु धरनि माझ
रामानुजस्याम मोतो मेरे प्रिय प्रान है
कुडल की झलक ग्रलक छुटि नागिन सी
तट की वनमाल तैसी विस्व की लुभान है
ऐसे ब्रजनाथ मोहि दीजिये बताय नातो
प्रानेश्वर वृन्दावन चदजू की ग्रान है
[कृष्ण विलास]

साजनिया यासू लगी, या चटकीली ग्राख
निस दिन पथ निहारती, रही झरोखा झाख
गोरै मुखडै सावळी, जुलफ रही उळझाय
ग्राव विदेसी वेग घर, साजनिया सुळझाय
काजळ ह्वै रह्यो काळमा, पानत बोल प्रहार
वेणी ह्वै रहि विषधरी, भूषण ह्वै रह्या भार
[दुहा सजोग शृ गार]

शान्त रस—

ग्रसल सन्यास को धार लहे तब तीनो ही लोक करे जो गुलामी
वेपरवाह रहे परवाह नही वह तीनो ही लोक को है जो स्वामी
गृहस्थ छते ही सन्यासी बन्यो जिन पाय लियो उर मे धन नामी
मान कहे रग है उनको जिन जान लियो उर ग्रन्तर्यामी
[स्फुट काव्य]

अलंकार

मैं ऊपर प्रकट कर आया हूँ कि मानसिंह में चमत्कार प्रदर्शन की वृत्ति नहीं थी। वे राजा थे। किसी राज्याश्रित कवि का गर्व और मद्र लोभ उनमें कैसे हो सकता था ? अतः उन्होंने जो कुछ लिखा स्वान्तः सुख के लिए लिखा। जो अलंकार-सौन्दर्य उनके काव्य में विद्यमान है वह अप्रयत्नज और सहज रूप में है। हिन्दी अलंकारों के साथ राजस्थानी के वैण सगाई अलंकार का प्रयोग भी मानसिंह के काव्य में हुआ है। उपमा रूपक उत्प्रेक्षा वीप्सा मुद्रा अनुप्रास विभावना असंगति मीलित दीपक और वैण सगाई उनके प्रिय अलंकार रहे हैं।

उत्प्रेक्षा और उपमा

सुंदर भामि सरीर सुप मनु कंचन की लतिका बिकसाही
सारद चंद्र समान मनोहर प्रगत नैन उभै झलकाही
मानन चारु सरोज सुगंधनि आसहुनै मनु भृंग भ्रमाही
मागिमिसी अमकै बिनुरी मुख ऊपर सोभित यौं उनमाही

[कृष्ण विलास]

भरी रूप रस रस भरी मुळ भावै जळ मैण
सरवर ल्या निरपण सही भीरज जिम्याक नैण।
सारी बातां सरसियो उज्वळ मीर अथाह
केळ कळा कारज करण बाह सरोवर बाह।

[रतना हमीर री वारता]

वैण सगाई

नवे पत्र पल्लव नवे नवी कली नवफूल
नव चंपक भूलै नवी भूम रही जिम भूल।
मैणी सूरत निरखयां, प्यारी देखा पीव
माली सुख मो संग मै किण दिन पाछै जीव

छन्द योजना – मानसिंह का छन्दज्ञान बहुत व्यापक है। उन्होंने संस्कृत हिन्दी और डिंगल के छन्दों का परमन्त सफलता से प्रयोग किया है। ब्रज भाषा के छन्दों में वैण सगाई अलंकार का निर्वाह उनके काव्य-कौशल की विशेषता है। छन्दों की रसानुकूलता पर भी उनकी विशेष दृष्टि रही है। पृथ्वी अनुष्टुप गाथा पद्धरि, वैताल नाराच वैपक्खरी मिसाली कवित्त सवैया दोहा सोरठा चन्द्रायण उधोर छप्पय और डिंगल गीत उनके विशेष प्रिय छन्द रहे हैं। इस निबन्ध में इतना स्थान नहीं कि इन छन्दों के उदाहरण दिये जाय।

प्रकृति चित्रण – मानसिंह ने प्रकृति के दोनों रूप सापेक्ष और निरपेक्ष अपने काव्य में प्रस्तुत किये हैं। कहीं वह आलम्बन के रूप में चित्रित हुई है तो कहीं उद्दीपन के रूप में। सूक्ष्म निरीक्षण सहज और सरस अभिव्यंजना मानसिंह के प्रकृति काव्य की विशेषतायें हैं। यों वह सारी वर्णन शैली परम्परा युक्त ही कही जायेगी।

वसन्त वर्णन (निरपेक्ष)

मजर मजर पैं मधुप झार झार पिक पत ,
फल फल सुकगन फवत है, रैंन घौंस रसवत ।
तूटि तूटि भुवि पैं परत, विकसे केसू व्रद ,
वाकी सुक की चचु मनु, कै द्वितिया को चद ।
विपरे केसू वन मही, अरुन वरन चहु ओर ,
अगारन कै भ्रम उमगि, चचु चलात चकोर ।

[नाथ चरित]

वसन्त वर्णन (सापेक्ष)

चैंत मास री चाँदणी, सरस वधी सग सोक ,
जाण आज खुस जाइला, लोम सरा सह लोक ।
आली उडगण नांहि ए, अवस विरह री आग ,
चली स्वास मुकता चिणग, लदूं रही नभ लाग ।
रितु आई रतिराज री, अलि ! पर पूरण आस ,
कामणि जीवै विध कवण, विण वालम विसवास ।

[रतना हमीर री वारता]

भाषा— मानसिंह बहुभाषा-विज्ञ थे। उनके द्वारा रचित विविध भाषाओ की कृतियाँ इस कथन का प्रमाण हैं। उन्होने सस्कृत मे कृतियाँ लिखी, व्रजभाषा में कृतियाँ लिखी, डिंगल मे कृतियाँ लिखी, पजावी मे पद लिखे। वे उर्दू फारसी के भी अच्छे ज्ञाता थे। गजलो और नज्मों का उन्होने उर्दू गद्य मे व्याख्यार्थ किया। अनेक कवि पंडित इनके महा आश्रित थे। इनके भाषा-गुरु कविराजा बाँकीदास स्वय अनेक भाषाओं के पडित थे। अनेक पडितो, कवियो और कलाकारो का सान्निध्य इन्हें निरन्तर प्राप्त रहा। अस्तु, सस्कार और परिवेश ने इन्हें बहुभाषाविद् बना दिया। इनकी व्रज मे रचित रचनाओ पर सस्कृत का सुस्पष्ट प्रभाव है। एक उदाहरण देखिये—

द्विरद वदन मडित प्रचड सिंदूर ललाट धर
रुचि कपोल मिलि करत मधुप झकृत विलास पर
विघनहरन सुख - करन गवरिनदन गनेशवर
फरसि-धरन कर धरन रुचिर सारद शशि शेखर
कृत नृपति मान उत्सव प्रगट विमल कृष्ण-क्रीडा कहन
झन होय सिद्ध विनसै विघन त्वां नमामि सकट-दहन ।

[कृष्ण विलास]

राजस्थानी—

रसियो यू रातू रम्यो, चुवतै रग चक चोळ ,
मनु लुट्यौ धन मदन रौ, खिडकी घर री खोल ।

बोसो पीमा बालमा हिये चुभै पै हार
पी मन तो इटरो करी, चुसम न राजकुमार।

[स्फुट छन्द]

पंजाबी

पना मैं छो मूसिया बे
मचन दा सभा मोतिमा दे झूमक बिच
इस चोर्ड दी मसिया बे
आ दे सेहर दे मोक रसराम बेचाल मे
बिजां वी बिच सैंया मिर मया बे

[राम रत्नाकर]

मलोकृत डिंगल गद्य

परसपर ममवारी हुवै है हाथ हीं हाथ चुभै है मोगमा देवै है मधो मेवै है। क
सुधा रा मासव मैं छक रहा है मासव प्याला भवरी चकी प्यासा सा मेवां सौं परसपर ठ
रहा है। मतर लगावै है मचम चकावै है। मुजा करै है तन मन हरै है। कटाच्छां वि
कटारियां री चोट है पसकों बिके हालो री चोट है। नेह चढे बणियो है, नायक मैरा चा
महिमा पायक। कबित दाहा पढ़ै है उपमा पढ़ै है।

[रतना हमीर री वारता]

खड़ी बोली मिश्रित ब्रजभाषा गद्य

मिमासक कर्म कु मानै॥ कर्म पर्व करणी का है॥ करता तो जब होइ कोइ कर
वासा होय तब भर कर्ता बीज बनाम है तब कछ् कर्म करता है। इस वासतै मीमांसाम
नैयायक का पर्व एक ही भीनाथ है॥ भौर साहित्य शास्त्र वासा रसाधिक्य मानै है पर
रस भविचल रहा चाहियै। यह रस सुरताव सभी हुँ कहा एक रहता है॥ विरस होता है।

[भनुभव मजरी]

उपयुक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि मानसिंह का भाषा ज्ञान बहुत विस्त
था। संस्कृत का प्रभाव उनकी भाषाभो पर स्पष्ट है—चाहे वह ब्रज हो चाहे डिंगल
वर्ण भौर शब्द मैत्री की दृष्टि से विचार करें तब भी बड़ा सन्तोष होता है। वे संगीत के
पंडित थे भतः यह विशेषता सर्वत्र सुरक्षित रही है। उक्ति-वैचित्र्य भी इनकी भाषा में है।
व्याकरण की कठिन कसौटी पर यदि इनकी भाषा को कसा जाय तो शायद कुछ दोष निकल
जायें। डिंगल के प्रचलित मुहावरो का प्रयोग भी इनकी भाषा में मिलता है। मानसिंह
की भाषा पर विस्तार से चर्चा करने के लिए यहाँ स्थानाभाव है भतः कुछ टिप्पणियाँ
मात्र दी है।

जीवन–दर्शन

व्यक्ति को उसके सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिये उसकी विचारधारा भौर
मान्यताभों से परिचित होना भी भावश्यक होता है। कृतित्व भौर व्यक्तित्व को सम्यता
उसके संस्कार, मान्यतायें भौर भास्थायें ही रूप देते हैं। जगत की मधु भौर सुखद मधु

भूतियाँ कालान्तर मे प्रवृत्तियो का निर्माण करती है। ईश्वर, जगत, समाज और प्राणी मात्र के प्रति मनुष्य का क्या भाव है, वह इनके प्रति कैसी प्रतिक्रियायें करता है? वस व्यक्ति के इस प्रत्यक्ष व्यवहार और चिन्तन मे ही उसका जीवन-दर्शन सन्निहित है।

मानसिंह राजकुल मे पैदा हुये, पालित-पोपित हुये। राजसी सस्कारो का उनमे होना स्वाभाविक था। उतरवर्त्ती मध्यकालीन सामन्ती-व्यवस्था की उथल-पुथल से उनका जीवन भी किस प्रकार अप्रभावित रहता? मानसिंह तो दुर्भाग्य लेकर ही जन्मे थे। जीवन के अन्तिम क्षणो तक इन्हें सघर्ष करना पडा। कुछ होश सभाला और १२ वर्ष की अल्पायु मे ही जालोर के किले मे अपने सिंहानसनाधिकार के प्रतिद्वन्द्वियो द्वारा घेर लिये गये। निरन्तर ११ वर्ष तक इस घेरे मे ये रहे और नाना प्रकार की यन्त्रणाओ को झेला। दुर्दम्य साहस अटूट निर्भीकता अपराजेय शरीर-वल, राजनीतिक चातुर्य के साथ जालधर-नाथजी की अनन्य भक्ति इनके मार्ग को निष्कटक करती रही। जालोर मे जालधरनाथ के पुजारी देवनाथ द्वारा की गई भविष्यवाणी [आप निराश न हो। दो तीन दिन और प्रतीक्षा करें। सब ठीक हो जायेगा।] की सत्यता ने तो इन्हें नाथजी का तथा अन्य नाथानु-यायियो का अन्ध भक्त ही बना दिया। अस्तु, मानसिंह के जीवन-दर्शन पर नाथ सम्प्रदाय दर्शन का प्रभाव सुस्पष्ट है। यद्यपि वे नाथ सम्प्रदाय मे विधिवत् दीक्षित नही हुये थे, ऐसा कोई उल्लेख प्राप्त नही होता कि उन्होने कान फडा कर मुद्रा धारण करली हो, गेरुयें वस्त्र पहन लिये हो, तथापि वे अनन्य भाव से समर्पित होकर जीवनपर्यन्त नाथजी की भक्ति करते रहे। इनके पिता और पितामह वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

नाथ दर्शन के अनुसार मानसिंह इस अखिल नामरूपा सृष्टि का कर्त्ता और नियामक नाथ को ही मानते हैं। नाथ ही परम शक्ति है। वह सर्वज्ञ है। सर्वव्यापक है—

नाथ जलधपाव निज, नाथ वेष निज रूप
सारै लोक अलोक मे, एही तत्व अनूप
ओकार मत एह, एक नाथ व्यापक अखिल
समझ उत हु तजि सदेह, द्वैत रूप सोइ दृष्टि भ्रम

नाथ के इस स्वरूप और तत्वज्ञान को स्वय नाथ ही जानते है। गुरु की महत्ता को भी नाथ दर्शन मे स्वीकार किया गया है। सिद्ध गुरु के मार्ग दर्शन मे ही नाथ का साक्षात्कार किया जा सकता है—मुक्ति का पथ भी गुरु ही बताता है। यही कारण था कि मानसिंह की अपने गुरु देवनाथ मे अनन्त आस्था थी। यद्यपि लोक के तीव्र विरोध को उन्हें सहना पडा किन्तु गुरु चरणो मे उनकी श्रद्धा अन्त तक बनी रही। कथनी और करनी मे वे कोई विभेद नही करते थे। मानसिंह का स्वय का आचरण इस अर्थ मे वडा निर्मल रहा है। वे जलन्धरनाथ की नियमित रूप से आराधना करते थे। सुख और दुख दोनो मे समभाव से नाथजी की स्तुति मे उनका विश्वास था। इन्द्रियो के परिष्कार और आत्मोत्थान के लिये सयमित और पावन जीवन की नाथ दर्शन मे महत्ता मानी गई है। राजपद पर आसीन होते हुये भी मानसिंह के जीवन मे इतनी वैलासिक प्रवृत्तियाँ दिखाई नही देती, जितनी अन्य सामन्ती शासको मे दिखाई देती है।

भक्ति और सम्प्रदाय के बाह्याडम्बर में उनका विश्वास नहीं था। समर्पण और अनन्यभाव से नाथ नाम का स्मरण ही उन्हें स्वीकार था—

> मन उहीं कहै नीठ प्रसंग में संगी कै जो सब नाठ करै हित
> तातैं कहूं समझाय कै मैं करि मेरो कह्यो यह सिखी चित
> सार कहै इनहीं कौं सदा परमारथ के पथ के सब पंडित
> निश्चल नाथ को नाम निरंतर नेह सों तू रट री रसना नित

नाथ दर्शन में योग कुण्डलिनी-साधना आदि को महत्व दिया गया है। मानसिंह ने अपने नाथ भक्ति के काव्य ग्रंथों में इस योग साधना के महत्व को भी प्रकट किया है किन्तु वह स्वयं नाम माहात्म्य के ही पक्षधर हैं। उन्होंने कभी योगाभ्यास नहीं किया। मानसिंह अन्य देवोपासना के विरोधी नहीं थे। नाथ सम्प्रदाय में यों अन्य देवोपासना का निषेध किया गया है। मानसिंह के ग्रंथों में गणेश सरस्वती शिव आदि के मंगलाचरण हैं। इससे उनकी धार्मिक उदारता सिद्ध होती है।

मानसिंह ने नारी को मायाविनी बताया है। साधकों के लिए नारी का सान्निध्य निषिद्ध है—ऐसा वे भी मानते थे। यह केवल नाथ मत के सिद्धान्त के अनुसरण में ही उन्होंने कहा प्रतीत होता है। क्योंकि मानसिंह गृहस्थ थे उनके एक से अधिक पत्नियां और उपपत्नियाँ थीं। राग-रंग की महफिलें भी उनके यहाँ खूब आयोजित होती थीं। संगीत और काव्य की रसवन्ती में वे नित्य अवगाहन करते थे। इससे यह सिद्ध होता है कि मानसिंह का जीवन-दर्शन प्रतिगामी नहीं था। वो कठोर वैचारिक परिसीमाओं के मध्य में से प्रशस्त मार्ग निकालने के भी पक्षधर थे। योग और भोग की समानान्तर साधना उनके जीवन में चलती रही।

भक्त चिन्तक कवि और संगीतज्ञ के अतिरिक्त उनके जीवन का एक और पक्ष है, वह है उनका सत्ता पुरुष। अपने इस रूप में वे बड़े विरोधात्मक प्रतीत होते हैं। भक्ति और काव्य के प्रसंग का दया कोमलता सान्निध्य मानवीयता सरसता और सर्वांग सहनीयता से संवृत मानसिंह का व्यक्तित्व राजनैतिक प्रसंग में तिरोहित हुआ सा प्रतीत होता है। राजनीति अपने आप में एक धर्म और जीवन-पद्धति है। अस्तु, राजपुरुष के रूप में युद्ध क्रूरता कठोरता आदि का व्यवहार यदि होता है तो उसके राजनैतिक और शासकीय कारण होते हैं। मानसिंह के जीवन के पृष्ठ युद्ध और अवसाद, कलह और विश्वासघात के पीड़ादायी प्रसंगों से अंकित हैं। मित्र और परिजन यहाँ तक कि स्वयं पुत्र भी जीवनघाती बन जाते हैं। 'शठम् शाठ्यम्' के सूक्त के अनुसार मानसिंह को कठोर आचरण करना पड़ता है। यह उनके राजपुरुष की विवशता अथवा कर्तव्य है जीवन-दर्शन नहीं।

संक्षेप में मानसिंह के जीवन-दर्शन को उनके राजनैतिक आचरण में न ढूंढ कर साहित्य में ढूंढना अधिक श्रेयस्कर है। अपने यथार्थ रूप में वे साहित्य में ही प्रकट हुए हैं।

मानसिंह भक्ति योग और प्रेम योग के एक साथ साधक कवि हैं।

राजस्थानी शोध संस्थान द्वारा अमूल्य प्राचीन साहित्य-निधि का सग्रह तथा संरक्षण

पिछले पाँच छह वर्षों से यह सस्था राजस्थान को प्राचीन भाषा एव सस्कृति को प्रकट करने वाले अज्ञात एव अत्यन्त मूल्यवान ग्र थो के सग्रह मे सतत प्रयत्नशील रही है। अनेक साधनो से शोध सस्थान ने अव तक लगभग दस हजार ग्र थो का सग्रह कर उन्हे स रक्षण प्रदान किया है, जिनका प्रयोग अनेक शोध विद्यार्थी समय-समय पर करते रहे ह। शोध-कर्त्ताओ तथा अन्य विद्वानो की सूचनार्थ स ग्रह-सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य निम्न प्रकार है—

१ स ग्रह मे १४ वी शताब्दी से लेकर १६ वी शताब्दी तक के हस्तलिखित ग्र थ मौजूद हैं।

२ गद्य, पद्य, टीकाएँ, बालावबोध, चित्रित प्रतियो मे धर्म, दर्शन, तत्र, मन्त्र, खगोल, व्याकरण, काव्य, शालिहोत्र, पुराण, महाभारत, भागवत, बात, ख्यात, पीढ़ियाँ, वशावलियाँ, पट्टे, परवाने, वैद्यक और ज्योतिष आदि विषय हैं।

३ ये ग्र थ प्राय प्राचीन मंदिरो, मठो, उपाश्रयो, चारणो, जागीरदारो, मुत्सद्दियो, ब्राह्मणों आदि से सग्रहीत किए गए है। सग्रह का क्षेत्र प्राय मारवाड रहा है।

४ कुछ प्रतियां असुरक्षितता तथा जीर्णता के कारण खडित अथवा अपूर्ण है, पर उनका भी अनेक दृष्टियो से महत्व है।

५ १४ वी, १५ वी, १६ वी शताब्दी के अनेक ग्र थ जैन-धर्मावलम्बियो के लिखे हुए हैं।

६ चारण साहित्य मे प्राचीन दोहे, गीत, कवित्त, झमाल, नीसांणी तथा अनेक प्रबन्ध काव्य व ऐतिहासिक पत्र आदि है।

७ गद्य साहित्य मे बातो की संख्या सर्वाधिक है। राजस्थानी भाषा की प्राय हर विषय की बाते स ग्रहीत है। ख्यातो का भी सु दर स ग्रह है। राठौड़ा री ख्यात, भाटिया री ख्यात, कछवाहा री ख्यात, सीसोदियां री ख्यात के अतिरिक्त अपूर्ण ख्यातें भी हैं। अभी-अभी मुहता नैणसी की नवीन ख्यात स स्था को उपलब्ध हुई है।

परम्परा के विशेषांक

---

१ लोक गीत – मू. ३ रु० (अप्राप्य)
राजस्थानी लोक गीतों का एक अध्ययन व परिशिष्ट में चुने हुए गीत।

२ गोरा हट जा – मू. ३ रु. (अप्राप्य)
अंग्रेजी साम्राज्य-विरोधी कविताओं का संकलन।

३ डिंगल कोष – मू. १२ रु. (अप्राप्य)
डिंगल के प्राचीन पद्य-बद्ध नौ कोषों का संकलन ऐतिहासिक टिप्पणियों सहित।

४ जेठवै रा सोरठा – मू. ३ रु.
जेठवा सम्बन्धी राजस्थानी व गुजराती सोरठे तथा विवेचन।

५ राजस्थानी बात संग्रह – मू. ७ रु.
राजस्थानी की प्राचीन चुनी हुई बातें तथा विवेचन।

६ रसराज – मू. ३ रु०
शृंगार रस सम्बन्धी राजस्थानी के चुने हुए दोहों का संकलन।

७ नीति प्रकाश – मू. ६ रु.
फारसी के ग्रंथ अखलाक-ए-मोहसनी का प्राचीन राजस्थानी में भाषानुवाद।

८ ऐतिहासिक बातां – मू. ३ रु.
मारवाड़ के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली प्राचीन बातें व विवेचन।

९ राजस्थानी साहित्य का आदिकाल – मू. ३ रु.
आदिकालीन राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी विविध लेख।

१० पिंगल-शिरोमणि – मू. ३ रु०
डिंगल छंद-शास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रंथ।

११ राठौड़ रतनसिंह री वेलि – मू. ३ रु.
प्रौढ़ राजस्थानी भाषा में रचित एक ऐतिहासिक काव्य-कृति टीका सहित।

१२ राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल – मू. ६ रु.
मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी विविध शोधपूर्ण लेख।

१३ गज उद्धार ग्रंथ – मू. ३ रु.
गज और ग्राह युद्ध विषयक धार्मिक काव्य-कृति तथा तद्विषयक लेख।

शोक - सम्वाद
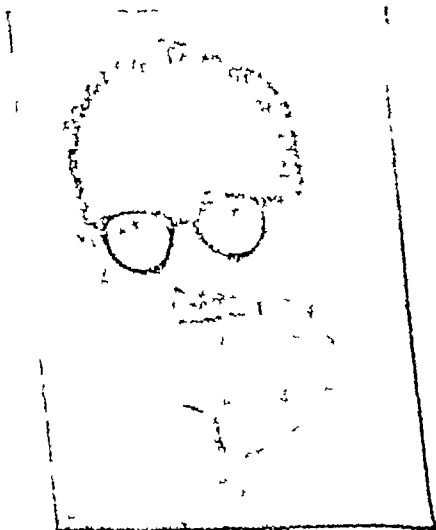
कुवर विजयसिहजी सिरियारी (एम० पी०) के आकस्मिक निधन से राजस्थानी साहित्य व सस्कृति का एक अनन्य प्रेमी और हमारी सस्था का एक प्रमुख स्तंभ सदा के लिए उठ गया। कुवर साहिब इस संस्था के सस्थापको मे से थे। एक प्रतिभावान राज-नीतिज्ञ के नाते उनसे राजस्थान के अधिकांश लोग परिचित थे परन्तु जिन्हें उनके साथ रहने तथा नजदीक से जानने का अवसर मिला वे उनकी बहुज्ञता तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नही रहे। राजस्थानी भाषा और साहित्य के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। वे इसे अत्यन्त पुनीत कार्य मानते थे। अनेक प्रकार की कठिनाइयो मे से उन्होने सस्था को निकाल कर आगे बढाया है। उनकी बलवती प्रेरणा के फलस्वरूप ही सस्था आर्थिक कठिनाइयो के होते हुए भी प्रगति-पथ पर अग्रसर होती रही।

प्रारभ से ही इस पत्रिका की परामर्श-समिति के वे सदस्य थे। आज जब वे नही रहे तो उनकी गंभीर मुस्कान और प्रेरणा-प्रद शब्दो की स्मृति ही हमारा सबल है।

ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—संचालक

परम्परा

• त्रैमासिक शोध पत्रिका

वार्षिक मूल्य दस रुपये

प्रति भाग तीन रुपये

भाग अठारह उन्नीस

सन् १९६४

राजस्थानी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित
चौपासनी विद्यालय जोधपुर

Printed by Hari Prasad Pareek at Sadhana Press, Jod
for Narayan Singh Bhati, Director, Rajasthani
Shodh Sansthan, Jodhpur (Rajasthan)